मावर्त्तयन्तम्, अनवरत-भ्रमित-तारकाचक्रमपरमिव ध्रुवम्, (ब) उन्नमता (१) शिरा-जालकेन जरत्कल्पतरुमिव परिणत-लतासञ्चयेन निरन्तर-निचितम्, (भ) अमलेन (२) चन्द्रांशुभिरिवामृतफेनैरिव गुणसन्तान-तन्तुभिरिव निर्म्मितेन मानस-सरो-जल-क्षालन-(३) शुचिना दुकूल-वल्कलेन द्वितीयेनेव जराजालकेन संच्छादितम्, (म) आसन्नवर्त्तिना मन्दाकिनी-सलिल-पूर्णेन त्रिदण्डोपविष्टेन स्फाटिक-(४) कमण्डलुना विकच-पुण्डरीक-(५) राशिमिव राजहंसेनोपशोभमानम्, (य)

"भचक्रं ध्रुवयोर्बद्धमाक्षिप्तं प्रवहानिलैः। पर्य्येत्यजस्रं तन्नद्धा ग्रहकक्षा यथाक्रमम्।"

अत्रोपमा पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं द्रव्योत्प्रेक्षा च इत्येतेषां मिथो निरपेक्षतया संसृष्टिरलङ्कारः।

(भ) उन्नमतेति। परिणतानां पक्वानां लतानां सञ्चयेन समूहेन निरन्तरनिचितं घनभावेन व्याप्तं जरत्कल्पतरुमिव पुरातनकल्पवृक्षमिव, उन्नमता उपरि भासमानेन शिराणां जालकेन समूहेन निरन्तर-निचितम्। अत्रोपमालङ्कारः। मुनेः कल्पतरुवत् प्रार्थितफलदानयोग्यताज्ञापनाय कल्पतरुपदमिति न अविमृष्ट विधेयांशदोषः।

(म) अमलेनेति। अमलेन निर्म्मलेन, अतएव चन्द्रांशुभिरिव अमृतफेनैरिव तथा गुणानां दयाधर्म्मादीनां सन्तानाः समूहा एव तन्तवः सूत्राणि तैरिव निर्म्मितेन, मानससरसो जलेन यत् क्षालनं प्रक्षालनं तेन शुचि पवित्रं तेन, द्वितीयेन जराजालकेनेव धावल्याद्वार्द्धक्यसमूहेनेव, दुकूलवत् क्षौमवस्त्रवत् वल्कलं तेन, संच्छादितं आच्छादनाभिनिबद्धदेशम्। अत्र पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं, द्वे क्रियोत्प्रेक्षे, एका च निरङ्ग-केवलरूपकसङ्कीर्णा क्रियोत्प्रेक्षा, लुप्तोपमा, अपरा द्रव्योत्प्रेक्षा च इत्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(य) आसन्नेति। राजहंसेन विकचपुण्डरीकराशिमिव प्रस्फुटितश्वेतपद्मसमूहमिव त्रिदण्डोपविष्टेन त्रिपदिकोपरिस्थितेन। अत्रोपमालङ्कारः।

সুতরাং যাহাতে আবদ্ধ থাকিয়া নক্ষত্রচক্র অবিশ্রান্ত ঘূর্ণিত হইতেছে, দ্বিতীয় সেই ধ্রুবনক্ষত্রের ন্যায় জাবালিকে দেখা যাইতেছিল; (ভ) পুরাতন কল্পবৃক্ষ যেমন পরিপক্ক লতাসমূহে ঘনভাবে পরিবেষ্টিত থাকে, জাবালির শরীরও তেমন উচ্চ উচ্চ শিরাসমূহে ঘনভাবে পরিবেষ্টিত ছিল; (ম) মানসসরোবরের জলে প্রক্ষালন করায় পরম পবিত্র এবং ক্ষৌমবসনের ন্যায় নির্ম্মল একখানা বল্কল তিনি পরিধান করিয়াছিলেন, সেই বল্কলখানা যেন চন্দ্ররশ্মিদ্বারা, কিংবা অমৃতের ফেনদ্বারা, অথবা দয়াধর্ম্ম প্রভৃতি গুণসমূহরূপ সূত্রদ্বারা নির্ম্মিত হইয়াছিল, আর দ্বিতীয় বার্দ্ধক্যের ন্যায় সেখানা তাঁহার দেহে লাগিয়াছিল; (য) গঙ্গাজলে পরিপূর্ণ স্ফটিকনির্ম্মিত একটি কমণ্ডলু নিকটবর্ত্তী ত্রিপদিকার উপরে স্থাপিত ছিল, সুতরাং নিকটবর্ত্তী

---

(१) उन्नमता। (२) अमलैः। (३)...क्षालित...। (४)...स्फटिक...।
(५)...कमल...।

स्थैर्य्येणाचलानां गाम्भीर्य्येण सागराणां ( ) तेजसा सवितुः प्रशमेन तुषार-रश्मेः निर्म्मलतयाऽम्बरतलस्य संविभागमिव कुर्व्वाणम्, (र) वैनतेयमिव स्वप्रभावोपात्त-सकल-द्विजाधिपत्यम्, (२) (ल) कमलासनमिवाश्रमगुरुम्, (व) जरच्चन्दन-तरुमिव भुजङ्ग-(३) निर्म्मोक-धवल-जटाकुलम्, (श) प्रशस्त-वारणमिव (४) प्रलम्ब-कर्णवालम्, (५) (ष) बृहस्पतिमिवाजन्म-वर्द्धित-कचम्, (स) दिवस-

(र) स्थैर्य्येणेति। स्वकीयवस्तुनः परस्मै विभज्य प्रतिपादनं संविभागः, तं कुर्वाणमिव, तथा च स्थैर्यगाम्भीर्य्यादीनात्मगुणान् अचलादिभ्यो विभज्य दत्त्वेव विद्यमानमित्यर्थः, तादृशस्थैर्य्यादिमत्त्वादिति भावः। अत्र अचलानां स्थैर्य्यं कम्पराहित्यं मुनेः स्थैर्य्यन्तु मनःस्थिरता, सागराणां गाम्भीर्य्यमगाधता, मुनेर्गाम्भीर्य्यन्तु दुरवगाहस्वभावत्वं, सवितुस्तेजः प्रखरकिरणवत्त्वम् मुनेस्तेजस्तु तपःप्रभाववत्त्वं, तुषाररश्मेश्चन्द्रस्य प्रशमः सौम्यमूर्त्तिता मुनेः शमस्त्वन्तरिन्द्रियनिग्रहः, आकाशस्य निर्म्मलता स्वच्छता मुनेर्निर्म्मलता तु निष्पापत्वमिति भेदेऽपि श्लेषेणाभेदाध्यवसायादतिशयोक्तिः क्रियोत्प्रेक्षा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। अनेन भ्रातुर्विभाग इत्यादिवत् स्थैर्य्येणेत्यादौ करणे तृतीया।

(ल) वैनेति। वैनतेयं गरुड़मिव, स्वप्रभावेण निजमाहात्म्येन उपात्तमर्जितं सकलेषु द्विजेषु ब्राह्मणेषु पक्षिषु च आधिपत्यं प्रभुत्वं येन तम्। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(व) कमलेति। कमलासनं ब्रह्माणमिव, आश्रमस्य तत्तपोवनस्य ब्रह्मचर्य्यादीनां चतुर्णामाश्रमाणाञ्च गुरुरध्यापयिता नियन्ता च तम्। पूर्णोपमा। ब्रह्मा वाश्रमान् नियमितवानिति पुराणेषु द्रष्टव्यं।

(श) जरदिति। जरच्चन्दनतरुमिव पुरातनचन्दनवृक्षमिव, भुजङ्गनिर्म्मोकवत् सर्पकञ्चुकवत् धवला जटाः, पक्षे भुजङ्गनिर्म्मोका धवला जटा इव ताभिराकुलं व्याप्तम्। लुप्तोपमापूर्णोपमयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। जीर्णचन्दनवृक्षेष्वेव सर्पाधिक्यसम्भवप्रदर्शनार्थं जरत्पदम्।

(ष) प्रशस्तेति। प्रशस्तवारणं महाहस्तिनमिव, प्रलम्बाः क्षौराभावाद्दीर्घाः कर्णवालाः कर्णलोमानि यस्य तं, पक्षे प्रलम्बाः लम्बमानाः कर्णौ वालाः पुच्छलोमानि च यस्य तम्। पूर्णोपमा।

(स) वृहेति। आजन्मनो वर्द्धितास्छेदाभावाद्वृद्धिं प्रापिताः कचाः केशाः, पुत्रस्नेहाद्वर्द्धितः कचः कचनामा पुत्रश्च येन तम्। पूर्णोपमा।

(র) জাবালি, স্থৈর্য্যদ্বারা পর্ব্বতদিগকে, গম্ভীর্য্যদ্বারা সমুদ্রদিগকে, তেজদ্বারা সূর্য্যকে, শম-গুণদ্বারা চন্দ্রকে এবং নির্ম্মলতাদ্বারা আকাশকে যেন বিভক্ত করিয়া দিয়াছিলেন ; (ল) গরুড় যেমন নিজের প্রভাবে সকল পক্ষিগণের আধিপত্য লাভ করিয়াছিলেন, জাবালিও তেমন নিজের প্রভাবে সকল ব্রাহ্মণগণের আধিপত্য লাভ করিয়াছিলেন ; (ব) ব্রহ্মা যেমন ব্রহ্মচর্য্য প্রভৃতি আশ্রমচতুষ্টয়ের নিয়ন্তা, তিনিও তেমন সেই আশ্রমের নিয়ন্তা (বা অধ্যাপক) ছিলেন ; (শ) পুরাতন চন্দনবৃক্ষ যেমন ধবল জটার ন্যায় সর্পকঞ্চুকে ব্যাপ্ত থাকে, তিনিও তেমন সর্পকঞ্চুকের ন্যায় ধবল জটাতে ব্যাপ্ত ছিলেন ; (ষ) প্রকাণ্ড হস্তীর যেমন কর্ণযুগল ও

(१) अवनेः स्थैर्य्येण सागराणां गाम्भीर्य्येण। (२) क्वचित् सकलपदं नास्ति।
(३) भुजग…। (४)…वारणपतिमिव। (५) कर्णतलं।

मिवोद्यदर्क-विम्ब-भास्वर-मुखम्, (ङ) शरत्कालमिव क्षीणवर्षम्, (च) शान्तनु-मिव प्रियसत्यव्रतम्, (क) अम्बिका-करतलमिव रुद्राक्ष-ग्रहण-(१) निपुणम्, (ख) शिशिर समयसूर्य्यमिव कृतोत्तरासङ्गम्, (ग) वड़वानलमिव (२) सतत-(३)

(ङ) दिवसमिति। दिवसं वासरमिव, उद्यदर्कविम्बवत् उदयमानसूर्य्यमण्डलवत् भास्वरं दीप्तिमत् मुखं वदनं यस्य तं, पक्षे उद्यदर्कविम्बेन भास्वरं मुखं आद्यभागो यस्य तम्। पूर्णोपमा।

(च) शरदिति। क्षीणानि वर्षाणि वयोवत्सरा यस्य तं, स्वल्पावशिष्टायुष्कमित्यर्थः, पक्षे क्षीणं स्वल्पीभूतं वर्षं वृष्टिर्यस्मिन् तम्। पूर्णोपमा।

(क) शान्तनुमिति। शान्तनुं तदाख्यं चन्द्रवंशीयं राजानमिव प्रियं अभीष्टं सत्यव्रतं सत्यवाक्य सत्यव्यवहाररूपो नियमो यस्य तम्, पक्षे प्रियः परमोत्कृष्टपुत्रत्वात् प्रीतिकरः सत्यव्रतो भीष्मो यस्य तम्। पूर्णोपमा।

(ख) अम्बिकेति। अम्बिकायाः पार्वत्याः करतलं पाणिमिव, रुद्राक्षस्य रुद्राक्षमालायाः ग्रहणे निपुणं दक्षं, पक्षे रुद्रस्य शिवस्य अक्षिणी चक्षुषी इति रुद्राक्षे तयोर्ग्रहणे कौतुकवशेन पिधाने निपुणम्। पूर्णोपमा।

(ग) शिशिरेति। शिशिरसमयस्य शीतकालस्य "तपस्तपस्यौ शैशिरावृतु"रिति श्रुतेः माघफाल्गुन-मासयोरित्यर्थः सूर्य्यमिव, कृतः स्कन्धे अर्पितः उत्तरासङ्ग उत्तरीयवस्त्रं येन तं पक्षे कृत उत्तरस्या दिशः सङ्गः क्रमेण संसर्गो येन तम्, तदानीं रवेरुत्तरायणारम्भात्। पूर्णोपमा।

(घ) वड़वेति। सततं पयो दुग्धमात्रं जलञ्च भक्ष्यं खाद्यं शोषणीयञ्च यस्य तम्। पूर्णोपमा।

পুচ্ছের লোম বৃহৎ থাকে, জাবালিরও তেমন কর্ণের লোম বৃহৎ বৃহৎ ছিল; (ঙ) বৃহস্পতি যেমন নিজপুত্র কচকে জন্ম হইতে বর্দ্ধিত করিয়াছিলেন, তিনিও তেমন জন্ম হইতে কেশ-কলাপ বর্দ্ধিত করিয়াছিলেন; (ঙ) দিনের প্রথম ভাগ যেমন উদয়মান সূর্য্যমণ্ডলদ্বারা দীপ্তিমান্ হয়, জাবালির মুখমণ্ডলও তেমন উদয়মান সূর্য্যমণ্ডলের ন্যায় দীপ্তিমান্ ছিল; (চ) শরৎকালে যেমন বৃষ্টি ক্ষয় প্রাপ্ত হয়, জাবালির বয়সের বৎসরও তেমন ক্ষয় প্রাপ্ত হইয়াছিল; (ক) ভীষ্ম যেমন পিতা শান্তনুর প্রিয় পাত্র ছিলেন, সত্যবাক্য ও সত্য-ব্যবহারের নিয়মও তেমন জাবালির প্রিয় ছিল; (খ) পার্ব্বতীর পাণিতল যেমন শিবের চক্ষু-ধারণে নিপুণ, জাবালিও তেমন রুদ্রাক্ষের মালাধারণে নিপুণ ছিলেন; (গ) মাঘমাসের সূর্য্য যেমন ক্রমে উত্তরদিকে পদার্পণ করেন, জাবালিও তেমন স্কন্ধে উত্তরীয়-বস্ত্র অর্পণ করিয়াছিলেন; (ঘ) বড়বানল যেমন সর্ব্বদা সমুদ্রের জল পান করে, জাবালিও তেমন

---

(१) रुद्राक्षवलयग्रहण...। (२) और्व्वानलमिव। (३) सन्तत...।

पयोभक्षम्, (घ) शून्यनगरमिव दीनानाथ-विपन्न-शरणम्, (ङ) पशुपतिमिव भस्म-पाण्डुरोमाश्लिष्ट-शरीरम्, भगवन्तं जावालिमपश्यम्। (च)

अवलोक्य चाहमचिन्तयम्—'अहो प्रभावस्तपसाम्! इयमस्य शान्तापि मूर्त्तिस्तप्त-कनकावदाता परिस्फुरन्ती सौदामिनीव (१) चक्षुषः प्रतिहन्ति तेजांसि, सततमुदासीनापि महाप्रभावतया भयमिवोपजनयति प्रथमोपगतस्य। शुष्क-नल-काशकुसुम-निपतितानल-चटुल-वृत्ति नित्यमसहिष्णु तपस्विनां प्रतनु-तपसा-(२) मपि तेजः प्रकृत्या दुःसहं (३) भवति, किमुत सकल-भुवन-वन्दित-(४)

(ङ) शून्येति। शून्यनगरमिव लोकरहितं नगरमिव, दीनानां दुर्गतानां अनाथानां रक्षकरहितानां विपन्नानां रोगार्त्तादीनाञ्च शरणं रक्षकं, पक्षे दीनानि सौन्दर्य्यरहितानि, अनाथानि निवासिजनहीनानि, विपन्नानि भग्नानि शरणानि गृहाणि यस्मिन् तत्। पूर्णोपमा।

(च) पश्विति। पशुपतिं शिवमिव, भस्मवत् पाण्डुनि पक्कत्वात् श्वेतानि यानि रोमाणि भस्मना पाण्डु रोमाणि च तैराश्लिष्टं संसक्तं शरीरं यस्य तम्। भगवन्तं माहात्म्यवन्तम्। पूर्णोपमा।

(छ) अवेति। शान्तापि प्रसन्नापि। उत्तप्तकनकावदाता तप्तकाञ्चनवत् निर्म्मला परिस्फुरन्ती प्रकाशमाना सैदामिनी विद्युदिव। अत्रोपमालङ्कारः। उदासीनापि मध्यस्थापि अन्येषां भयजनने प्रयोजन-रहितापि इयं मूर्त्तिरित्यर्थ, प्रथमं उपगतस्य उपस्थितस्य मम भयमुपजनयतीव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। शुष्केषु नलेषु स्वनामप्रसिद्धतृणविशेषेषु काशकुसुमेषु च निपतितो यः अनलो वह्निः तस्येव चटुला चञ्चला शीघ्रतरा वृत्तिः प्रसरणव्यापारो यस्य तत्, तथा नित्यं सर्वदा असहिष्णु परप्रभावमिति शेषः, प्रतनु अत्यल्पं तपो येषां तेषामपि तपस्विनां तेजः, प्रकृत्या स्वभावेन दुःसहं भवति अन्येषामिति शेषः। अत्र प्रथमविशेषणे

প্রত্যহ দুগ্ধমাত্রই পান করিতেন; (ঙ) জনশূন্য নগর যেমন সৌন্দর্য্যহীন ও মনুষ্যহীন ভগ্ন গৃহ সকলের আশ্রয়, জাবালিও তেমন দরিদ্র, অনাথ ও বিপন্ন লোকদিগের আশ্রয় (রক্ষক) ছিলেন; (চ) মহাদেবের শরীর যেমন ভস্মদ্বারা শ্বেতবর্ণ লোমসমূহে ব্যাপ্ত, জাবালির শরীরও তেমন ভস্মের ন্যায় শ্বেতবর্ণ লোমসমূহে ব্যাপ্ত ছিল।

(ছ) তাঁহাকে দেখিয়া আমি চিন্তা করিতে লাগিলাম—'তপস্যার মাহাত্ম্য কি আশ্চর্য্য! কারণ, ইঁহার এই আকৃতি তপ্তকাঞ্চনের ন্যায় নির্ম্মল এবং শান্ত হইলেও দীপ্যমান বিদ্যুতের ন্যায় আমার নয়নের তেজ প্রতিহত করিতেছে, আর আমি এইমাত্র প্রথম আসিয়াছি, সুতরাং সর্ব্বদা পরের ভয়োৎপাদনে প্রয়োজন না থাকিলেও আমার যেন ভয় জন্মাইতেছে। শুষ্ক নল ও কাশপুষ্পের (কেশের ফুলের) উপর পতিত অগ্নি যেমন তৎক্ষণাৎ বিস্তৃত হইয়া পড়ে, সেইরূপ ত্বরিতগতি এবং সর্ব্বদা পরপ্রভাব অসহিষ্ণু সাধারণ তপস্বিগণের তেজও অন্যের পক্ষে স্বভাবতই দুঃসহ হইয়া থাকে, আর সমগ্র জগতের লোক যাঁহাদের

(१) सौदामनीव। (२) नतुतपसां। (३) क्वचित् दुःसहमिति नास्ति। (४) भुवनतल…।

चरणानामनवरत-तपःसलिल-क्षालित-(१) मलानां कर-कमल-तलामलकफल-वदखिलं (२) जगदालोकयतां दिव्येन चक्षुषा भगवतामेवंविधानामघक्षय-कारिणाम् (३)। (छ) पुण्यानि हि नामग्रहणान्यपि महामुनीनाम्, किं पुनर्दर्शनानि। धन्यमिदमाश्रमपदमयमधिपतिर्यत्र। अथवा भुवन-तलमेव धन्यमखिलमनेनाधिष्ठितमवनितल-कमलयोनिना। पुण्यभाजः खल्वमी मुनयो यदहर्निशमेनमपरमिव नलिनासनमपगतान्यव्यापारा मुखावलोकन (४) निश्चलदृष्टयः पुण्याः कथाः शृण्वन्तः पर्य्युपासते। सरस्वत्यपि धन्या, याऽस्य (५) सततमतिप्रसन्ने करुणाजलनिस्यन्दिन्यगाधगाम्भीर्य्ये रुचिर द्विजपरिवारा (६)

लुप्तोपमालङ्कारः। अनवरतं तपांस्येव सलिलानि जलानि तैः क्षालितानि धौतानि, मलानि पापान्येव मलानि कर्द्दमादीनि यैस्तेषां, अत्र श्लिष्टपरम्परितरूपकमलङ्कारः। तथा दिव्येन स्वर्गीयेन चक्षुषा ज्ञान-नयनेनेत्यर्थः, करकमलतलामलकफलवत् पाणिकमलतलस्थितधात्रीफलवत्, अखिलं सर्वं जगत् आलोकयतां पश्यतां। अत्रोपमालङ्कारः। एवंविधानां जाबालितुल्यानां अघक्षयकारिणां दर्शनमात्रेणैव परेषां पाप-विनाशकारिणाम्।

(ज) पुण्यानीति। पुण्यानि पुण्यजनकानि। नाम्नां ग्रहणानि उच्चारणानि। आश्रमपदं आश्रम-रूपं स्थानम्। अवनितलस्य मर्त्यलोकस्य कमलयोनिर्ब्रह्मा तत्स्वरूप इत्यर्थः, तेन। अत्र निरङ्गं केवल-रूपकमलङ्कारः। नलिनासनं ब्रह्माणं। अत्र द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः। अपगता दूरीभूता अन्ये व्यापाराः कार्य्याणि येषां ते, तथा मुखावलोकने जाबालेर्वदनदर्शने निश्चला दृष्टिर्येषां ते। रुचिराः सुन्दराः द्विजाः शिष्यीभूता ब्राह्मणाः पक्षिणश्च परिवाराः परिजना यस्याः सा, या सरस्वती राजहंसीव, मुखं कमलं पद्ममिव तस्य सम्पर्कसुखं अनुभवन्ती सती अतिप्रसन्ने नितान्तानुग्रहकारिणि अतिशयनिर्म्मले च, करुणा जलमिव करुणैव च जलमिति करुणाजलं तस्य निस्यन्दिनि स्राविणि, अगाधं इयत्तारहितं अतलस्पर्शं च,

চরণ বন্দনা করে, অবিশ্রান্ত তপস্যার জলে যাঁহারা সমস্ত মল প্রক্ষালন করিয়াছেন, এবং যাঁহারা দিব্যচক্ষুদ্বারা করতলস্থিত আমলকীফলের ন্যায় সমগ্র জগৎ দর্শন করিতেছেন, এবং যাঁহারা দর্শনমাত্রেই লোকের পাপক্ষয় করিয়া থাকেন, এবংবিধ মাহাত্ম্যশালী সেই মহর্ষিদিগের তেজের কথা আর কি বলিবার আছে। (জ) মহর্ষিদিগের নামোচ্চারণও পুণ্য জন্মাইয়া থাকে, দর্শনের কথা আর বলিবার কি আছে? এই আশ্রম ধন্য, যে স্থানে ইনিই অধিপতি। অথবা সমগ্র ভূমণ্ডলই ধন্য, যে হেতু, মর্ত্ত্যালোকের ব্রহ্মা এই মহর্ষি বাস করিতেছেন। এই সকল মুনিরাও পুণ্যবান্, যে হেতু, অন্য সকল কার্য্য পরিত্যাগ করিয়া কেবল ইঁহার মুখ নিরীক্ষণেই নিশ্চলনেত্র হইয়া নানাবিধ ধর্ম্মোপাখ্যান শ্রবণ করত, দিবারাত্র দ্বিতীয় ব্রহ্মার ন্যায় ইঁহার উপাসনা করিতেছেন। আর, সুন্দর পক্ষিগণে পরিবৃত হইয়া রাজহংসী যেমন পদ্মের

(१)...तपःक्षपितमलानां। (२) करतलामलकवत्। (३)...अघक्षयकारणानि पुण्यानि...।
(४) मुखकमलावलोकन...। (५) यदस्मिन्, याऽस्य तु। (६) रुचिरद्विजकुलपरिचयी, द्विजपरिवारे।

मुखकमल-सम्पर्क-सुख-(१) मनुभवन्ती निवसति राजहंसीव (२) मानसे। (ञ) चतुर्म्मुख-मुखकमलवासिभिश्चतुर्वेदैः (३) सुचिरादिव द्वितीयमिद-(४) मासादितं स्थानम्। (झ) एनमासाद्य शरत्कालमिव कलिकाल-जलधर-समय-(५) कलुषिताः प्रसादमुपगताः पुनरपि जगति सरित इव सर्वविद्याः। (ञ) नियतमिह सर्वात्मना कृतावस्थितिना भगवता परिभूत-कलिकाल-विलसितेन धर्म्मेण न स्मर्य्यते कृतयुगस्य। (ट) धरणितलमनेनाधिष्ठितमालोक्य (६)

गाम्भीर्य्यं दुरवगाहस्वभावत्वं गभीरता च यस्य तस्मिन्, अस्य जावालेः मानसे मनसि मानससरोवरे च, सततं निवसति। असाधारणपुण्यैर्नैवेदृशवासस्थानस्य लभ्यत्वात् सा सरस्वत्यपि धन्येति भावः। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(झ) चतुरिति। चतुर्म्मुखस्य ब्रह्मणः मुखकमलवासिनस्तैः। इदं एतत् तपोवनरूपम्। आसादितं प्राप्तम्। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः। तेन च ब्रह्मणो वदनस्य समाना तपोवनस्य पवित्रता व्यज्यत इत्यलङ्कारेण वस्तुध्वनिः।

(ञ) एनमिति। कलिकालो जलधरसमयो वर्षाकाल इव तेन कलुषिताः स्वप्रभाववशात् कुव्याख्यानादिना अननुष्ठानेन च दूषिताः, आविलीकृताश्च सर्वविद्या अष्टादशप्रकारा वेदादिविद्याः, सरितो नद्य इव, शरत्कालमिव एनं जावालिं आसाद्य प्राप्य जगति पुनरपि प्रसादं सद्व्याख्यानादिना अनुष्ठानेन च निर्दोषत्वं निर्म्मलत्वञ्च उपगताः प्राप्ता। अयं खलु यथायथं सर्वा एव विद्या दधाति तदुपदिष्टानुष्ठानञ्च करोतीति भावः। अत्र द्वयोरुपमयोरेकाश्रयानुप्रवेशरूपः सङ्करः।

(ट) नियतमिति। इह अस्मिन्नाश्रमे सर्वात्मना सर्वप्रयत्नेन कृतावस्थितिना भगवता धर्म्मेण, परिभूतं तिरस्कृतं दूरीकृतं कलिकालस्य विलसितं चेष्टितं येन तादृशेन सता, कृतयुगस्य सत्ययुगस्य नियतं निश्चितं न स्मर्य्यते, सत्ययुगीयसर्वविधसदाचारादिलाभादिति भावः। अत्र ध्रुवादिशब्दवत् नियतशब्दस्य उत्प्रेक्षावाचकत्वात्ताद्वाच्या भावाभिमानिनी क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। स्मर्य्यत इत्यकर्म्मकत्वविवक्षया भावे प्रत्ययः,

---

সংসর্গসুখ অনুভব করত, নিতান্তনির্ম্মল জলশালী ও অত্যন্ত গভীর মানসসরোবরে সর্ব্বদা বাস করে, সেইরূপ বিশুদ্ধ ব্রাহ্মণগণে পরিবৃত হইয়া যে সরস্বতী, ইঁহার মুখের সংসর্গসুখ অনুভব করত, অনুগ্রহ ও দয়ার আধার এবং অত্যন্ত গাম্ভীর্য্যসম্পন্ন ইঁহার চিত্তে সর্ব্বদা বাস করিতেছেন, সেই বাগ্দেবী সরস্বতীও ধন্য। চতুর্ম্মুখ ব্রহ্মার মুখকমলনিবাসী চতুর্ব্বেদ, যেন বহুকালের পর এই দ্বিতীয় স্থান লাভ করিয়াছে। (ঞ) বর্ষাকালে কলুষতাপ্রাপ্ত নদীগণ যেমন শরৎকাল পাইয়া পুনরায় নির্ম্মলতা প্রাপ্ত হয়, কলিকালের প্রভাবে দূষিত সমস্ত শাস্ত্রের বিদ্যাও তেমন ইঁহাকে পাইয়া পুনরায় জগতের মধ্যে নির্দ্দোষতা লাভ করিয়াছে। (ট) ভগবান্ ধর্ম্ম সকলপ্রকার যত্ন অবলম্বনপূর্ব্বক এই আশ্রমে অবস্থান করত কলিকালের প্রভাব দূরীভূত

---

(१) सम्पर्कमनुभवन्ती। (२) हंसीव। (३) वेदैः, चतुर्वेदैः।
(४) सुचिरादिदं, सुचिरादिवेदं। (५) कलि-जलद-समय...। (६) आलक्ष्य, अवलोक्य।

न वहति नूनमिदानीं सप्तर्षि-मण्डल-(१) निवासाभिमानमम्बरतलम्। (ठ) अहो महासत्त्वेयं जरा, यास्य प्रलय-रवि-कर-निकर-(२) दुर्निरीक्षे (३) रजनिकर-किरण-पाण्डु-शिरोरुहे जटाभारे (४) फेनपुञ्ज-धवला गङ्गेव पशुपतेः क्षीराहुतिरिव शिखाकलापे विभावसोर्निपतन्ती (५) न भीता। (ड) बहलाज्य-धूम-पटल-मलिनीकृताश्रमस्य (६) भगवतः प्रभावाद्भीतमिव (७) रवि-किरणजालमपि (८)

कृतयुगस्येति च सम्बन्ध एव षष्ठी, तेन नोक्तार्थता। तथा च कलापवृत्तौ दुर्गसिंहः—"कथं माता स्मर्य्यते उक्तार्थत्वात्। मातुः स्मर्य्यत इति यदि सम्बन्धोऽत्र विवक्ष्यते।"

(ठ) धरणीति। अम्बरतलं आकाशतलं कर्त्तृ, अनेन जाबालिना अधिष्ठितं धरणितलमालोक्य नूनं निश्चितं इदानीं सप्तर्षिमण्डलस्य निवासेन आत्मन्यधिष्ठानेन योऽभिमानोऽहङ्कारस्तं न वहति न दधाति, सप्तर्षिवज्जाबालेरधिष्ठानेन धरणितलस्यापि स्वतुल्यत्वादिति भावः। अत्रापि पूर्ववद्वाच्या क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ड) अहो इति। अहो आश्चर्यं, इयं अस्य शरीरे दृश्यमाना, जरा वार्द्धक्यं, महासत्त्वा महाप्राणा अतीवबलवती। कथमेतन्निश्चीयत इत्याह यास्येत्यादि। फेनपुञ्जधवला या जरा, प्रलये यो रविकर-निकरस्तद्वत् दुर्निरीक्षे महातेजस्वितया दुर्द्दर्शे, तथा रजनिकरस्य चन्द्रस्य किरणवत् पाण्डवः श्वेताः शिरोरुहाः केशा यस्मिन् तादृशे अस्य जाबालेः जटानां भारे समूहे, पशुपतेः शिवस्य जटाभारे निपतन्ती फेन-पुञ्जवत् धवला गङ्गा इव, तथा विभावसोर्वह्नेः शिखाकलापे ज्वालासमूहे निपतन्ती फेनपुञ्जधवला क्षीरस्य दुग्धस्य आहुतिरिव निपतन्ती उपसर्पितुं प्रवृत्ता सती न भीता। अत्र लुप्तोपमास्तिस्रः द्वे चोपमे इत्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ढ) बहलेति। रवेः किरणानां जालं समूहः कर्त्तृ, बहलानां प्रचुराणां आज्यधूमानां हविर्धूमानां पटलैः समूहैः मलिनीकृत आश्रमो यस्य तस्य, भगवतो जाबालेः प्रभावान्माहात्म्यात् भीतमिव सत् दूरतः एतत्तपोवनं परिहरति त्यजति, स्वविरोधिनः प्रबलान्धकारस्येव धूमराशेर्जनकतया मुनेरपि विरोधिपक्षान्तर्भावाशयेन तत्समीपपरित्यागो युज्यत एवेति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

করিয়া নিশ্চয়ই আর সত্যযুগকে স্মরণ করিতেছেন না। (ঠ) ইনি ভূতলে বাস করিতেছেন, ইহা দেখিয়া আকাশ, আপনাতে সপ্তর্ষিগণের নিবাসবশতঃ অহঙ্কার আর এখন নিশ্চয়ই বহন করিতেছে না। (ড) কি আশ্চর্য্য! এই জরা যে অত্যন্তবলবতী দেখিতেছি; কারণ— ফেনপুঞ্জের ন্যায় ধবলবর্ণা গঙ্গা যেমন মহাদেবের জটাসমূহে পতিত হইতে ভীত হন নাই, এবং দুগ্ধের আহুতি যেমন অগ্নির শিখাসমূহে পতিত হইতে ভীত হয় না, সেইরূপ যে জরা, প্রলয়-কালীন সূর্য্যের কিরণসমূহের ন্যায় দুর্নিরীক্ষ্য এবং চন্দ্রের রশ্মিসমূহের ন্যায় শ্বেতবর্ণ কেশযুক্ত ইহাঁর জটাসমূহে উপস্থিত হইতে ভীত হয় নাই। (ঢ) ঘৃতের আহুতি পতিত হওয়ায়

(१) सप्तर्षिनिवासा...। (२)...रविरश्मि...। (३)...दुर्निरीक्ष्ये। (४) रजनिकरनिकरपाण्डुरे जटाभारे। (५) निष्पतन्ती। (६)...आश्रमपदस्य। (७)...भीतभीतमिव। (८)...जालकमपि।

दूरतः परिहरति तपोवनम्। (ढ) एते च पवन-लोल-पुञ्जीकृत-शिखाकलापा (१) रचिताञ्जलय इवात्र मन्त्रपूतानि हवींषि गृह्णन्ति (२) एतत् प्रीत्याशुशुक्षणयः। (ण) तरलित-दुकूल-वल्कलोऽयञ्चाश्रमलता-कुसुम-सुरभि-परिमलो मन्दमन्दसञ्चारी (३) सशङ्क इवास्य समीपमुपसर्पति गन्धवाहः। (त) प्रायो महाभूतानामपि दुरभिभवानि भवन्ति तेजांसि (४)। सर्वतेजस्विनामयञ्चाग्रणीः। (थ) द्विसूर्य्यमिवाभाति जगदनेनाधिष्ठितं महात्मना। (द) निष्क-

(ण) एत इति। अत्र आश्रमे पवनेन वायुना लीलश्चञ्चलः पुञ्जीकृतश्च शिखाकलापो येषां ते, एते हूयमानाः, आशुशुक्षणयः दक्षिणाग्नि-गार्हपत्याहवनीयरूपा होमाग्नयश्च, रचिताञ्जलयः आहुतिग्रहणाय उत्तानीकृतयुक्तकरतलद्वया इव सन्तः, एतस्य मुनेः प्रीत्या प्रणयेन, मन्त्रपूतानि हवींषि घृतादीनि गृह्णन्ति। अत्रापि क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(त) तरलितेति। तरलितं कम्पितं दुकूलवत् क्षौमवस्त्रवत् वल्कलं मुनिपरिहितत्वचत्वक् येन सः, आश्रमलताकुसुमानां सुरभिर्घ्राणतर्पणः परिमलो गन्धो यस्मिन् सः, मन्दमन्दसञ्चारी अयञ्च गन्धवाहो वायुः, सशङ्कः सातङ्क इव सन् अस्य मुनेः समीपमुपसर्पति उपगच्छति, परिहितवल्कलचालनेन नर्म्मसुहृद इव व्यवहारादात्मनोऽपराधाशङ्कया वायोः सशङ्कत्वं युज्यत एवेति भावः। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(थ) प्राय इति। प्रायो बाहुल्येन महाभूतानामपि महाप्राणिनां केशरिकरिप्रभृतीनामपि तेजांसि प्रभावाः दुरभिभवानि दुरतिक्रमाणि भवन्ति, चकारः किन्त्वर्थे। अयं जावालिः सर्वतेजस्विनां अग्रणीः प्रधानः, सुतरामस्य प्रभावाभिभवासम्भवात् सूर्य्यादीनामुक्तरूपो व्यवहारो युज्यत एवेति भावः।

(द) द्विसूर्य्यमिति। अस्याप्यपरसूर्य्यतुल्यतेजस्वित्वादिति भावः। अत्र द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः।

প্রচুর ধূমরাশি উত্থিত হইয়া আশ্রমটিকে মলিন করিয়াছে, তাহাতে বোধ হইতেছে যেন, সূর্য্যের রশ্মিসমূহও ভগবান্ জাবালির প্রভাবে ভীত হইয়া দূর হইতেই এই তপোবন পরিত্যাগ করিতেছে। (ণ) বায়ু, হোমাগ্নির শিখাসমূহ চালিত করিয়া, সম্মিলিত করিয়া দিতেছে, সুতরাং প্রতীতি হইতেছে যেন, হোমাগ্নি সকল মহর্ষির প্রতি প্রণয়বশতঃ দুই হাত পাতিয়া মন্ত্রপূত ঘৃতের আহুতি গ্রহণ করিতেছে। (ত) আশ্রমস্থ লতাসমূহের কুসুমসৌরভবাহী ও মন্দমন্দসঞ্চারী বায়ু, ক্ষৌমবসনের ন্যায় মহর্ষির পরিধানের বল্কল কম্পিত করিয়া যেন শঙ্কিতচিত্তে ইহাঁর নিকটে উপস্থিত হইতেছে। (থ) কারণ—সিংহ ও হস্তিপ্রভৃতি মহাপ্রাণিদিগের তেজও অন্যের পক্ষে দুরতিক্রমণীয়, কিন্তু ইনি ত সকল তেজস্বিগণের মধ্যেই প্রধান। (দ) এই মহাত্মা অধিষ্ঠান করায় জগতে যেন, দুইটি সূর্য্য প্রকাশ পাইতেছে।

(१)...शिखाजटिलाः। (२) प्रतिगृह्णन्ति।

(३) मन्दमन्दचारी, मन्दसञ्चारी। (४) तेजांसि, यतः।

म्येव (१) क्षितिरितदवष्टम्भात्। (ध) एष प्रवाहः * करुणारसस्य, † सन्तरणसेतुः संसार-सिन्धोः, आधारः क्षमाम्भसाम्, (२) परशुस्तृष्णालता-गहनस्य, सागरः सन्तोषामृत-रसस्य, (३) उपदेष्टा सिद्धिमार्गस्य, अस्तगिरिरसद्ग्रहस्य, (४) मूलमुपशमतरोः, नाभिः (५) प्रज्ञा-चक्रस्य, प्रासादो (६) धर्म्मध्वजस्य, तीर्थं (७) सर्वविद्यावताराणाम्, वड़वानलो (८) लोभार्णवस्य, निकषोपलः शास्त्र-रत्नानाम्, दावानलो रागपल्लवस्य, मन्त्रः (९) क्रोध-भुजङ्गस्य,(१०) दिवसकरो मोहान्धकारस्य,(न)

(ध) निष्कम्पेति। एतस्य मुनेरवष्टम्भादाश्रयादिव, निष्कम्पा निश्चला। अत्र हेतूत्प्रेक्षालङ्कारः।

(न) एष इति। एष जावालिः, करुणा दयैव रसो जलं तस्य, प्रवाह आघः, सदसन्निर्विशेषेण सर्वत्रैवाविच्छिन्नदयामत्त्वात्। इतः प्रभृति दिवसकरो मोहान्धकारस्य इत्यन्तं यावत् प्रायेण सर्वत्रैव परम्परितरूपकमलङ्कारः, किञ्च विषयभेदेनैकस्य मुनेरनेकधोल्लेखादुल्लेखालङ्कारश्च इत्युभयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। सन्तरणस्य उत्तरणस्य सेतुरालिः, उपदेशादिना मोक्षोपयोगिज्ञानजननद्वारा उत्तरणविधानात्। "संसारश्च मिथ्याधीप्रभवा वासना" इति प्रामाण्यवादे गदाधरः। "स्वादृष्टोपनिबद्धशरीरपरिग्रहः संसार" इति गोपीनाथः। अपकारिणः प्रत्यपकारसमर्थस्यापि ततो निवृत्तिः क्षमा। क्षमा एवाम्भांसि जलानि तेषामाधार आश्रयः सर्वत्रैव क्षमाविधानात्। तृष्णा विषयभोगलालसा एव लतास्तासां गहनस्य वनस्य परशुः कुठारः, उच्छेदकत्वात्। सन्तोष एव अमृतरसः सुधाद्रवस्तस्य सागरः, विशालाधारत्वात्। सिद्धिमार्गस्य मोक्षपथस्य उपदेष्टा अध्यात्मविषयोपदेशात्। असद्ग्रहो दुरभिसन्धिरेव असद्ग्रहः शनैश्चरादिपापग्रहस्तस्य अस्तगिरिरस्ताचलः, एनमासाद्यैव सर्वेषां दुरभिसन्धिविलोपात्। अत्र श्लिष्टपरम्परितरूपकम्। उपशमतरोः शान्तिवृक्षस्य मूलं बध्नः कारणञ्च, उपदेशादिना शान्तिविधानात्। अत्रापि श्लिष्टपरम्परितरूपकम्। प्रज्ञा ज्ञानमेव चक्रं तस्य नाभिरालम्बनीभूतमध्यदेशः, एनमालम्ब्यैव सर्वेषां ज्ञानप्रसारात्। धर्म्म एव ध्वजः केतुस्तस्य प्रासादो राजगृहं अस्योपरि धर्म्मारोपणात्। सर्वविद्यासु ये अवतारा: प्रवेशास्तेषां तीर्थं घट्टः, घट्टमाश्रित्य जलेषु प्रवेशवत् एनमाश्रित्य शिष्याणां सर्वविद्यासु प्रवेशात्। अत्र मुनौ घट्टत्वारोपः शाब्दः सर्वविद्यासु जलत्वारोपस्त्वार्थ इत्येकदेशविवर्त्तिरूपकम्। लोभ एव अर्णवस्तस्य वड़वानलः परिशोषकत्वात्। शास्त्राण्येव रत्नानि तेषां निकषोपलः उत्कर्षापकर्षपरीक्षकपाषाणः, शिष्याणां शास्त्रज्ञानपरीक्षाकरणात्।

(ध) ইনি আশ্রয় করিয়া রহিয়াছেন বলিয়াই যেন পৃথিবী নিশ্চল হইয়া রহিয়াছে। (ন) এই মহর্ষি করুণা-জলের প্রবাহ, সংসার-সাগর হইতে উত্তীর্ণ হইবার সেতু, ক্ষমারূপ জলের আধার, ভোগলালসারূপ লতাসমূহের কুঠার, সন্তোষরূপ সুধারসের সমুদ্র, মোক্ষপথের উপদেশক, দুরভিসন্ধিরূপ পাপগ্রহের অস্তাচল, শান্তিবৃক্ষের মূল, জ্ঞান-চক্রের আশ্রয়ীভূত মধ্যস্থান, ধর্ম্মময় ধ্বজের উচ্চ অট্টালিকা, সকল বিদ্যারূপ-জলের মধ্যে প্রবেশ করিবার ঘাট,

(१) निष्कण्टकेव। * प्रभवः। † करुणरसस्य। (२) कृपाम्भसाम्। (३) अमृतस्य। (४) असद्ग्रहकस्य। (५) नेमिः। (६) प्रासादः। (७) तीर्थः। (८) वाड़वानलः। (९) मन्त्रः। (१०) क्रोधभुजङ्गमस्य।

अर्गलबन्धो नरक-द्वाराणाम्, (१) कुलभवनमाचाराणाम्, आयतनं मङ्गलानाम्, (फ) अभूमिर्मदविकाराणाम्, दर्शकः सत्पथानाम्, उत्पत्तिः साधुतायाः, नेमि-रुत्साह-चक्रस्य, आश्रयः सत्त्वस्य, प्रतिपक्षः कलिकालस्य, कोशस्तपसः, सखा सत्यस्य, क्षेत्रमार्जवस्य, प्रभवः (२) पुण्य-सञ्चयस्य, अदत्तावकाशो मत्सरस्य,

---

रागो विषयाभिलाष एव पल्लवस्तस्य दावानलो वनवह्निर्दाहकत्वात्। क्रोध एव भुजङ्गः सर्पस्तस्य महामन्त्रः, उपशमकारित्वात्। मोहोऽज्ञानमेवान्धकारस्तस्य दिवसकरः सूर्य्यः विनाशकत्वात्।

(प) अर्गलेति। अर्गलबन्धः कपाटबन्धकरणकीलकः, उपदेशादिना ज्ञानजननादिद्वारा एतद्बाधया नरकप्रवेशाभावात्। आचाराणां सदाचरणानां कुलभवनं चिरन्तनाश्रयगृहम्, यावज्जीवमेव सदाचारित्वात्। मङ्गलानां सर्वविधशुभानां आयतनं चैत्यं पवित्रस्थानमित्यर्थः, सर्वमङ्गललाभात्। अत्र वाक्यत्रये प्रत्येकगतनिरङ्ग-केवलरूपकसङ्कीर्णः पूर्ववदुल्लेखालङ्कारः।

(फ) अभूमिरिति। मदविकाराणामभिमानरूपमानसिकविकृतीनां अभूमिरस्थानं अहङ्कारलेशेनापि रहित इत्यर्थः महायोगित्वात्। सत्पथानां उत्तमकर्म्ममार्गाणामित्यर्थः, अतएव उपदेष्टा सिद्धिमार्गस्येत्यनेन सहापौनरुक्त्यं मोक्षमार्गकर्म्ममार्गयोर्भेदात्, दर्शक उपदेष्टा सर्वज्ञत्वात् सर्वहितैषित्वाच्च। साधुतायाः सौजन्यस्य उत्पत्तिः उद्भवस्थानं अस्मादेव बहूनां सौजन्यशिक्षालाभात्। उत्साह उद्यम एव चक्रं तस्य नेमिः प्रान्तदेशो भूमिस्पर्शिभाग इत्यर्थः, रथचक्रस्य प्रान्तभागो यथा गन्तव्यपथस्य सर्वमंशं स्पृशति तथायमपि उत्साहस्य काष्ठा-प्राप्तावस्थया यावतः पदार्थान् परिच्छिनत्तीति भावः। अत्र परम्परितरूपकमलङ्कारः। सत्त्वस्य केवलसत्त्वगुणस्य आश्रयः, रजस्तमसोः कार्य्याभ्यां दुःखमोहाभ्यामनभिभवात्। कलिकालस्य प्रतिपक्षो विरोधी तत्कार्य्यपाप-प्रतिबन्धकत्वात्। तपसः कोशः अवस्थानभाण्डम् तपःपरिपूर्णत्वात्। सत्यस्य सत्यव्यवहारस्य सखा, क्षणमप्यपरित्यागात्। आर्जवस्य सरलतायाः क्षेत्रं भूमिः सर्वत्रैव सरलतादर्शनात्। पुण्यसञ्चयस्य प्रभवत्यस्मादिति प्रभवः कारणं दर्शनोपदेशादिना सर्वेषामेव पुण्यजननात्। मत्सरस्य विद्वेषस्य न दत्तोऽवकाश आत्मन्यवस्थान-स्थानं येन सः, कुत्रापि विद्वेषाकरणात्। विपत्तेरराति: शत्रुः स्वप्रभावेण विनाशकत्वात्। परिभूतेरनादरस्य अवज्ञायाः अस्थानं अपात्रं, सर्वदोषहीनत्वात्। अभिमानस्य सर्वजनानामेव अहङ्कारस्य अननुकूलः अननुमन्ता वर्जनोपदेशात्। दैन्यस्य कार्पण्यस्य असम्मतः आश्रयणीयत्वेनानभिमतः कदाप्याश्रयणाभावात्। रोषस्य क्रोधस्य

লোভরূপ সমুদ্রের বড়বানল, শাস্ত্ররূপ রত্নসমূহের পরীক্ষক পাষাণ, বিষয়াসক্তিরূপ পল্লবের দাবানল, ক্রোধরূপ সর্পের উপশমকারী মহামন্ত্র, অজ্ঞানরূপ অন্ধকারের সূর্য্য, (প) নরকদ্বার-সমূহের কবাটবন্ধকরণের খিল, সদাচারের কৌলিক আশ্রয়-গৃহ, সকলপ্রকার মঙ্গলের আশ্রয়-স্থান, (ফ) এবং ইনি অহঙ্কারজনিত বিকারের আশ্রয় নহেন, সৎপথের প্রদর্শক, সৌজন্যের উৎপত্তিস্থান, উৎসাহ-চক্রের প্রান্তভাগ, সত্ত্বগুণের আধার, কলিকালের বিরোধী, তপস্যার কোশাগার, সত্যের সখা, সরলতার উৎপত্তিক্ষেত্র, পুণ্যসমূহের কারণ, বিদ্বেষের আশ্রয় নহেন,

---

(१) नरकपुरद्वाराणाम्। (२) प्रसवः, प्रभावः।

अरातिर्विपत्तेः, अस्थानं परिभूतेः अननुकूलोऽभिमानस्य, असम्मतो दैन्यस्य, अनायत्तो रोषस्य, अनभिमुखः (१) सुखानाम्। (फ)

अस्य भगवतः प्रभावादेवोपशान्तवैर-(२) मपगतमत्सरं तपोवनम्। (ब)

अहो प्रभावो महात्मनाम्। अत्र हि शाश्वतिकमपहाय विरोधमुपशान्तान्तरात्मान-(३) स्तिर्य्यञ्चोऽपि तपोवन-वसति-सुखमनुभवन्ति। (भ) तथा हि एष विकचोत्पलवन-रचनानुकारिणमुत्पतच्चारुचन्द्रकशतं हरिण-लोचन-द्युति-शवलमभिनव-शाद्वलमिव विशति (४) शिखिनः कलापमातपाहतो (५)

अनायत्तोऽनधीनः, दुर्व्यवहारे प्रवर्त्तयितुमशक्यत्वात्। सुखानामैहिकानामित्यर्थः अनभिमुखः अनभिलाषीति तात्पर्य्यं तत्सामग्रीवर्जनात्।

(ब) अस्येति। उपशान्तं विनष्टं वैरं परस्परशत्रुता यस्मिन् तत्, तथा अपगतो दूरीभूतो मत्सरः अन्यशुभद्वेषो यस्मात् तत्।

(भ) विस्मयापन्न आह अहो इति। शाश्वतिकं सदातनं। उपशान्ताः परस्परविद्वेषरहिताः अन्तरात्मानः अन्तःकरणानि येषां ते, तिर्य्यञ्चोऽपि पशुपक्षिप्रभृतयोऽपि।

(म) उक्तार्थे निदर्शनमाह तथाहीति। एष दृश्यमानः अहिः सर्पः, आतपेन रविकिरणेन आहतः पीड़ितः सन्, विकचानां प्रस्फुटितानां उत्पलानां नीलकमलानां वनस्य या रचना सृष्टिस्तामनुकर्त्तुं शीलं यस्य तम्, उत्पतदूर्द्ध्वं गच्छत् चारु मनोहरं चन्द्रकाणां मेचकानां चन्द्राकारचिह्नानां शतं समूहो यस्मिन् तम्। अतएव हरिणानां तत्तत्तृणभक्षणप्रवृत्तानां मृगाणां यानि लोचनानि चक्षूंषि तेषां द्युतिभिः कान्तिभिः शवलं मिश्रितं अभिनवशाद्वलमिव नूतनतृणबहुलदेशमिव स्थितं शिखिनो मयूरस्य कलापं पिच्छं निःशङ्कं निर्भयं विशति छायालाभार्थं प्रविशति। सति विरोधे न खलु सर्पस्थिरशत्रोर्मयूरस्य कलापं स्वयमाश्रयेदिति भावः। अत्र प्रथमा आर्थोपमा द्वितीया च श्रौतोपमा इत्यनयोर्मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

বিপদের শক্র, কাহারও অবজ্ঞার পাত্র নহেন, কাহারও অভিমানের অনুকূল নহেন, ক্ষুদ্রতার আশ্রয় নহেন, ক্রোধের অধীন নহেন এবং ঐহিক সুখের অভিলাষী নহেন।

(ব) এই মহর্ষির প্রভাবেই এই তপোবনে প্রাণিগণের পরস্পর শত্রুতা ও বিদ্বেষ দূরীভূত হইয়াছে।

(ভ) এই সকল মহাত্মাদিগের প্রভাব কি আশ্চর্য্য; কারণ—এই স্থানে পশু-পক্ষিগণও চিরকালের পরস্পর শত্রুতা পরিত্যাগ করিয়া বিদ্বেষহীন চিত্তে তপোবন-বাসের সুখ অনুভব করিতেছে; (ম) তাহার প্রমাণ—এই—সর্প রৌদ্রের উত্তাপে উত্তপ্ত হইয়া, প্রস্ফুটিত নীলপদ্মবনের অনুকরণকারী, মনোহর চন্দ্রাকার চিহ্নে চিহ্নিত এবং তৃণভক্ষণের সময় হরিণগণের

(१) अवशो विषयाणां, क्वचिदीदृशः पाठः; अनवकाशो विषयाणां ईदृशोपि क्वचित् पाठः। (२) प्रसादादेव तदस्य प्रशान्तवैरम्। (३) उपशान्तात्मानः। (४) अधिवसति, आवसति। (५)...कलापमाहतः।

निःशङ्कमहिः। (म) अयमुत्सृज्य मातरमजात-केशरैः केशरि-शिशुभिः सहोपजात-परिचयः क्षरत्-(१) क्षीरधारं पिबति (२) कुरङ्ग-शावकः सिंहीस्तनम्। (य) एष मृणाल-कलापाशङ्किभिः (३) शशिकर-(४) धवलं सटाभारं (५) आमीलित-लोचनो बहु मन्यते द्विरद-कलभैराकृष्यमाणं मृगपतिः। (र) इदमिह कपि-कुलमपगत-चापलमुपनयति मुनि-कुमारकेभ्यः स्नातेभ्यः फलानि। (ल) एते च न निवारयन्ति मदान्धा अपि गण्डस्थलीभाञ्जि मदजल-पान-निश्चलानि मधुकर-कुलानि सञ्जात-दयाः कर्णतालैः करिणः। (व) किं बहुना, तापसाग्निहोत्र-धूमलेखाभि-

(य) अयमिति। अयं दृश्यमानः कुरङ्गशावको हरिणशिशुः, मातरं स्वजननीं हरिणीं उत्सृज्य विहाय। क्षरन्ती स्रवन्ती क्षीरधारा दुग्धधारा यस्मात्तम्। अत्रापि पूर्ववद्भावः।

(र) एष इति। आमीलितलोचनः जटाकर्षणेन सुखोदयान्मुद्रितनयनः, एष दृश्यमानः मृगपतिः सिंहः, मृणालकलापाशङ्किभिः जटासमूहे मृणालसमूहभ्रान्तिमद्भिः, द्विरदकलभैर्हस्तिशावकैः आकृष्यमाणं शशिकरवत् चन्द्रकिरणवत् धवलं सटाभारं स्वकीयजटासमूहं बहु मन्यते अत्यल्पाकर्षणेन सुखोदयादाद्रियते। अत्र जटासमूहे मृणालसमूहभ्रमाद्भ्रान्तिमान्, शशिकरधवलमिति लुप्तोपमा, स्वभावोक्तिश्च इत्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ल) इदमिति। अपगतचापलं महर्षिप्रभावाद्विनष्टचाञ्चल्यं इदं कपिकुलं कर्त्तृ। फलानि उपनयति भोजनायाहरति।

(व) एत इति। मदान्धा मदमत्ता अपि सञ्जातदया मधुकरकुलेषु उत्पन्नकृपाः, एते च करिणो हस्तिनः। गण्डस्थलीं भजन्त इति तानि, मधुकरकुलानि भ्रमरगणान् कर्णतालैः प्रसृतकरतलाकारकर्णताडनैः न निवारयन्ति नापसारयन्ति, मुनिप्रभावेण तेषामपि कस्यापि सुखव्याघाताकरणादिति भावः।

নয়নকান্তি-সমন্বিত নূতন তৃণময় ভূমিখণ্ডের ন্যায় উত্তোলিত ময়ূরপুচ্ছের তলে ছায়ালাভের নিমিত্ত নির্ভয়চিত্তে প্রবেশ করিতেছে। (য) অনুৎপন্নকেশর সিংহশিশুগণের সহিত পূর্ব্বেই পরিচিত এই হরিণশিশুটি, নিজের মাতাকে পরিত্যাগ করিয়া, দুগ্ধধারাক্ষরণকারী সিংহীর স্তন পান করিতেছে। (র) হস্তিশাবকগণ মৃণালসমূহ মনে করিয়া শুণ্ডদ্বারা, চন্দ্ররশ্মির ন্যায় শ্বেতবর্ণ সিংহের জটাসমূহ আকর্ষণ করিতেছে, আর পশুরাজ সিংহ তাহাতে নিতান্ত আরাম বোধ করায় নয়ন মুদ্রিত করিয়া মনে মনে সেই জটাসমূহকে আদর করিতেছে। (ল) এই বানরগণ স্বাভাবিক চপলতা পরিত্যাগ করিয়া, স্নান করিয়া উত্থিত মুনিকুমারদিগকে ভোজন করিবার নিমিত্ত ফল উপহার দিতেছে। (ব) আর মদান্ধ হইলেও দয়ালু এই সকল হস্তী, গণ্ডস্থলে উপবিষ্ট হইয়া মদজলপানে নিশ্চল ভ্রমরগণকে বিস্তৃত করতলের ন্যায় কর্ণের তাড়নে

(१) प्रक्षरत्…। (२) आपिबति। (३) मृणालशङ्किभिः।
(४) शिशिरकर, शिशिरकलापकर…। (५) जटाभारं।

उत्सर्पन्तीभिरनिशमुपपादित-(१) कृष्णाजिनोत्तरासङ्ग-शोभाः (२) फलमूलभृतो वल्कलिनो निश्चेतनास्तरवोऽपि सनियमा इव लक्ष्यन्तेऽस्य भगवतः (३) किं पुनः सचेतनाः प्राणिनः।' (श)

इत्येवं चिन्तयन्तमेव मां तस्यैव रक्ताशोकतरोश्छायायां (४) एकदेशे स्थापयित्वा हारीतः पादावुपगृह्य कृताभिवादनः पितुरनतिसमीपवर्त्तिनि कुशासने समुपाविशत्। आलोक्य तु मां सर्वं एव मुनयः (५) "कुतोऽयमासादितः शुकशिशुः" इति तमासीनमपृच्छन्। असौ तु तानब्रवीत्—"अयं मया स्नातुमितो गतेन कमलिनीसरस्तीर-तरु-नीड़-पतितः (६) शुक-शिशुरातप-जनित-क्लान्ति-रुत्तप्त-पांशुपटल-मध्यगतो दूर-निपतन-(७) विह्वल-तनुरल्पावशेषायुरासादितः,

(श) किमिति। बहुना भाषितेन किं प्रयोजनमित्यर्थः। अनिशं निरन्तरं उत्सर्पन्तीभिरुत्तिष्ठन्तीभिः, तापसानां यान्यग्निहोत्राणि तामनिशिखाणां धूमलेखाभिः धूमराजिभिः, उपपादिता कृता कृष्णाजिनोत्तरासङ्गस्य कृष्णसारचर्म्मनिर्म्मितोत्तरीयस्य शोभा इव शोभा येषु ते, फलानि मूलानि च बिभ्रतीति ते, वल्कलिनो वल्कलवन्तः, निश्चेतनाश्चेतन्यहीनाः, अस्य भगवतो जाबालेस्तरवोऽपि सनियमा व्रतिन इव लक्ष्यन्ते कृष्णाजिनशोभादिधारणादिति भावः। अत्र लुप्तोपमागुणोत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ष) इत्येवमिति। पादौ पितुर्जाबालेरेव चरणौ, उपगृह्य धृत्वा कृताभिवादनः कृतनमस्कारः। आसादित आनीतः। कमलिनीसरसः पद्मसरोवरस्य पम्पायाः, तीरतरोः तटस्थितवृक्षस्य नीड़ात् कुलायात् पतितः। आतपेन रविकिरणेन जनिता क्लान्तिः शरीरार्त्तिर्यस्य सः। उत्तप्तस्य पांशुपटलस्य धूलिसमूहस्य

অপসারিত করিতেছে না। (শ) অধিক বলায় প্রয়োজন কি, তপস্বিগণের অগ্নিহোত্র যজ্ঞ হইতে সর্ব্বদা ধূমরাশি উঠিয়া যে সকল বৃক্ষের শাখাতে কৃষ্ণসারচর্ম্মের উত্তরীয়ের ন্যায় শোভা জন্মাইয়াছে, সেই সকল অচেতন, ফল-মূলধারী, বল্কলবিশিষ্ট, মহর্ষি জাবালির আশ্রমস্থ বৃক্ষ ব্রতধারীর ন্যায় দৃষ্ট হইতেছে ; সচেতন প্রাণীর কথা আর কি বলিব।

(ষ) আমি এইরূপ চিন্তা করিতেছিলাম, এই অবস্থায় হারীত আমাকে সেই রক্তাশোক-বৃক্ষের ছায়াতেই একদিকে রাখিয়া পিতার (জাবালির) চরণযুগলগ্রহণপূর্ব্বক অভিবাদন করিয়া তাঁহার অনতিনিকটবর্ত্তী কুশাসনে উপবেশন করিলেন। তাহা দেখিয়া মুনিরা সকলেই উপবিষ্ট হারীতকে জিজ্ঞাসা করিলেন,—"এই শুকশাবকটি কোথা হইতে আনিয়াছ ?।" তখন হারীত তাঁহাদিগকে বলিলেন,—"আমি এই স্থান হইতে স্নান করিতে যাইয়া দেখিলাম, এই শুকশাবকটি পদ্মসরোবর পম্পার তীরবর্ত্তী কোন বৃক্ষস্থিত বাসা হইতে উত্তপ্ত ধূলিরাশির মধ্যে পতিত হইয়াছে, রৌদ্রের উত্তাপে অত্যন্ত ক্লান্তি জন্মিয়াছে, দূর হইতে পতিত হওয়ায়

(१) उत्सर्पन्तीभिरुपपादित..., सर्पन्तीभिरहर्निशमुपपादित...। (२)...शोभनाः। (३) समीपवर्त्तिनोऽस्य।
(४) तस्यामेवाशोकतरोरधश्छायायां। (५) मां ते मुनयः सर्व एव।
(६)...शिरसरु, सरस्तीर-तरुनीड़पतितः। (७) दूरनिपतित...।

तपस्वि-दुरारोहतया च तस्य वनस्पतेर्न शक्यते स्वनीड़मारोपयितुमिति जातदयेनानीतः। तदयं यावदयमप्ररूढ़पक्षतिरक्षमोऽन्तरीक्ष-(१) मुत्पतितुं, तावदत्रैव कस्मिंश्चिदाश्रमतरुकोटरे मुनिकुमारकैरस्माभिश्चोपनीतेन नीवार-कण-निकरेण विविधफल-रसेन च (२) संवर्द्धमानो धारयतु जीवितम्। अनाथ-परिपालनं हि धर्मोऽस्मद्विधानाम् (३)। उद्भिन्न-पक्षतिस्तु गगनतल-सञ्चरण-(४) समर्थो यास्यति यत्रास्मै (५) रोचिष्यते। इहैव वोपजात-परिचयः (६) स्थास्यति।" (ष)

इत्येवमादिकमस्मत्संबद्धमालाप-(७) माकर्ण्य किञ्चिदुपजात-कुतूहलो भगवान् जावालिरीषदावलित-कन्धरः पुण्यजलैः प्रक्षालयन्निव मामतिप्रशान्तया दृष्ट्या

मध्यगतः, दूरान्निपतनेन विह्वला विकला तनुर्यस्य सः, अतएव अल्पं अवशेषं अवशिष्टं आयुर्यस्य सः। जाता दया यस्य तेन मया। अप्ररूढ़े अनुत्पन्ने पक्षती पक्षमूलद्वयं यस्य सः। उपनीतेन उपहृतेन दत्तेन, नीवाराणां मुनिधान्यानां ये कणास्तेषां निकरेण समूहेन। उद्भिन्ने प्रकाशिते पक्षती पक्षमूले यस्य सः। इहैव अत्रैव तपोवने। उपजातपरिचयः अस्माभिः सह जातपरिचयः।

(स) इत्येवमिति। ईषदावलितकन्धरः मद्दिशि किञ्चित्परावर्त्तितग्रीवः, पुण्यान्येव जलानि तैः, मां प्रक्षालयन्निव। अत्र निरङ्गकेवलरूपकक्रियोत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। अतिप्रशान्तया नितान्तप्रसन्नया, दृष्ट्या चक्षुषा। "दृक् दृष्टि"रित्यमरः। उपजातं प्रत्यभिज्ञानं प्रत्यभिज्ञा स एवायमित्याकारं ज्ञानं यस्य

শরীর একেবারে বিকল হইয়া পড়িয়াছে এবং আয়ুও অল্পমাত্র অবশিষ্ট আছে; তখন আমি ইহাকে গ্রহণ করিলাম, কিন্তু সেই বৃক্ষে আরোহণ করা তপস্বীর দুঃসাধ্য বলিয়া নিজের বাসাতে ইহাকে রাখিতে পারিলাম না, তখন আমার দয়া জন্মিল, তাই আমি ইহাকে নিয়া আসিয়াছি। অতএব যে পর্য্যন্ত পাখা না উঠায় এ, আকাশে উড়িতে না পারে, সেই পর্য্যন্ত এই স্থানেই আশ্রমস্থ কোন বৃক্ষের কোটরে থাকিয়া আমাদের ও অন্যান্য মুনিকুমারগণের প্রদত্ত উড়ী-তণ্ডুলের কণা ও নানাবিধ ফলের রস আহার করিয়া বৃদ্ধি লাভ করতঃ জীবন ধারণ করুক। কারণ—আমাদের ন্যায় লোকের পক্ষে নিরাশ্রয়দিগকে পরিপালন করাই ধর্ম্ম। কিন্তু পাখা উঠিলে আকাশে বিচরণ করিতে সমর্থ হইবে, তাহার পর যে স্থানে অভিরুচি হইবে, সেই স্থানেই যাইবে; অথবা আমাদের সহিত পরিচয় হইলে এই স্থানেই থাকিবে।"

(স) আমার সম্বন্ধে এইরূপ কথোপকথন শুনিয়া ভগবান্ জাবালির কৌতূহল জন্মিল, তিনি আমার দিকে গ্রীবাদেশ ঈষৎ পরিবর্ত্তিত করিয়া পুণ্যজলে যেন প্রক্ষালন করতঃ নিতান্ত প্রসন্ন দৃষ্টিতে আমাকে দেখিলেন, তাহাতে যেন বহুকালের পর তাঁহার প্রত্যভিজ্ঞা (এই সেই—

(१) अन्तरिक्षं। (२) फलरसेन। (३) अस्मत्सद्विधानाम्। (४)···सञ्चलन...।
(५) यत्र चास्मै। (६) समुपजात..., उपजातविस्रम्भः। (७) अस्मत्सम्बद्धालापं।

दृष्ट्वा (१) सुचिरमुपजात-प्रत्यभिज्ञान (२) इव पुनः पुनर्विलोक्य "स्वस्यैवाविनयस्य फलमनेनानुभूयते" इत्यवोचत्। (ख)

स हि भगवान् कालत्रयदर्शी (३) तपःप्रभावाद्दिव्येन चक्षुषा सर्वमेव करतल-गतमिव जगदवलोकयति, (४) वेत्ति च जन्मान्तराण्यप्यतीतानि (५), कथयत्यागामिनमप्यर्थम्, ईक्षण-गोचरगतानाञ्च प्राणिनामायुषः संख्या-(६) मावेदयति। (ग)

ततः सर्वैव सा (७) तापस-परिषच्छ्रुत्वा विदित-तत्प्रभावा 'कीदृशोऽनेनाविनयः कृतः, किमर्थं वा कृतः, क्व वा कृतः, जन्मान्तरे वा कोऽयमासीत्' इति कुतूहलिन्यभवत्, असकृदुपयाचितवती च (८) तं भगवन्तम्,—"आवेदय प्रसीद

सः। "अनुभूतस्य पुनरनुभवः प्रत्यभिज्ञा" इत्याचार्याः। स्वस्यैव निजस्यैव अविनयस्य अशिष्टव्यवहारस्य। अनेन शुकशावकेन।

(ग) ननु तदानीमेव प्रथममवलोकयतो मुनेः कथं प्रत्यभिज्ञोपजायत इत्याह स हीति। हि यस्मात्। कालत्रयदर्शी भूतभविष्यद्वर्त्तमानात्मककालत्रितयगतसर्ववृत्तान्ताभिज्ञः। करतलगतमिव पाणितल-स्थितमिव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। आगामिनमप्यर्थं भविष्यन्तमपि विषयम्। ईक्षणगोचरगतानां नयनविषयस्थितानां दृष्टमात्राणामित्यर्थः। आवेदयति ज्ञापयति।

(घ) तत इति। तापसपरिषत् तपस्विसभा। युववृद्धभेदेन सम्प्रदायभेदेन वा तापसपरिषदां बहुत्वात् सर्वैवेत्युक्तिः सङ्गच्छते। विदितः अवगतः तस्य जाबालेः प्रभावो माहात्म्यं यया सा। कुतूहलिनी

এইরূপ জ্ঞান) জন্মিল; তাহার পর তিনি বারংবার আমার প্রতি দৃষ্টিপাত করিয়া বলিলেন,—"এই শুকশাবক নিজেরই অন্যায় আচরণের ফল অনুভব করিতেছে।"

(গ) কারণ—সেই মহর্ষি, ত্রিকালজ্ঞ এবং তপস্যার প্রভাবে দিব্য চক্ষুর্দ্বারা সমস্ত জগৎই করতলগতের ন্যায় দেখিতে পান, লোকের পূর্ব্বজন্মের ঘটনাবলীও জানিতে পারেন, ভবিষ্যৎ বিষয়ও বলিতে পারেন এবং দর্শনমাত্রেই প্রাণিগণের আয়ুর সংখ্যাও জানাইতে পারেন।

(ঘ) তাহার পর সেই তপস্বিগণ সকলেই, জাবালির সেই কথা শুনিয়া, তাঁহার মাহাত্ম্য অবগত থাকায় মনে মনে কৌতুকাবিষ্ট হইলেন যে, 'এই শুকশাবক কীদৃশ অন্যায় আচরণ করিয়াছিল, কি জন্যই বা করিয়াছিল, কোথায়ই বা করিয়াছিল, জন্মান্তরেই বা এ, কে ছিল?' তাহার পর তাঁহারা সেই ঘটনা বলিবার জন্য ভগবান্ জাবালিকে বার বার প্রার্থনা করিতে লাগিলেন,—"ভগবন্! আপনি প্রসন্ন হউন, আমাদের নিকট বলুন, যে এই শুকশাবক

---

(१) क्वचित् 'दृष्ट्वा' इति पदं नास्ति। (२) अभिजातप्रत्यभिज्ञः। (३) त्रिकालदर्शी।
(४) आलोकयति। (५) वेत्ति जन्मान्तराण्यतीतानि। (६) प्रमाणं।
(७) सर्वैव सा तापस…। (८) उपनाथितवती तं।

भगवन्! कीदृशस्याविनयस्य फलमनेनानुभूयते, कश्चायमासीज्जन्मान्तरे, विहग-जातौ वा (१) कथमस्य सम्भवः, किमभिधानो वायम्, अपनयतु नः कुतूहलम् आश्चर्य्याणां हि सर्वेषां भगवान् प्रभवः।" (ख)

इत्येवमुपयाचित-(२) स्तपोधनपरिषदा स महामुनिरवदत् (३)—"अति-महदिदमाश्चर्य्यमाख्यातव्यम्, अल्पशेषमहः, प्रत्यासीदति च नः स्नानसमयः, भवतामप्यतिक्रामति देवार्च्चनवेला, (४) तदुत्तिष्ठन्तु भवन्तः, सर्वं एव तावदाचरन्तु यथोचितं दिवस-व्यापारम्, अपराह्णसमये भवतां पुनः कृत-फलमूलाशनानां विस्रब्धोपविष्टानामादितः प्रभृति सर्वमावेदयिष्यामः। (५) योऽयं यच्च कृतमनेनापरस्मिन् जन्मनि, इह लोके च यथास्य सम्भूतिः। अयञ्च तावदपगत-क्लमः क्रियतामाहारेण। नियतमयमप्यात्मनो जन्मान्तरोदन्तं (६) स्वप्नोप-

ज्ञातुं मनसि कौतुकवती। असकृदुपयाचितवती तद्वृत्तान्ताभिधानाय वारं वारं प्रार्थितवती। विहगजातौ पक्षिजातौ। सम्भव उत्पत्तिः। किमभिधानः किंनामा, अयं शुकशावकः। आश्चर्य्याणां परोक्षविषयविज्ञप्ति-रूपाणां। प्रभवः कारणम्।

(क) इत्येवमिति। अल्पः अंशः शेषः अवशिष्टो यस्य तत्, अह एतद्दिनं। प्रत्यासीदति सन्निधत्ते। दिवसव्यापारं दिनकृत्यं। अपराह्णसमये गते इति शेषः, अतीतायां सायंसन्ध्यायामित्यर्थः। कृतं फलमूलानां अशनं भोजनं यैस्तेषां, विस्रब्धोपविष्टानां सुस्थभावेनोपविष्टानामित्यर्थः। सम्भूतिरुत्पत्तिः। आहारेण आहार्य्य-

কীদৃশ অন্যায় আচরণের ফল অনুভব করিতেছে, জন্মান্তরে এ, কে ছিল, পক্ষিজাতিতেই বা কি প্রকারে ইহার উৎপত্তি হইল, ইহার নাম কি, এই সকল বিষয় বলিয়া আপনি আমাদের কৌতুকনিবৃত্তি করুন, কারণ—আপনি সকলই আশ্চর্য্য বিষয় বলিয়া থাকেন।"

(ক) তপস্বিগণ এইরূপ প্রার্থনা করিলে সেই মহর্ষি বলিলেন,—অতি বৃহৎ ও আশ্চর্য্যই এই বৃত্তান্ত বলিতে হইবে, দিবসের অল্পমাত্রই অবশিষ্ট আছে, আমাদের স্নানের সময়ও উপস্থিত হইয়াছে, আপনাদেরও দেবতাপূজার সময় অতিবাহিত হইতেছে। অতএব আপনারা উঠুন, সকলেই যথোচিত দিনের কর্ত্তব্য কার্য্য সম্পন্ন করুন, সায়ংকাল অতীত হইলে আপনারা ফল-মূল ভোজন করিয়া পুনরায় সুস্থচিত্তে উপবেশন করিলে আমি প্রথম হইতেই সমস্ত বৃত্তান্ত বলিব। এই শুকশাবক পূর্ব্ব-জন্মে যে ছিল এবং যাহা করিয়াছিল এবং ইহলোকেও ইহার যে ভাবে উৎপত্তি হইয়াছে, (সেই সমস্ত বৃত্তান্তই বলিব)। তোমরা খাদ্যবস্তু প্রদান করিয়া ইহার ক্লান্তি দূর কর! আমি ইহার বৃত্তান্ত বলিতে লাগিলে এই শুকশাবকও স্বপ্নলব্ধের

(१) क्वचित् 'वा'-शब्दो नास्ति। (२) उपयाच्यमानः। (३) *प्रत्यवदत्।
(४)...विधिवेला। (५) आवेदयिष्यामि।। (६) जन्मान्तरवृत्तं।

त्वमिव मयि कथयति, सर्वमशेषतः स्मरिष्यति" इत्यभिदधदेवोत्थाय सह तैर्मुनिभिः (१) स्नानादिकमुचित-दिवस-व्यापारं (२) अकरोत्। (क)

अनेन च (३) समयेन परिणतो दिवसः। स्नानोत्थितेन मुनिजनेनार्घविधिमुपपादयता यः क्षितितले दत्तः (४) तमम्बर-तलगतः (५) साक्षादिव रक्त-चन्दनाङ्गरागं रविरुदवहत्। (ख) ऊर्द्धमुखैरर्क-बिम्ब-विनिहित-(६) दृष्टिभिरुष्मपैस्तपोधनैरिव परिपीयमान-तेजःप्रसरो विरलातपस्तनिमानमभजत्। (ग) उद्यत्सप्तर्षि-सार्थ-स्पर्श-परिजिहीर्षयेव (७) संहृत-पादः पारावत-पाद-(८) पाटल-

वस्तुप्रदानेन। नियतं निश्चितं। जन्मान्तरोदन्तं अन्यजन्मनो वृत्तान्तं। अशेषतः प्रथमतः। इत्यभिदधदेव इत्थं ब्रुवन्नेव।

(ख) अनेनेति। अनेन समयेनेति तृतीयापवर्गे। परिणतः अवसानं गतः। अर्घविधिमुपपादयता सूर्याय अर्घदानं कुर्वता। यो रक्तचन्दनाङ्गराग इत्यर्थः। अम्बरतलगतो रविः साक्षात् तं रक्त-चन्दनाङ्गरागमिव रक्तचन्दनरूपमङ्गरागद्रव्यमिव उदवहत् वपुष्यधारयत्, तदानीं रवेरालोहितायमानत्वादिति भावः। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ग) ऊर्द्धेति। अर्कबिम्बे सूर्यमण्डले विनिहिताः स्थापिताः दृष्टयो यैस्तैः, उष्माणं उत्तापं पिबन्तीति तैः तन्नामकैः। परिपीयमानः तेजःप्रसरस्तेजःसमूहो यस्य सः तादृश इव सन्, विरलः अस्तोन्मुखत्वादल्पीभूत आतपो यस्य स तथोक्तो रविः, तनोः क्षुद्रस्य भाव इति तनिमा तं पृथ्वादित्वादिमन्। अत्र फलोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(घ) उद्यदिति। उद्यत उदयमानस्य सप्तर्षिसार्थस्य सप्तर्षिमण्डलस्य यः स्पर्शः पादेन संस्पर्शः, तस्य परिजिहीर्षयेव परिहर्तुं परित्यक्तुमिच्छयेव हेतुना, संहृतः सङ्कोचितः पादः किरणश्चरणश्च येन सः, जगत्पूजनीयानां सप्तर्षीणां चरणेन स्पर्शनस्य नितान्तानौचित्यादिति भावः, पारावतपादवत् कपोत-चरणवत् पाटलः श्वेतरक्तो रागः प्रभा यस्य सः, रविः अम्बरतलादाकाशात् अलम्बत अवातरत्। अत्र

ত্মার পূর্ব্ব-জন্মের সমস্ত বৃত্তান্তই প্রথম হইতে নিশ্চয় স্মরণ করিবে।" এই কথা বলিয়া মহর্ষি জাবালি সেই মুনিগণের সহিত উঠিয়া স্নানপ্রভৃতি দিনের কর্ত্তব্য কার্য্য করিতে লাগিলেন।

(খ) এই সময় দিন প্রায় শেষ হইয়া আসিল। মুনিগণ স্নান করিয়া উঠিয়া সূর্য্যার্ঘ দান করিবার সময়ে ভূতলে যে রক্তচন্দন দিয়াছিলেন, আকাশস্থিত সূর্য্য যেন সাক্ষাৎ সেই রক্তচন্দনের অঙ্গরাগ শরীরে ধারণ করিতে লাগিলেন; (গ) এবং উষ্মপ ঋষিগণ উর্দ্ধমুখ হইয়া সূর্য্যমণ্ডলে দৃষ্টিস্থাপনপূর্ব্বক তেজ পান করিতেছিলেন বলিয়াই যেন অল্প রৌদ্র-সম্পন্ন সূর্য্য ক্রমে ক্ষুদ্র হইয়া যাইতে লাগিলেন; (ঘ) উদয়মান সপ্তর্ষিমণ্ডলের স্পর্শ-পরিত্যাগের

(१) सह मुनिभिः। (२) स्नानादिकमुचितं दिवसव्यापारं, स्नानादिकं दिवसव्यापारं।
(३) क्वचिच्चकारो नास्ति। (४) अधोदत्तः। (५) अम्बरतलं गतः, अस्ताचलगतः।
(६) निहित…। (७)…सार्थपरिजिहीर्षयैव। (८)…चरण…।

रागो रविरम्बरतलादलम्बत (१) (घ) आलोहितांशु-जालं जलशयन-मध्य-गतस्य (२) मधु-रिपो-(३) विगलन्मधुधारमिव नाभि-नलिनं (४) प्रतिमागतम-परार्णवे सूर्य्यमण्डलमलच्यत (५)। (ङ)। विहाय धरातलं (६) उन्मुच्य च कमलिनी-वनानि शकुनय इव दिवसावसाने तरु-शिखरेषु (७) पर्वताग्रेषु च रवि-किरणाः स्थितिमकुर्वत। (च) आलग्न-लोहितातप-(८) च्छेदा मुनिभिरा-लम्बित-लोहित-वल्कला इवाश्रम-तरवः च्चणमदृश्यन्त (९) (छ)। अस्तमुप-

हेतूत्प्रेक्षा, किरणचरणयोर्भेदेऽपि पादशब्दश्लेषेणाभेदाध्यवसायादतिशयोक्तिः लुप्तोपमा च, इत्येतेषामङ्गाङ्गि-भावेन सङ्करः। तथा कपोतपादेन सह जगद्वन्द्यरविकान्तिसादृश्यकल्पनादुपमागतानौचित्यदोषः स च शुक-चञ्चुपाटलेत्यादिपाठेन समाधेयः।

(ङ) आलोहितेति। आलोहितं ईषद्रक्तवर्णं अंशुजालं किरणसमूहो यस्य तत्, विगलन्ती चरन्ती मधुधारा यस्मात् तत्, आलोहितविसारिकिरणजालस्य साम्यप्रतिपादनार्थं विशेषणमेतदिति बोध्यम्। प्रतिमागतं प्रतिबिम्बभावेन पतितं जलशयनमध्यगतस्य जलशय्यामध्यस्थितस्य मधुरिपोर्नारायणस्य नाभिनलिनं नाभिपद्ममिव अपरार्णवे पश्चिमसमुद्रे सूर्य्यमण्डलं रविबिम्बप्रतिबिम्बं अलच्यत लोकैरदृश्यत। अत्रोपमालङ्कारः।

(च) विहायेति। कमलिनीवनानि पद्मवनानि उन्मुच्य परित्यज्य, तेषां प्रियत्वेऽप्यस्तगमनकाले सर्वस्यैव परित्याज्यत्वादिति भावः। तथा च तादृशार्थप्रत्यायनार्थमेव विशेषादुक्तिरियमिति बोध्यम्। शकुनयः पक्षिण इव। स्थितिमवस्थानम्। अत्राप्युपमालङ्कारः।

(छ) आलग्नेति। आलग्नाः संसक्ताः लोहिता रक्तवर्णाः आतपच्छेदा आलोकखण्डा येषु ते तथोक्ताः, अतएव मुनिभिः आलम्बितानि उपरि स्थापितानि लोहितानि रक्तवर्णानि वल्कलानि येषु ते तादृशा इव। अत्र वल्कलालम्बनस्योत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

ইচ্ছাতেই যেন কিরণ (চরণ) সঙ্কুচিত করিয়া, কপোতের চরণের ন্যায় পাটলবর্ণ কান্তিসমন্বিত সূর্য্য, আকাশ হইতে অবতীর্ণ হইলেন। (ঙ) পূর্ব্বকালে ক্ষীরোদসাগরমধ্যে নারায়ণ শয়ন করিলে তাঁহার নাভি হইতে মধুধারাক্ষরণকারী রক্তবর্ণ যে পদ্ম উঠিয়াছিল, জলমধ্যে পতিত তাহার প্রতি-বিম্বের ন্যায়, পশ্চিমসমুদ্রে ঈষৎ রক্তবর্ণ কিরণজালসমন্বিত সূর্য্যমণ্ডলের প্রতিবিম্ব দেখা যাইতে লাগিল। (চ) দিনের সেই শেষ সময়ে পক্ষিগণের ন্যায় সূর্য্যের রশ্মিসমূহ, ভূতল ও পদ্মবন পরি-ত্যাগ করিয়া বৃক্ষ ও পর্ব্বতগণের উপরিভাগে অবস্থান করিতে লাগিল। (ছ) তখন আশ্রমস্থ বৃক্ষসমূহের উপরিভাগে রক্তবর্ণ সূর্য্যালোক পতিত হওয়ায় ক্ষণকাল দেখা যাইতে লাগিল যেন মুনিরা লোহিতবর্ণ বল্কল সকল ঝুলাইয়া রাখিয়াছেন। (জ) ভগবান্ সূর্য্য অস্তমিত হইলে

(१) अवालम्बत। (२) शयनगतस्य। (३) मधुभिदः। (४) इव नलिनं।
(५) आलच्यत, अवैच्यत, अदृश्यत। (६) धरणितलं, अम्बरतलं। (७) तपोवनतरुशिखरेषु।
(८) रक्तातपच्छेदाः, रक्तातपगभस्तिच्छेदाः। (९) तरवः। अशोभन्त, अलच्यन्त।

गते च भगवति सहस्र-दीधितावपरार्णव-तटात् (१) उल्लसन्ती (२) विद्रुम-लतेव पाटला (३) सन्ध्या समदृश्यत। (ज) यस्यामाबध्यमानध्यानं, एकदेश-दुह्यमान-होमधेनु-दुग्धधारा-ध्वनि-मनोहरं, (४) अग्नि-होत्र-वेदि-विप्रकीर्य्यमाण-हरित्-कुशम् (५) ऋषि-कुमारिकाभिरितस्ततो विक्षिप्यमाण-दिग्देवतार्च्चन-वलि-सिक्थकं (६) आश्रमपदमभवत्। (झ) क्वापि विहृत्य दिवावसाने (७) लोहिततारका तपोवनधेनुरिव कपिला परिवर्त्तमाना सन्ध्या मुदितैस्तपोधनैरदृश्यत(८)। (ञ)

(ज) अस्तमिति। सहस्रदीधितौ सूर्य्ये। अपरार्णवतटात् पश्चिमसमुद्रतीरात् उल्लसन्ती उत्तिष्ठन्ती, विद्रुमलतेव लताकारेण तिर्य्यगवस्थिता प्रवाललतेव पाटला श्वेतरक्ता। अत्रोपमालङ्कारः।

(झ) यस्यामिति। यस्यां सन्ध्यायां आबध्यमानं सन्ध्यावन्दनव्याप्रियमाणैर्मुनिभिः क्रियमाणं ध्यानं परमेश्वरे प्रत्ययैकतानता यस्मिन् तत्, "अत्र प्रत्ययैकतानता ध्यान"मिति पातञ्जलसूत्रात्। एकदेशे आश्रमस्यैकपार्श्वे दुह्यमानानां होमधेनूनां या दुग्धधारास्तासां ध्वनिभिः शब्दैः मनोहरं सुन्दरं। अग्निहोत्राणां तदाख्ययागविशेषाणां वेदिषु परिष्कृतभूमिषु विप्रकीर्य्यमाणा होमीयास्तरणार्थं निक्षिप्यमाणाः हरितः पालाशवर्णाः कुशा यस्मिन् तत्। "सायं प्रातर्जुहोति" इति श्रुत्या तदानीं होमस्य विहितत्वादिति भावः। इतस्ततः सर्वासु दिक्षु, विक्षिप्यमाणाः स्थाप्यमानाः, दिग्देवतानां दिक्पालानां अर्च्चनाय पूजनाय वलिसिक्थाः उपहाररूपान्नानि यस्मिन् तत्। "सिक्थ ओदनसम्भवे।" इति विश्वः।

(ञ) क्वापीति। मुदितैर्ध्यानहृष्टैः तपोधनैर्मुनिभिः, क्वापि तृणमयचेत्रादौ अज्ञातदेशे च, विहृत्य पर्य्यटनं कृत्वा अवस्थाय च, दिवावसाने परिवर्त्तमाना प्रत्यागता, लोहिते रक्ते तारके कनीनिकाद्वयं यस्याः सा, अन्यत्र तु लोहितास्तदानीमपि रक्तरविकिरणसम्पर्काद्रक्ताः तारका नक्षत्राणि यस्यां सा, कपिला स्वर्णवर्णा तपोवनधेनुरिव कपिला पिङ्गलवर्णा, सन्ध्या सायंकालः। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

দেখা গেল, পশ্চিম সমুদ্রের তীর হইতে প্রবাললতার ন্যায় সন্ধ্যারাগ উঠিতেছে। (ঝ) যে সময়ে সন্ধ্যাবন্দনে ব্যাপৃত মুনিগণ ধ্যান করিতেছিলেন, আশ্রমের একদিকে হোমধেনু দোহন করিতে থাকায় দুগ্ধধারার শব্দে আশ্রমটি মনোহর হইয়াছিল; মুনিগণ হোম করিবার নিমিত্ত অগ্নিহোত্র যাগের বেদির উপরে হরিদ্বর্ণ কুশ আস্তরণ করিতেছিলেন, এবং ঋষিকন্যারা দিক্-পালগণের পূজার নিমিত্ত সকল দিকে পক্ব অন্ন রাখিতেছিলেন। (ঞ) ধ্যান করিয়া হৃষ্টচিত্তে অবস্থিত মুনিগণ দেখিতে লাগিলেন যে, কোন নূতন তৃণময় ক্ষেত্রে বিচরণ করিয়া, রক্তবর্ণ-নয়নতারা-সমন্বিত এবং স্বর্ণবর্ণ হোমধেনু যেমন দিবাবসানে প্রত্যাগমন করে, সেইরূপ দিনের বেলায় কোন অজ্ঞাত দেশে থাকিয়া, রক্তবর্ণ-নক্ষত্র-সমন্বিত এবং পিঙ্গলবর্ণ সন্ধ্যা,

---

(१) अपरार्णवतलात्। (२) उपसर्पन्ती। (३) आपाटला। (४)...धाराध्वनित-धन्वतरालि-मनोहरं। (५) अग्निवेदिविकीर्य्यमाण...। (६) दैवतावलिसिक्थं।

(७) दिवसावसाने। (८) मुनिभिः।

अचिर-प्रोषिते च सवितरि शोक-विधुरा कमल-मुकुल-कमण्डलु-धारिणी हंस-सितदुकूल-परिधाना मृणाल-धवल-यज्ञोपवीतिनी (१) मधुकर-मण्डलाक्ष-वलयं (२) उद्वहन्ती कमलिनी दिनपति-(३) समागम-व्रतमिवाचरत्। (ट)। अपर-सागराम्भसि पतिते दिवसकरे (४) तत्पतन-वेगोत्थितं (५) अम्भः-शीकर-निकरमिव तारागणमम्बरं (६) आधारयत्। (ठ) अचिराच्च सिद्ध-कन्यका-विक्षिप्त-सन्ध्यार्च्चन-कुसुम-शवलमिव तारकितं (७) वियदराजत। (ड)। क्षणेन

(ट) अचिरेति। सवितरि सूर्य्ये तेजस्विनि नायके च अचिरप्रोषिते अस्तं गते मृते च, शोकेन विधुरा विह्वला, कमलमुकुलमिव कमण्डलुः कमलमुकुलमिव कमण्डलुश्च तं धारयतीति सा तथोक्ता, हंसा एव सितदुकूलं श्वेतवस्त्रं हंसवत् सितदुकूलञ्च परिधानमधोवस्त्रं यस्याः सा, विधवाया रक्तनीलादिवस्त्रधारण-निषेधादिति भावः। मृणालमिव धवलयज्ञोपवीतं मृणालवत् धवलयज्ञोपवीतञ्च अस्या अस्तीति सा। तथा मधुकरमण्डलं भ्रमरसमूह एव अक्षवलयं जपमाला, मधुकरमण्डलवत् अक्षवलयञ्च, तत् उद्वहन्ती धारयन्ती कमलिनी पद्मलता, पद्मिनीसंज्ञकः स्त्रीविशेषश्च दिनपतेः सूर्य्यस्य पत्युश्च समागमाय पुनः सम्मेलनाय व्रतं आचरदिव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः, तथा स्त्रीपुंलिङ्गाभ्यां कमलिनीदिनपत्योर्नायिका-नायकव्यवहारसमा-रोपात् समासोक्तिश्च, इत्यनयोरेकाश्रयानुप्रवेशरूपः सङ्करः। तथा श्लेषेण साध्वी पद्मिनी स्त्रीवेत्युपमालङ्कारो व्यज्यत इति "हिममुक्त-चन्द्ररुचिरः सपद्मक" इत्यादिदर्पणोदाहृतवदलङ्कारेणालङ्कारध्वनिः।

"न विधवा रक्तमाद्यात् परिधानं न पीतमसितञ्चे"ति स्मृतेर्हंससितेत्याद्युक्तं। तथा ब्रह्मवादिनीनां स्त्रीणामुपनयनविधानान्मृणालधवलयज्ञोपवीतिनीत्युक्तिः सङ्गच्छते। तथा च हारीतः—"द्विविधाः स्त्रियो ब्रह्म-वादिन्यः सद्योवध्वश्च। तत्र ब्रह्मवादिनीनामुपनयनमग्नीन्धनं वेदाध्ययनं स्वगृहे च भैक्षचर्य्येति।

(ठ) अपरेति। अम्बरं आकाशं कर्त्तृ, तस्य दिवसकरस्य पतनवेगेन उत्थितं उद्गतं अम्भःशीकर-निकरमिव जलविन्दुसमूहमिव। अत्र जात्युत्प्रेक्षा।

(ड) अचिरादिति। तारका अस्य सञ्जाता इति तारकितं उदितनक्षत्रसमन्वितं वियत् आकाशं कर्त्तृ, सिद्धानां देवयोनिविशेषाणां याः कन्यकास्ताभिर्विक्षिप्तानि यानि सन्ध्यार्च्चनकुसुमानि सन्ध्याकालीय-

দিন অতীত হইলে পুনরায় প্রত্যাগমন করিতেছে। (ট) অল্প সময়মাত্র সূর্য্য অস্তমিত হইলে পদ্মিনী, তাঁহার শোকে অধীর হইয়া পদ্মকলিকারূপ কমণ্ডলু, হংসরূপ শ্বেতবস্ত্র, মৃণালরূপ ধবল যজ্ঞোপবীত এবং ভ্রমরগণরূপ জপের মালা ধারণ করিয়া পুনরায় সূর্য্যের সহিত সম্মিলিত হইবার জন্যই যেন কোন ব্রত আচরণ করিতে লাগিল। (ঠ) সূর্য্য পশ্চিম সমুদ্রের জলে পতিত হইলে আকাশ যেন, তাঁহারই পতনবেগে উত্থিত জলবিন্দুসমূহের ন্যায় নক্ষত্রসমূহ ধারণ করিল। (ড) অচিরকালমধ্যে নক্ষত্র উঠিল, তখন সিদ্ধকন্যারা সন্ধ্যাকালীয় পূজার

(१) यज्ञोपवीता। (२)...मालावलयं। (३) रवि...। (४) दिनकरे, दिवाकरे।
(५) दिवसकरे वेगोत्थितं पवनवेगोत्थितं पतङ्गवेगोत्थितं। (६) अम्बरतलं। (७) सतारं।

चोन्मुखेन मुनिजनेनोर्द्ध-विप्रकीर्णैः प्रणामाञ्जलि सलिलैः प्रक्षाल्यमान (१) इवागलदखिलः सन्ध्यारागः। (ढ)

क्षयमुपगतायाञ्च (२) सन्ध्यायां तद्विनाश-दुःखिता कृष्णाजिनमिव विभावरी तिमिरोद्गममभिनवमवहत्। (ण)। अपहाय (३) मुनि-हृदयानि (४) सर्वमन्यदन्धकारतां तिमिरमनयत्। (त)। क्रमेण च रविरस्तं गत (५) इत्युदन्तमुपलभ्य जात (६) वैराग्यो धौत-दुकूल-वल्कल-धवलाम्बरः सतारान्तः-

---

पूजापुष्पाणि तैः शवलं चित्रं नानावर्णमिव सत् अराजत। तादृशकुसुमानीव नक्षत्राण्यदृश्यन्तेति भावः। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ढ) क्षणेनेति। ऊर्द्धविप्रकीर्णैः ऊर्द्धदिशि निक्षिप्तैः, प्रणामाञ्जलिसलिलैः इष्टदेवतानमस्कारकालीनाञ्जलिपूर्णजलैः प्रक्षाल्यमान इव सन्। सन्ध्यारागः सन्ध्याकालीनो रक्तिमा, अगलत् प्राच्यवत। सन्ध्याकालोऽतीत इति तात्पर्य्यम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ण) क्षयमिति। तस्याः सन्ध्याया विनाशेन क्षयेण दुःखिता शोकातुरा विभावरी रात्रिः, कृष्णाजिनमिव कृष्णवर्णचर्म्मेव अभिनवं तिमिरोद्गमं तमिस्रोदयं उत्पन्नमन्धकारराशिमित्यर्थः। बन्धुजनमरणे कृष्णचिह्नं धार्य्यत इत्याचारः। सख्यन्तरशोककातरा सखीवेति भावः। अत्र तद्विनाशदुःखितेव सतीति प्रतीतेर्भावाभिमानिनी प्रतीयमाना गुणोत्प्रेक्षा उपमा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(त) अपेति। तिमिरं अन्धकारः, मुनीनां हृदयानि अपहाय परित्यज्य तेषु सर्वदा ब्रह्मालोकस्य विद्यमानत्वादिति भावः। अन्यत् सर्वं वस्तु अन्धकारतां स्वावरणेन चाक्षुषप्रत्यक्षाविषयतामित्यर्थः। एतेन तदानीं कृष्णपक्षस्य प्रतिपत् द्वितीया वा आसीदिति प्रतीयते।

(थ) क्रमेणेति। रविः सूर्य्यः कश्चित् परमप्रियवयस्यश्च, अस्तं अस्ताचलं विनाशञ्च गत इति इत्थं उदन्तं वार्त्तां उपलभ्य ज्ञात्वा, जातं वैराग्यं सर्वविषयेषु वैतृष्ण्यं समैः‌ते वश्या नाहमेतेषां वश्य इति वशीकारसंज्ञा यस्य सः "दृष्टानुश्रविकविषयवितृष्णस्य वशीकारसंज्ञा वैराग्य"मिति पातञ्जलसूत्रात्, पक्षे

সময়ে যে পুষ্প নিক্ষেপ করিয়াছিল, তাহাতেই যেন বিচিত্র হইয়া আকাশ শোভা পাইতে লাগিল। (ঢ) ক্ষণকাল পরেই মুনিগণ ঊর্দ্ধমুখ হইয়া ইষ্টদেবতার নমস্কারের সময়ে অঞ্জলিপূর্ণ যে জল ঊর্দ্ধদিকে নিক্ষেপ করিয়াছিলেন, তাহাতেই যেন প্রক্ষালিত হইয়া সন্ধ্যার সমস্ত রক্তিমা আকাশ হইতে পড়িয়া গেল।

(ণ) সন্ধ্যা অতীত হইলে রাত্রি, তাহার অদর্শনে দুঃখিত হইয়াই যেন কৃষ্ণবর্ণ চর্ম্মের ন্যায় নূতন অন্ধকার বহন করিতে লাগিল। (ত) সেই অন্ধকার, মুনিগণের হৃদয় ভিন্ন অন্য সকল পদার্থই আবরণ করিল। (থ) ক্রমে চন্দ্র উদিত হইলেন। তখন দেবর্ষি বশিষ্ঠাদির যে আশ্রমের প্রান্তভাগে অল্প অন্ধকারের ন্যায় তমালবৃক্ষের শ্রেণী আছে, এবং সাত জন ঋষি

---

(१) क्षाल्यमानः। (२) उपगतायां। (३) शापदग्धमिव भयाद्विहायैव। (४) मुनिजनहृदयानि।
(५) उपगतः, उपागतः। (६) समुपजात...।

पुरः, पर्य्यन्त-स्थित-तनु-(१) तिमिर-तमाल-वन-(२) लेखं, सप्तर्षि-मण्डलाध्युषितं, अरुन्धती-सञ्चरण-पवित्रम्, (३) उपहिताषाढ़म्, आलक्ष्यमाणमूलम्, एकान्त-स्थित-चारु-तारकमृगं (४) अमरलोकाश्रममिव गगनतलं (५) अमृत-दीधितिरध्य-तिष्ठत्। (थ)। चन्द्राभरणभूतस्तारका-कपाल-शकलालङ्कृतादम्बरतलात्

जातवैराग्य उत्पन्नविशिष्टरागः। धौतदुकूलवत् प्रक्षालितक्षौमवस्त्रवत् वल्कलमिव धवलं अम्बरं वस्त्रं यस्य सः, अन्यत्र तु धौतदुकूलवल्कलवत् धवलं स्वतेजसा श्वेतं अम्बरं आकाशं यस्य सः, तथा सतारं सज्योतिः अन्तःपुरं हृदयमध्यं यस्य सः ध्याननिष्ठ इत्यर्थः, पक्षे तारा अश्विन्यादीनि नक्षत्राण्येव अन्तःपुराणि अन्तःपुरस्थ-स्त्रियः, तैः सहेति सः। पर्य्यन्ते प्रान्तभागे स्थिता तनुतिमिरवत् अल्पान्धकारवत् तमालवनानां लेखा रेखा यस्मिन् तं, पक्षे पर्य्यन्ते स्थितं तनुतिमिरं स्तोदयाहिरलान्धकारं तमालवनलेखेव यत्र तत्। सप्तानां ऋषीणां येषां केषाञ्चि-न्मुनीनां मण्डलेन गणेन अध्युषितं आश्रितं, पक्षे नक्षत्रात्मकमरीच्यादिसप्तर्षिगणेन अध्युषितं। अरुन्धत्या परमपतिव्रताया वशिष्ठपत्न्या अरुन्धतीनामकनक्षत्रविशेषस्य च सञ्चरणेन विचरणेन पवित्रम्। उपहिता मुनिभिः स्थापिताः आषाढ़ा दण्डा यस्मिन् तं, "आषाढ़ो व्रतिनां दण्डे मासे मलयपर्वते।" इति विश्वः, पक्षे उपहिते सन्निहिते आषाढ़े पूर्वाषाढ़ोत्तराषाढ़े नक्षत्रे यस्मिन् तत्। आलक्ष्यमाणानि दृश्यमानानि मूलानि मुनीनां खाद्यभूतमूलानि यत्र तं, अन्यत्र तु आलक्ष्यमाणं मूलं मूलाख्यनक्षत्रं यस्मिन् तत्। तथा चारू मनोहरे तारके कनीनिकाद्वयं येषां ते तथा, एकान्ते एकपार्श्वे स्थिताः चारुतारकाः मृगा हरिणा यस्मिन् तं, पक्षे एकान्ते स्थितः चारुतारकं सुन्दरनक्षत्रं मृगो मृगशिरा यस्मिन् तत्। "नक्षत्रे नेत्रमध्ये च तारकं तारकापि च।" इति वोपालितः। अमरलोके स्वर्गे य आश्रमो वशिष्ठादितपोवनं तमिव। अमृतदीधि-तिश्चन्द्रः। प्राणोपमबन्धुजनमृत्युवार्त्तामुपेत्यापरो बन्धुजन इवेति भावः। अतएवात्र आश्रमेण सह गगनस्य सादृश्यं वाच्यं तादृशबन्धुजनेन सह चन्द्रस्य सादृश्यन्तु गम्यमित्येकदेशविवर्त्तिन्युपमालङ्कारः श्लेषेण सङ्कीर्य्यते।

যাহাতে বাস করেন, আর সাধ্বী বশিষ্ঠপত্নী অরুন্ধতীর বিচরণে যে আশ্রম পবিত্র হইয়া থাকে এবং যে আশ্রমে পলাশের দণ্ড সকল স্থাপিত আছে, ভোজনের নিমিত্ত ফল মূল দৃষ্টিগোচর হয়, এবং এক প্রান্তে মনোহর নয়নতারাসমন্বিত হরিণগণ বিচরণ করে; সেইরূপ আশ্রমে যেমন কোন প্রণয়ী ব্যক্তি, প্রিয়বয়স্যের মৃত্যুসংবাদ পাইয়া সকল বিষয়ে বৈরাগ্য উৎপন্ন হওয়ায় ধৌত ক্ষৌমবস্ত্রের ন্যায় শ্বেতবর্ণ বল্কল ধারণপূর্ব্বক ধ্যানস্থ হইয়া অবস্থান করে; সেইরূপ চন্দ্র, সূর্য্য অস্তমিত হইয়াছেন, এই বৃত্তান্ত জানিতে পারিয়া বিশেষ উদয়রাগে রঞ্জিত হইয়া তারারূপ স্ত্রীগণের সহিত আকাশে অবস্থান করিতে লাগিলেন; তখন আকাশ পরিষ্কৃত ক্ষৌমবস্ত্র ও বল্কলের ন্যায় ধবলবর্ণ হইল; তমালবৃক্ষশ্রেণীর ন্যায় অল্প অন্ধকার, একপ্রান্তে সরিয়া গেল; সপ্তর্ষিমণ্ডল (নক্ষত্র) উঠিল; অরুন্ধতীনক্ষত্রের উদয়ে আকাশ পবিত্র হইল; চন্দ্রের নিকটে পূর্ব্বাষাঢ়া ও উত্তরাষাঢ়ানক্ষত্র উঠিল; মূলানক্ষত্র দেখা যাইতে লাগিল, এবং

(१)...अन्तःपुरपर्य्यन्तस्थिततनुः...। (२)...वन...। (३)...पूतं। (४)...तारकाम्बरं। (५) गगनं।

त्र्यम्बकोत्तमाङ्गादिव गङ्गा सागरं (१) आपूरयन्ती हंस-धवला धरण्यामपतज्ज्योत्स्ना। (द) हिमकर-सरसि विकच-पुण्डरीक-सिते चन्द्रिका-जलपान-लोभादवतीर्णो निश्चल-मूर्त्तिरमृतपङ्क-लग्न इवाद्दृश्यत (२) हरिणः। (ध)। तिमिर-जलधर-समयापगमानन्तरं (३) अभिनव-सित-सिन्धुवार-(४) कुसुम-पाण्डुरैरर्णवागतैरगाह्यन्त (५) हंसैरिव कुमुद-सरांसि चन्द्रपादैः। (न) विगलित-

(द) त्र्यम्बकेति। सागरं आपूरयन्ती स्वोदयेन स्वजलेन च समुद्रं परिपूर्णं कुर्वती, चन्द्रोदये समुद्रवृद्धेः प्रसिद्धत्वात्, गङ्गापक्षे तु आपूरयन्तीति भविष्यत्सामीप्ये वर्त्तमाना आपूरयिष्यन्तीत्यर्थः। हंसवद्धवला हंसैन धवला च, ज्योत्स्ना, चन्द्र एवाभरणं तद्बिभर्त्तीति तस्मात्, तारका नक्षत्राणि कपालशकलानीव नरशिरोऽस्थिखण्डानीव तैरलङ्कृतात्, अम्बरतलादाकाशात् त्र्यम्बकस्य शिवस्य उत्तमाङ्गान्मस्तकात् गङ्गा इव धरण्यामपतत्। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(ध) हिमेति। विकचपुण्डरीकवत् प्रस्फुटश्वेतपद्मवत् सिते श्वेतवर्णे, तैः सिते च, हिमकरश्चन्द्र एव सरः सरोवरस्तस्मिन्, चन्द्रिका ज्योत्स्नैव जलं तस्य पानलोभात् अवतीर्णो मध्यगतः, हरिणश्चन्द्राङ्कगतचिह्नरूपो मृगः, अमृतं चन्द्रसुधैव पङ्कः कर्दमः तत्र लग्नो दृढ़संसक्त इव सन् निश्चलमूर्त्तिः अलक्ष्यत लोकैरदृश्यत। अपरोऽपि हरिणः सरसि पानीयं पातुमवतीर्णः पङ्कमग्नो निश्चलस्तिष्ठति। अत्र चन्द्रिकायाः पानासम्भवात् अमृतस्य तरलतया तत्र तादृशलग्नत्वासम्भवाच्च स्वाङ्गरूपकमेवालङ्कारो न तु लुप्तोपमा, क्रियोत्प्रेक्षा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(न) तिमिरेति। अभिनवानि यानि सितानि श्वेतानि सिन्धुवारकुसुमानि निर्गुण्डीपुष्पाणि तद्वत् पाण्डुरैः, तथा अर्णवेभ्यः समुद्रेभ्यः आगतैः, पक्षे समुद्रानपि प्राप्तैः, हंसैरिव चन्द्रस्य पादैः किरणैः तिमिरमन्धकारो जलधरसमयो वर्षाकाल इव कृष्णत्वसाम्यात् तस्य अपगमानन्तरं निवृत्तेः परं कुमुदसरांसि कैरवमयाः सरोवरा अगाह्यन्त आलोड्यन्त अस्पृश्यन्त च। हंसा हि शरत्समये सागरादागत्य सरसि विचरन्तीति स्वभावः। अत्र लुप्तोपमायुगलसङ्कीर्णोपमालङ्कारः।

মনোহর মৃগশিরা নক্ষত্রও এক প্রান্তে উদয় পাইল। (দ) পূর্ব্বকালে সমুদ্রপূরণকারিণী এবং হংসগণের বিচরণে ধবলবর্ণা গঙ্গা যেমন চন্দ্রকলালঙ্কৃত ও নরকোপালশোভিত মহাদেবের মস্তক হইতে ভূতলে পতিত হইয়াছিলেন; তেমন সমুদ্রের পূর্ণতাকারিণী ও হংসের ন্যায় ধবলবর্ণা জ্যোৎস্না, চন্দ্র ও নক্ষত্রগণে পরিশোভিত আকাশ হইতে ভূতলে পতিত হইতে লাগিল। (ধ) প্রস্ফুটিত শ্বেতপদ্মের ন্যায় শ্বেতবর্ণ চন্দ্ররূপ সরোবরে জ্যোৎস্নারূপ জলপান করিবার লোভে অবতীর্ণ হইয়া একটি হরিণ, তাহার অমৃতরূপ কর্দ্দমে মগ্ন হইয়াই যেন নিশ্চলদেহ হইয়া রহিয়াছে বলিয়া দেখা যাইতে লাগিল। (ন) নূতন নিসিন্দাফুলের মত শ্বেতবর্ণ এবং সমুদ্র হইতে আগত হংসগণের ন্যায় চন্দ্রের কিরণসমূহ, বর্ষাকালের ন্যায় অন্ধকাররাশি দূরীভূত হইলে কুমুদ-(সাপলা) পরিপূর্ণ সরোবরসমূহে পতিত হইতে লাগিল।

(१) सागरान्। (२) आलक्ष्यत। (३) समयानन्तरं। (४)...सिन्दुवार...।
(५) अवागाह्यन्त, अगाह्यन्त।

सकलोदयरागं रजनिकर-विम्बमम्बरापगावगाह-धौत-सिन्दूरमैरावत-कुम्भस्थल-मिव तत्क्षणमलक्ष्यत। (प)। शनैः शनैश्च दूरोदिते भगवति हिमसृति (१) सुधा-धूलि-पटलेनेव धवलीकृते चन्द्रातपेन (२) जगति, अवश्यायजलविन्दु-(३) मन्दगतिषु विघटमान-कुमुद-वन-(४) कषाय-परिमलेषु समुपोढ़-निद्रा-भरालस-तारकैरन्योन्य-ग्रथित-पक्ष्मपुटैरारब्ध-रोमन्थ-मन्थर-मुखैः सुखासीनैराश्रममृगैर-भिनन्दितागमनेषु प्रवहत्सु (५) निशामुख-समीरणेषु, (६) अर्द्धयाममात्राव-शिष्टतायां विभावर्य्यां, हारीतः कृताहारं मामादाय सर्वैस्तैः सह मुनिभिः (७)

(प) विगलितेति। विगलितः क्रमेणोर्द्ध गमनादपसृतः, उदयराग उदयकालीनो रक्तिमा यस्य तत्, रजनिकरविम्बं चन्द्रमण्डलं अम्बरापगा आकाशनदी मन्दाकिनी अम्बररूपापगा च तस्यां अवगाहेन मज्जनेन धौतं प्रक्षालितं सिन्दूरं यस्य तत् तथोक्तं, ऐरावतस्य श्वेतवर्णेन्द्रहस्तिनः कुम्भस्थलमिव तत्क्षणं लोकैर-लक्ष्यत। अत्रोपमालङ्कारः।

(फ) शनैरिति। एवम्भूतसमये हारीतः कृताहारं मामादाय पितरं जावालिमुपाचैति वक्ष्यमाणे-नान्वयः। किञ्चेति चार्थः। हिमसृति तुषारवर्षिणि चन्द्रे दूरोदिते सति। तथा जगति भुवने, सुधाया विलेपनद्रव्यविशेषस्य धूलिपटलेनेव रेणुसमूहेनेव चन्द्रस्य आतपेन आलोकेन धवलीकृते सति। अत्रोपमा-लङ्कारः। अवश्यायजलविन्दुभिः शिशिरजलविन्दुवहनैरित्यर्थः मन्दा गतिर्येषां तेषु। इत्यादीनि सप्तम्यन्तपदानि वक्ष्यमाणनिशामुखसमीरणेष्वित्यस्य विशेषणानि। विघटमानस्य प्रस्फुटतः कुमुदवनस्य कषायः सुरभिः परिमलो विमर्द्दगन्धो येषु तादृशेषु। तथा समुपोढ़ेन उपस्थितेन निद्राभरेण निद्रातिशयेन अलसा निस्पन्दाः तारकाः कनीनिका येषां तैः, अन्योन्यं परस्परं ग्रथितानि नयनमुद्रणात् दृढ़संलग्नानि पक्ष्मपुटानि नेत्रलोमानि येषां

(প) উদয়কালের সমস্ত রক্তিমা দূরীভূত হইলে চন্দ্রমণ্ডলটি, মন্দাকিনীর জলে অবগাহন করায় মস্তকের সিন্দুর প্রক্ষালিত হইয়া গেলে ঐরাবত হস্তীর কুম্ভস্থলের ন্যায় সেই সময়ে দেখা যাইতে লাগিল। (ফ) ভগবান্ চন্দ্র, ধীরে ধীরে আকাশের অনেক দূরে উঠিলেন; তখন সুধানামক বিলেপনদ্রব্যের চূর্ণসমূহের ন্যায় (সাদা পাউডারের মত) চন্দ্রের আলোক পৃথিবী-মণ্ডলকে ধবলবর্ণ করিল; প্রদোষসময়ের শীতল সমীরণ, শিশিরবিন্দু বহন করিয়া, বিকসিত কুমুদবনের সৌরভ লইয়া, মন্দগতিতে বহিত হইতে লাগিল; তখন তপোবনের হরিণগণ, সুখে উপবিষ্ট হইয়া মনে মনে সেই বায়ুর আগমনের প্রশংসা করিতে লাগিল; কারণ— সেই বায়ুর সংস্পর্শে তাহাদের অত্যন্ত নিদ্রার আবেশ হওয়ায় নয়নের তারা নিস্পন্দ হইয়া আসিতেছিল; নয়ন মুদ্রিত করায় তাহার লোমগুলি পরস্পর সংলগ্ন হইতেছিল; এই অবস্থায়

(१) हिमततिस्तृति, हिमदीधितौ। (२) क्वचित् 'चन्द्रातपेन' इति पाठो नास्ति।
(३)...विन्दुपतनशीतेषु। (४)...षण्ड...। (५) प्रवात्सु।
(६) समीरेषु। (७) तैर्महामुनिभिः।

उपसृत्य चन्द्रातपोद्भासिनि तपोवनैकदेशे वेत्रासने सुखोपविष्टं (१) अनतिदूरवर्त्तिना जालपादनाम्ना शिष्येण दर्भ-पवित्र-धवित्र-पाणिना (२) मन्दमन्दं (३) उपवीज्यमानं पितरमवोचत् (४) (फ) "तात ! (५) सकलेयमाश्चर्य्य-श्रवण-कुतूहलाकलित-हृदया (६) समुपस्थिता तापस-परिषदाबद्ध-मण्डला प्रतीक्षते (७) व्यपनीत-श्रमश्च कृतोऽयं पतत्रि-पोतः, तदावेद्यतां किमनेन कृतमन्यस्मिन् जन्मनि को वायमभूद्भविष्यति वेति" (८)। एवमुक्तस्तु (९) स महामुनिरग्रतः स्थितं

तेः, तथा आरब्धेषु पूर्वमुपक्रान्तेषु रोमन्थेषु उद्गीर्य्य चर्वितचर्वणेषु मन्थराणि निद्रावेशवशादलसानि मुखानि येषां तैः स्थित्वा स्थित्वा रोमन्थं कुर्वाणैरित्यर्थः, सुखासीनैः सुखेनोपविष्टैः आश्रममृगैः, अभिनन्दितं स्पर्श-सुखोपलम्भात् प्रशंसितं आगमनं येषां तेषु. निशासुखसमीरणेषु प्रदोषवायुषु, प्रवहत्सु सञ्चलत्सु सत्सु। तथा विभावर्य्यां रात्रौ, अर्द्धयाममात्रेण अवखण्डितायां न्यूनतां गतायां सत्यां दण्डचतुष्टये अतीत इत्यर्थः। चन्द्रस्य आतपेन आलोकेन ज्योत्स्नया उद्भासते विशेषेण दीप्यत इति तस्मिन्। वेत्रासने वेतसनिर्म्मितासने। दर्भवत् कुशवत् पवित्रं, धवित्रं मृगचर्म्मनिर्म्मितं व्यजनं पाणौ यस्य तेन।

(फ) तातेति। आश्चर्य्यस्य वृत्तान्तस्य यत् श्रवणकुतूहलं तेन आकलितं व्याप्तं हृदयं यस्याः सा। आबद्धं विहितं मण्डलं वर्त्तुलाकारश्रेणीभावेनावस्थानं यया सा तादृशी सती प्रतीक्षते भवद्वाक्यारम्भमपेक्षते।

চর্ব্বিত চর্ব্বণ করিতে সেই হরিণগণের মুখ ক্রমে নিশ্চল হইয়া আসিল ; এ দিকে হারীত আমাকে আহার করাইলেন. রাত্রির প্রথম যামার্দ্ধও (চারি দণ্ড) অতীত হইল ; তখন হারীত আমাকে লইয়া সেই সকল মুনিগণের সহিত, পিতা জাবালির নিকট উপস্থিত হইলেন, তখন মহর্ষি জাবালি, চন্দ্রের আলোকে দীপ্যমান তপোবনের এক দিকে বেত্রাসনে সুখে উপবেশন করিয়াছিলেন, অনতিদূরবর্ত্তী জালপাদনামে একজন শিষ্য কুশের ন্যায় পবিত্র মৃগচর্ম্ম-নির্ম্মিত ব্যজন হস্তে করিয়া গুরুর প্রতি মন্দ মন্দ বায়ুসঞ্চালন করিতেছিলেন ; এই অবস্থায় কুমার হারীত পিতাকে বলিলেন—(ব) "পিতঃ ! এই সকল তপস্বিগণ আশ্চর্য্য বৃত্তান্ত শ্রবণ করিবার নিমিত্ত কৌতুকপূর্ণচিত্ত হইয়া উপস্থিত হইয়াছেন এবং মণ্ডলাকারে অবস্থানপূর্ব্বক আপনার কথারম্ভের প্রতীক্ষা করিতেছেন ; এ দিকে এই পক্ষিশাবকটিকেও আহারাদি করাইয়া শ্রান্তিহীন করা হইয়াছে ; অতএব অনুগ্রহপূর্ব্বক বলুন—এ, পূর্ব্বজন্মে কি করিয়াছিল এবং কি ছিল, পরেই বা কি হইবে ?' হারীত এইরূপ বলিলে সেই মহর্ষি জাবালি, সম্মুখস্থিত আমার প্রতি দৃষ্টিপাত করিয়া এবং মুনিগণ যে শ্রবণ করিবার নিমিত্ত

---

(१) वेत्रासनोपविष्टं। (२) नातिदूरवर्त्तिना...पवित्रपाणिना। (३) मन्दं। (४) उवाच।
(५) हे तात ! । (६)...आकुलितहृदया। (७) प्रतीक्ष्यते। (८) यदनेन कृतमपरस्मिन् जन्मनि कोऽयमभूद्भविष्यति चेति। (९ इत्येवमुक्तस्तु।

मामवलोक्य तांश्च सर्वानेकाग्रान् श्रवणतत्परान् (१) मुनीन् बुद्ध्वा शनैः शनैरब्रवीत् (२)—"श्रूयतां यदि कुतूहलम् (३)।" (ब)

अयञ्च पतत्रिपोतः पक्षिशावकः, व्यपनीत आहारानुष्ठापनादिना दूरीकृतः श्रमः क्लान्तिर्यस्य सः। स महामुनिर्जाबालिः।

भूयसीं दधदलङ्कृतिश्रियं कोमलध्वनिमनोहरं परम्।
भावभङ्गिमधुरं सुधाधरं पीयतां रसविदा कथामुखम्॥

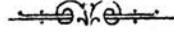
इति श्रीहरिदाससिद्धान्तवागीशविरचितायां कादम्बरीटीकायां कल्पलतासमाख्यायां
पूर्वभागे कथामुखविवरणम्॥ ०॥

একাগ্রচিত্ত ও উৎসুক হইয়াছেন, তাহা বুঝিতে পারিয়া ধীরে ধীরে বলিলেন,—"শোন যদি তোমাদের কৌতূহল জন্মিয়া থাকে।"

---

(१) श्रवणपरान्। (२) शनैरब्रवीत्। (३) कौतूहलम्।

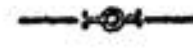
कादम्बरी।



अथ कथारम्भः।



उज्जयिनीवर्णना।



अस्ति सकल त्रिभुवन-ललामभूता, प्रसव-भूमिरिव कृतयुगस्य, आत्मनिवासोचिता भगवता (१) महाकालाभिधानेन भुवनत्रय-सर्ग-स्थिति-संहार-कारिणा(२) प्रमथ-नाथेनापरेव (३) पृथिवी समुत्पादिता, (क) द्वितीय-पृथिवी-शङ्कया च जलनिधिनेव रसातल-गभीरेण (४) परिखा-(५) वलयेन परिवृता, (ख) पशु-

---

(क) अस्तीति। अवन्तीषु उज्जयिनी नाम नगरी अस्तीति बहुदूरवर्त्तिना कर्त्तृपदेनान्वयः। अत्र स्त्रियां प्रथमान्तपदानि उज्जयिनीत्यस्य विशेषणानि। सकले त्रिभुवने ललामभूता प्रधानस्वरूपा। "ललामवत् ललामाश्वे चिह्ने ध्वजपताकयोः। रम्ये प्रधाने भूषायां पुण्ड्रे पुच्छप्रभावयोः।" इति हेमः। कृतयुगस्य सत्ययुगस्य प्रसवभूमिरिव उत्पत्तिस्थानमिव पूर्णावयवधर्म्मवत्त्वादिति भावः। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः। महाकालाभिधानेन महाकालनाम्ना। तस्य च कालप्रियनाथ इति सुवर्णबिन्दुरिति च नामान्तरद्वयं उत्तररामचरितान्मालतीमाधवाच्च विज्ञायते। सर्गः सृष्टिः। प्रमथनाथेन गणाधीश्वरेण शिवेन, आत्मनिवासोचिता आयतत्वात् पूतत्वाच्च स्वावस्थानयोग्या इति कृत्वा उत्पादिता अपरा पृथिवीव। अत्र द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ख) द्वितीयेति। द्वितीयायाः पृथिव्याः शङ्कया भ्रमेण च जलनिधिनेव समुद्रेणेव, रसातलं यावद्गभीरेण निम्नेन परिखावलयेन परिवृता परिवेष्टिता। अत्र जात्युत्प्रेक्षा, तथा रसातलं यावद्गभीरत्वासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिस्तयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ক) অবন্তীদেশে, সমস্ত জগতের মধ্যে উৎকৃষ্ট এবং সত্যযুগের উৎপত্তিস্থানের ন্যায় উজ্জয়িনী নামে একটি নগরী আছে। সমগ্র জগতের সৃষ্টি, স্থিতি ও প্রলয়ের কারণ মহাকাল-নামধারী প্রমথাধিপতি ভগবান্ মহাদেব, আপনার বাসের উপযোগী করিয়া, দ্বিতীয় পৃথিবীর ন্যায় যেন সেই নগরটি সৃষ্টি করিয়াছিলেন। (খ) অত্যন্ত গভীর পরিখামণ্ডলে সেই নগরী পরিবেষ্টিত রহিয়াছে; তাহাতে বোধ হয় যেন, সেই নগরীকে দ্বিতীয় পৃথিবী মনে করিয়া

---

(१) क्वचित् 'भगवता' इति पदं नास्ति। (२)...कारिणा। (३)...नाथेनैवापरेव।
(४)...गम्भीरेण। (५) जलपरिखा...।

पति-निवास-प्रीत्या च गगन-परिसरोल्लेखि-(१) शिखरमालेन कैलास-गिरिणेव सुधासितेन प्राकार-मण्डलेन परिगता, (ग) प्रकट-शङ्ख-शुक्ति-मुक्ता-प्रवाल-मरकत-मणिराशिभिश्चामीकर-चूर्ण-सिकता-(२) निकर-निचितै-(३) रायामिभिरगस्त्य-परिपीत-सलिलैः सागरैरिव महाविपणिपथैरुपशोभिता, (घ) सुरासुर-सिद्ध-गन्धर्व-विद्याधरोरगाध्यासिताभिश्चित्रशालाभिरनवरतोत्सवावलोकन-(४) कुतूहलादम्बरतलादवतीर्णाभिर्दिव्यविमानपङ्क्तिभिरिवालङ्कृता, (ङ) मथनोत्थ-

(ग) पशुपतीति। पशुपतेर्महाकालाभिधानस्य शिवस्य निवासेनावस्थानेन या प्रीतिस्तयैव स्थानविषयामोदेनेव, गगनपरिसरस्य आकाशपर्यन्तभुवः उल्लेखिनी घर्षणेनावदारिणी संस्पर्शिनीत्यर्थः शिखरमाला शृङ्गश्रेणिः उपरिभागश्रेणिश्च यस्य तेन, तथा सुधावत् सितेन सुधाभिश्चूर्णविलेपनैः सितेन शुभ्रेण च, कैलासगिरिणेव प्राकारमण्डलेन वप्रोपरि प्राचीरवलयेन, परिगता परिवेष्टिता। अत्र द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः।

(घ) प्रकटेति। प्रकटाः प्रकाशिताः, शङ्खानां शुक्तीनां मुक्तानां प्रवालानां मरकतमणीनाञ्च राशयः पुञ्जा येषु तैः, चामीकरचूर्णान्येव चूर्णितसुवर्णरेणव एव सिकता वालुकाः तासां निकरेण समूहेन निचिताः शोभाविशेषसम्पादनाय समर्पणात् व्याप्तास्तैः, आयामिभिर्दीर्घैः, अतएव अगस्त्येन मुनिना परिपीतानि सलिलानि जलानि येषां तैः सलिलशून्यतया प्रकटितनानाविधरत्नैरित्यर्थः सागरैरिव स्थितैः, महान्तो हृद्यन्ती ये विपणीनामापणश्रेण्याः पन्थानस्तैरुपशोभिता। अत्र लोकातिशयसम्पत्तिवर्णनादुदात्तालङ्कार उपमा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। तथा तेषु तेष्वापणेषु शङ्खादीनां प्रकटत्वेऽपि तत्सन्निहितपथेषु तत्प्रकटत्वमुपचारात्।

(ङ) सुरेति। सुरैर्देवैः असुरैर्दैत्यदानवैः सिद्धैर्देवयोनिविशेषैः गन्धर्वैर्विद्याधरैः उरगैर्नागैश्च, चित्रशालापक्षे तत्तच्चित्रैः अध्यासिताभिराश्रिताभिः, चित्रशालाभिरालेख्यभवनैः, अनवरत अविश्रान्तो य उत्सवस्तस्यावलोकनकुतूहलाद्धेतोः, अम्बरतलादाकाशात् अवतीर्णाभिर्भूतलमागताभिः दिव्यविमानपङ्क्तिभिरिव स्वर्गीयव्योमयानश्रेणीभिरिव स्थिताभिरलङ्कृता। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

সমুদ্র আসিয়া পরিবেষ্টন করিয়া রহিয়াছে। (গ) অত্যন্ত উচ্চ ও চূর্ণবিলেপনে শুভ্রবর্ণ প্রাচীরমণ্ডলেও সেই নগরী পরিবেষ্টিত হইয়াছে; তাহাতেও প্রতীতি হয় যে, 'স্বয়ং পশুপতি মহাকালরূপে এখানে বাস করিতেছেন', এই আমোদেই যেন গগনস্পর্শী শৃঙ্গমালাসমন্বিত কৈলাসপর্ব্বত আসিয়া পরিবেষ্টন করিয়া রহিয়াছে; (ঘ) অগস্ত্য সমস্ত জল পান করিয়া ফেলিলে শুষ্ক সাগরসমূহের ন্যায় বহুদূরবিস্তৃত ও প্রকাণ্ড রথ্যাসমূহ সেই রাজধানীর শোভা জন্মাইতেছে, স্বর্ণ চূর্ণ করিয়া সেই বালুকারাশিদ্বারা সেই রথ্যাসমূহ নির্ম্মিত হইয়াছে এবং তাহার দুই দিকে সারি সারি দোকান; তাহাতে শঙ্খ, ঝিনুক, মুক্তা, প্রবাল ও মরকত প্রভৃতি রাশি রাশি মণি সাজান আছে; (ঙ) অবিশ্রান্ত উৎসব দর্শন করিবার নিমিত্ত

(१) गगनतलोल्लेखि…। (२)…वालुका…। (३)…रचितैः। (४) अविरतोत्सवप्रमदावलोकन…।

दुग्ध-धवलित-(१) मन्दर-द्युतिभिः कनकमयामल-कलश-शिखरैरनिल-दोलायित-सित-ध्वजैरुपरि-पतदभ्रगङ्गैरिव तुषार गिरि-शिखरैरमरमन्दिरैर्विराजित-शृङ्गाटका, (च) सुधावेदिकोपशोभितोदपानैरनवरत-चलित-जल-घटी-यन्त्र-सिच्यमान-हरितोपवनान्धकारैः केतकी-धूलि-धूसरैरुपशल्यकैरुपशोभिता, (२) (छ) मद-मुखर-मधुकर-पटलान्धकारित-(३) निष्कुटा, (ज) स्फुरदुपवन-लता-

(च) मथनेति। मथने क्षीरोदसमुद्रमन्थनवेलायां उद्गतैर्मन्थनवेगेनोत्थितैः दुग्धैः सप्तसागरस्थपयोभिः धवलितः शुक्लीकृतः यो मन्दरः मन्थनदण्डीकृतो मन्दरपर्वतस्तस्य द्युतिरिव द्युतिः कान्तिर्येषां तैः, कनकमयाः सुवर्णनिर्म्मिताः अमलाः स्वच्छाः कलशाः शिखरेषु उपरिभागेषु येषां तैः, तथा अनिलेन वायुना दोलायिताः सञ्चालिताः सितध्वजाः शुभ्रपताका येषु तैः, "चिह्नशीफपताकासु खट्वाङ्गेऽपि ध्वजोऽस्त्रिया"मिति त्रिकाण्डशेषः, अतएव पतन्ती अभ्रगङ्गा आकाशगङ्गा येषु तैः, तुषारगिरिशिखरैः हिमाद्रिशृङ्गैरिव, अमरमन्दिरैः उच्चैर्देवगृहैः, विराजितानि शोभितानि शृङ्गाटकानि चतुष्पथानि यस्यां सा "शृङ्गाटकचतुष्पथे" इत्यमरः। अत्र लुप्तोपमोपमयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(छ) सुधेति। सुधावेदिकाभिः पिपासुजनोपवेशनार्थाभिः चूर्णलिप्तपरिष्कृतभूमिभिः उपशोभितानि उदपानानि कूपा येषु तैः, "पुंस्येवान्धुप्रहि कूप उदपानन्तु पुंसि वा।" इत्यमरः। अनवरतं चलितैर्घूर्णितैः जलघटीयन्त्रैः जलकुम्भनिर्म्मितयन्त्रैः सिच्यमानानि यानि हरितानि हरिद्वर्णानि उपवनानि तान्येव निविडश्यामत्वादन्धकारा येषु तैः, तथा केतकीनां कुसुमानां धूलिभिः परागैः धूसराणि धूम्रवर्णानि तैः, उपशल्यकैः ग्रामान्तैः उपशोभिता। "ग्रामान्त उपशल्यं स्या"दित्यमरः।

(ज) मदेति। मदेन मधुपानजनितमत्ततया मुखरं शब्दायमानं यत् मधुकरपटलं भ्रमरसमूहस्तेन अन्धकारिता अन्धकारविशिष्टीकृताः निष्कुटा भवनसमीपस्थोपवनानि यस्यां सा। एतेन नानाविधकुसुमशोभातिशयः सूचितः। "गृहारामास्तु निष्कुटा" इत्यमरः।

কৌতুকবশতঃ আকাশ হইতে ভূতলে অবতীর্ণ দেবগণ প্রভৃতির স্বর্গীয় বিমানশ্রেণীর ন্যায় অসংখ্য চিত্রশালাতেও সেই রাজধানী অলঙ্কৃত হইয়াছে, কারণ—সেই চিত্রশালাসমূহের মধ্যে দেব, দানব, সিদ্ধ, গন্ধর্ব্ব, বিদ্যাধর ও নাগগণের নানাবিধ চিত্র রহিয়াছে; (চ) প্রত্যেক চতুষ্পথের (চৌরঙ্গীর) নিকটে অত্যন্ত উচ্চদেবতার মন্দির আছে; সেগুলি, ক্ষীরোদসাগরমন্থনের সময় উদ্বেলিত দুগ্ধে ধবলীকৃত মন্দরপর্ব্বতের ন্যায় শুভ্রকান্তি এবং তাহার উপরে সুবর্ণময় নির্ম্মল কলশ স্থাপিত আছে, বায়ুবেগে তাহার শ্বেতপতাকা সকল আন্দোলিত হইতে থাকে, তাহাতে উপরে আকাশগঙ্গা পতিত হইতে লাগিলে হিমালয়ের শৃঙ্গসকলের ন্যায় সেই দেবমন্দিরগুলি দৃষ্টিগোচর হইয়া থাকে; (ছ) নগরের প্রান্তভাগ কেতকীকুসুমের রেণুতে ধূসরবর্ণ হইয়া যায় এবং সেই স্থানের উদ্যানসমূহ, অবিশ্রান্ত ঘূর্ণমান জলযন্ত্রের জলে সিক্ত হইতে

(१) मन्थनोद्धतदुग्धसिन्धुधवल...। (२) विभूषिता। (३)...कुलान्धकारित...।

कुसुम-परिमल-सुरभि-समीरणा, (झ) रणित-सौभाग्यघण्टैरालोहिता-ंशुकपताकैराबद्ध-रक्तचामरैर्विद्रुममयैः प्रतिभवनं (१) उच्छ्रितैर्मकराङ्कितैः (२) मदन-यष्टिकेतुभिः (३) प्रकाशित-मकरध्वज-पूजा, (ञ) सतत-प्रवृत्ताध्ययन-ध्वनि-धौत-कल्मषा, (ट) स्तिमित-मुरज-रव-गम्भीर-गर्जितेषु सलिल-शीकरा-सार-रचित-(४) दुर्दिनेषु पर्य्यन्त-रवि-किरण-रचित-(५) सुर-चाप-चारुषु धारा-गृहेषु मत्त-मयूर-मण्डलै-(६) र्मण्डलीकृत-शिखण्डैस्ताण्डवव्यसनिभिराबध्यमान-

(झ) स्फुरदिति। स्फुरन्तीनां वायुभरेण स्पन्दमानानां उपवनलतानां यानि कुसुमानि तेषां परिमलेन विमर्द्दगन्धेन सुरभिर्घ्राणतर्पणः समीरणो वायुर्यस्यां सा।

(ञ) रणितेति। रणिताः शब्दिताः सौभाग्यघण्टाः सौभाग्यसूचिका घण्टा येषु तैः, आलोहिता सम्यग्-रक्ता अंशुकपताका येषु तैः, आबद्धानि रक्तचामराणि येषु तैः, विद्रुममयैः प्रवालप्रचुरैः, मकराङ्कितैर्मदनस्य मकरध्वजत्वान्मकराकारपुत्तलकचिह्नितैः, प्रतिभवनं प्रत्येकवाटेषु उच्छ्रितैरुत्तोलितैः मदनयष्टिकेतुभिः मदन-द्रुमनिर्म्मितकन्दर्पध्वजैः प्रकाशिता सूचिता मकरध्वजस्य कामस्य पूजा यस्यां सा, तत्पूजायां तादृशध्वजो-त्तोलनस्य शास्त्रीयत्वादिति भावः।

(ट) सततेति। सततप्रवृत्तैर्निरन्तरोत्थितैः अध्ययनध्वनिभिर्वेदपाठशब्दैः धौतमपसारितं कल्मषं पापं यस्याः सा। एतेन सा नगरी न केवलं भोगविलासाश्रयः, अपि तु वेदादिशास्त्रानुशीलनस्थानमपीति सूचितम्।

(ठ) स्तिमितेति। स्तिमितः समन्ततो भित्तिनिरोधेन निश्चलः मुरजरवो मृदङ्गध्वनिः गम्भीरगर्जितं मन्द्रमेघस्तनितमिव येषु तेषु, सलिलशीकराणां जलयन्त्रनिःसृतजलबिन्दूनां आसारेण धारासम्पातेन रचितं कृतं दुर्दिनं मेघाच्छन्नदिनं येषु तेषु, तथा पर्य्यन्तैः काचकपाटादिषु निपतितैः रविकिरणैः रचितं कृतं

থাকে এবং সেখানে শুভ্রবর্ণ বেদিতে পরিবেষ্টিত বহুতর কূপ আছে ; (জ) বাসভবনের নিকটে বহুতর উদ্যান আছে, ভ্রমরগণ মধুপানে মত্ত হইয়া 'গুন্ গুন্' রব করতঃ সেই উদ্যানসমূহ অন্ধকার করিয়া অবস্থান করে ; (ঝ) উপবনের লতাগুলি বায়ুভরে দুলিতে থাকে, তখন কুসুমসৌরভে বায়ু বড়ই তৃপ্তিকর হয় ; (ঞ) প্রত্যেক বাটীতে প্রবালমালাবেষ্টিত মকরচিহ্নে চিহ্নিত মদনধ্বজ উত্তোলিত হয়, বায়ুভরে তাহার ঘণ্টাগুলি শব্দ করে, রক্ত পতাকা দুলিতে থাকে এবং রক্ত চামর আন্দোলিত হয়, তাহাতে সেই সকল বাটীতে যে কামদেবের পূজা হইয়া গিয়াছে, তাহা সেই সকল ধ্বজগুলিই প্রকাশ করে ; (ট) সর্ব্বদা বেদপাঠের শব্দে পাপ বিনষ্ট হইতেছে ; (ঠ) জলযন্ত্রের গৃহমধ্যে মত্ত ময়ূরগণ পুচ্ছদেশ মণ্ডলাকার করিয়া, নৃত্য করিতে প্রবৃত্ত হইয়া কেকারবে (ময়ূরের শব্দের নাম—'কেকা') কোলাহল করিতেছে ; কারণ—সেই জলযন্ত্রের গৃহমধ্যে গম্ভীর মেঘগর্জ্জনের ন্যায় মৃদঙ্গের শব্দ, ভিত্তির আবরণে

(१) प्रतिमन्दिरं। (२) मकराङ्कैः। (३) मदनयष्टिकेतुभिः।
(४)...सारकरचित...। (५)...दिवसकरकिरणस्तबकरचित...। (६) मत्तमयूरैः।

केकारव-कोलाहला, (ठ) विकच-कुवलय-कान्तैरुत्फुल्ल-कुमुद-(१) धवलोदरै-रनिमिष-दर्शन-रमणीयैराखण्डल-लोचनैरिव सहस्र-संख्यैरुद्भासिता सरोभिः, (ड) अविरल-कदली-वन-कलिताभिरमृतफेनपुञ्ज-पाण्डुराभिर्दिग्भि दिग्भि (२) दन्त-वलभिकाभिर्धवलीकृता, (ढ) यौवन-मदमत्त-मालवी-कुच-कलस-क्षुभित-सलिलया भगवतो महाकालस्य शिरसि सुर-सरितमालोक्य समुपजातेर्ष्ययेव

यत् सुरचापमिन्द्रधनुस्तेन चारुषु, धारागृहेषु जलयन्त्रभवनेषु, ताण्डवव्यसनिभिर्नृत्यासक्तैः अतएव मण्डली-कृतशिखण्डैर्लीलाकारीकृतपिच्छैः मत्तमयूरमण्डलैः, आबध्यमानः क्रियमाणः केकारवात्मकः कोलाहलो यस्यां सा। "केका वाणी मयूरस्य" इत्यमरः। अत्र स्तिमितेत्यादिविशेषणे लुप्तोपमा, तथा मण्डलैरित्यादौ वृत्त्यनुप्रास इत्युभयोः संसृष्टिः। तथा मुरजरवादौ मयूराणां मेघगर्जनादिभ्रमाद्भ्रान्तिमानलङ्कारो व्यज्यत इति वस्तुनालङ्कारध्वनिः।

(ड) विकचेति। विकचैः प्रस्फुटैः कुवलयैर्नीलोत्पलैः कान्तानि सुन्दराणि तैः, अन्यत्र तु विकच-कुवलयवत् कान्तैः। उत्फुल्लैः कुमुदैः श्वेतोत्पलैः धवलानि उदराणि मध्यस्थानानि येषां तैः, पक्षे उत्-फुल्लकुमुदवत् धवलोदरैः। तथा अनिमिषाणां नानाविधमत्स्यानां दर्शनेन रमणीयैः, पक्षे अनिमिषं देवत्वा-न्निर्निमेषं यद्दर्शनं दृष्टिपातस्तेन रमणीयैः। आखण्डललोचनैः इन्द्रस्य चक्षुर्भिरिव सहस्रसंख्यैः सरोभिः सरोवरैः उद्भासिता शोभिता। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(ढ) अविरलेति। अविरला निविडा याः कदल्यः पताकास्तासां वनेन समूहेन कलिताभिराकीर्णाभिः, "कदली वैजयन्त्याञ्च रम्भायां हरिणान्तरे।" इत्यादि विश्वः। अमृतस्य सुधायाः फेनपुञ्जवत् पाण्डुराभिः शुभ्राभिः, दन्तवलभिकाभिः गजदन्तनिर्म्मितचन्द्रशालाभिः उपरिगतचन्द्रगृहैरित्यर्थः। "शुद्धान्ते वड़भी चन्द्रशाले सौधोर्द्धवेश्मनि।" इति रभसः। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः।

(ण) यौवनेति। यौवनमदमत्तानां मालवीनां तत्स्थानस्य मालवदेशान्तर्गतत्वात् मालवदेशीय-

আবদ্ধ হইয়া রহিয়াছে, জলযন্ত্র হইতে অবিশ্রান্ত জলবিন্দুবর্ষণে দুর্দ্দিন করিয়া তুলিতেছে, আর কাঠের কপাটের উপর সূর্য্যের কিরণ পতিত হইয়া ইন্দ্রধনুর ন্যায় শোভা করিতেছে; (ড) প্রস্ফুটিত নীলোৎপল সমূহের ন্যায় সুন্দর, বিকসিত কুমুদগণের ন্যায় শ্বেতবর্ণমধ্য এবং নির্নিমেষ দর্শনে বিশেষ মনোহর ইন্দ্রের সহস্রসংখ্যক নয়নের ন্যায় বহুতর সরোবর সেই রাজধানীর শোভা জন্মাইতেছে;—কারণ—সেই সরোবরগুলি প্রস্ফুটিত নীলোৎপলে সুন্দর দেখা যাইতেছে, শ্বেতোৎপল বিকসিত হইয়া সরোবরগুলির মধ্যস্থান শ্বেতবর্ণ করিয়াছে এবং নানাবিধ মৎস্য দর্শনে সেগুলিকে বিশেষ সুন্দর দেখা যাইতেছে; (ঢ) ঘন ঘন পতাকা-সংযুক্ত এবং অমৃতফেনপুঞ্জের ন্যায় শুভ্রবর্ণ হস্তিদন্তনির্ম্মিত চন্দ্রশালা (চিলে কোঠা) সেই রাজধানীর সকলদিক্ শুভ্রবর্ণ করিয়াছে; (ণ) উজ্জয়িনীকে পরিবেষ্টন করিয়া শিপ্রানদী প্রবাহিত হইতেছে; যৌবনগর্ব্বিত মালবদেশীয় রমণীগণ, অবগাহনের সময় কুচকলসের

(१)...कमल...। (२) दिग्भि।

सततावद्ध-(१) तरङ्गभ्रूकुटीलेखया खमिव क्षालयन्त्या शिप्रया परिक्षिप्ता, (त) सकल-भुवन-ख्यात-यशसा (२) (त) हरजटा-चन्द्रेणेव कोटिसारेण (थ) मैनाकेनेवाविदित-पक्षपातेन (द) मन्दाकिनी-प्रवाहेणेव प्रकटित-कनक-पद्म-राशिना (ध) स्मृतिशास्त्रेणेव सभावसथ-कूप-प्रपा-राम-सुरसदन-सेतु-यन्त्र-प्रवर्त्तकेन (न)

रमणीनां कुचकलसैः क्षुभितमालोड़ितं सलिलं जलं यस्यास्तथा, महाकालस्य तदाख्यस्य तत्रत्यशिवस्य। सुरसरितं गङ्गां। सततं आबद्धा कृता तरङ्गा एव भ्रूकुटीलेखा भ्रूभङ्गश्रेणिर्यया तया, खं आकाशं क्षालयन्त्येव स्थितया शिप्रया शिप्रानामिकया नद्या परिक्षिप्ता परिवेष्टिता। अत्र कार्य्येण शिप्रायां सपत्नीव्यवहारसमारोपात् रूपकगर्भा समासोक्तिरलङ्कारः क्रियोत्प्रेक्षाचयश्चेत्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(त) सकलेति। सकलेषु भुवनेषु ख्यातं प्रथितं यशो यस्य तेन। इत्यतस्तृतीयान्तपदानि वक्ष्यमाणस्य अधिष्ठितेतिक्रियाकर्त्तृभूतस्य विलासिजनेनेत्यस्य विशेषणानि।

(थ) हरेति। हरस्य शिवस्य जटायां यश्चन्द्रस्तेनेव, कोटिः कोटिसंख्यकं सारं धनं यस्य तेन, अन्यत्र तु कोटिरग्रभाग एव सारः स्थिरांशः अवशिष्टांशो वा यस्य तेन। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(द) मैनेति। मैनाकेन तदाख्येन हिमाचलपुत्रेण पर्वतविशेषेणेव, अविदितः अज्ञातः पक्षपातः वादिप्रतिवादिनोरेकतरपक्षग्रहणं येन तेन, अन्यत्र तु अविदितः अननुभूतः पक्षयोः पतत्रयोः पातः इन्द्रकर्त्तृकच्छेदात् पतनं येन तेन। पूर्णोपमा। पुरा किल इन्द्रकर्त्तृकसकलाचलपक्षच्छेदकाले हिमाचलात्मजो मैनाकः पलायमानो जलनिधावमज्जदिति शिवपुराणवार्त्ता।

(ध) मन्देति। मन्दाकिन्याः स्वर्गगङ्गायाः प्रवाहेणेव, प्रकटितः प्रकाशितः कनकानां सुवर्णानां पद्मराशिः पद्मसंख्यकपुञ्जो येन तेन, एतेन तेषां गुप्तधनसंख्या इतोऽप्यधिकेति सूचितं। अन्यत्र तु प्रकटितः प्रस्फुटितः कनकपद्मराशिः स्वर्णमयकमलसमूहो यस्मिन् तेन। पूर्णोपमा।

(न) स्मृतीति। स्मृतिशास्त्रेणेव धर्म्मप्रतिपादकशास्त्रेणेव, सभा धर्म्मदेशाद्युन्नतिविधायिनी परिषत्,

---

আস্ফালনে সেই শিপ্রার জল আলোড়িত করিয়া থাকে; আর মাহাত্ম্যশালী তত্রত্য মহাকালরূপী মহাদেবের মস্তকে গঙ্গাকে দর্শন করিয়া ঈর্ষ্যান্বিত হইয়াই যেন সেই শিপ্রানদী সর্ব্বদা তরঙ্গরূপ ভ্রূকুটি করিতেছে এবং উত্তালতরঙ্গমালায় আকাশ যেন প্রক্ষালন করিতেছে; (ত) উজ্জয়িনীতে বহুতর বিলাসী লোক বাস করে, তাহাদের যশ জগতের সর্ব্বত্র বিখ্যাত আছে; (থ) মহাদেবের জটাতে যেমন চন্দ্রের একটি কলা আছে, তাহাতেও তেমন কোটিসংখ্যক ধনসম্পত্তি আছে; (দ) মৈনাকপর্ব্বত যেমন ইন্দ্রকর্তৃক পক্ষচ্ছেদন কাহাকে বলে তাহা জানে নাই, উজ্জয়িনীর অধিবাসিগণও তেমন বাদী বা প্রতিবাদীর পক্ষপাত কাহাকে বলে, তহা জানে না; (ধ) মন্দাকিনীর প্রবাহে যেমন অসংখ্য স্বর্ণপদ্ম প্রকাশিত থাকে, তাহাদেরও তেমন পদ্মসংখ্যক (বহুকোটি) স্বর্ণ প্রকাশ্যভাবেই আছে; (ন) স্মৃতিশাস্ত্র, সভা, অনাথাশ্রম, কূপ, পানীয়শালা, উপবন, দেবালয়, সেতু ও

---

(१) सततं समावद्ध…। (२) निखिलभुवनतलख्यातयशसा।

मन्दरेणेवोद्धृत-(१) समस्त-(२) सागर-रत्नसारेण (प) संगृहीत-गारुड़ेनापि भुजङ्ग-भीरुणा (३) (फ) खलोपजीविनाऽपि (४) प्रणयिजनोपजीव्यमानविभवेन (ब) वीरेणापि विनयवता (भ) प्रियंवदेनापि सत्यवादिना (म) अभिरूपेणापि

आवसथः अनाथावासः, कूपः क्षुद्रजलाशयः, प्रपा पानीयशाला, आराम उपवनं, सुरसदनं देवगृहं, सेतुः कुल्यादिसन्तरणपथः, यन्त्रं पथिकाद्यर्थं जलयन्त्रादिः, एतेषां प्रवर्त्तकः साधारणोपकारार्थं निर्म्माता, स्मृति-शास्त्रपक्षे विधायकं तेन। पूर्णोपमा।

(प) मन्दरेणेति। मन्दरेणेव तदाख्यपर्व्वतेनेव, उद्धृतं क्रयादिना संगृहीतं समस्तसागररत्नानां सारमुत्कृष्टांशो येन तेन, मन्दरपक्षे तु उद्धृतं मन्थनेनोत्तोलितं समस्तं सागररत्नानां क्षीरोदसमुद्रगतरत्नानां सारं अमृतैरावताद्युत्कृष्टभागो येन तेन। पूर्णोपमा।

(फ) संगृहीतेति। 'संगृहीतं शिक्षितं गारुड़ं विषचिकित्साशास्त्रं येन तथाभूतेनापि भुजङ्गभीरुणा सर्पाद्भयशीलेनेति विरोधः, संगृहीतं क्रयादिना आनीतं गारुड़ं मरकतमणिर्येन तेन, भुजङ्ग-भीरुणा वेश्यासक्तजनसंसर्गाद्भयशीलेनेति तत्परिहारः। अत्र विरोधाभासोऽलङ्कारः। "गारुड़ं स्यान्मरकते विषशास्त्रेऽपि गारुडम्।" "भुजङ्गः षिड्गसर्पयोः।" इति च विश्वः।

(ब) खलोपेति। खला दुर्जना उपजीविन आश्रयिणो यस्य तथाभूतेनापि, प्रणयिजनैर्विश्वस्तलोकैः सज्जनैरित्यर्थः उपजीव्यमान आश्रीयमाणो विभवो धनसम्पत्तिर्यस्य तेनेति सज्जनदुर्ज्जनयोरेकाश्रयासम्भवा-द्विरोधः, खलोपजीविना भूमिसम्पत्त्युपजीविनेति तत्समाधानं। विरोधाभासः। "खलं भूस्थानकल्केषु नीच-क्रूराधमे त्रिषु।" इति मेदिनी।

(भ) वीरेणेति। वीरेणापि विनयवता नमनशीलेनेति विरोधः, शिक्षावतेति तत्समाधानं। विरोधाभासः। "विनयः शिक्षाप्रणत्यो"रिति हैमः।

(म) प्रियमिति। प्रियंवदेनापि सत्यवादिनेति सर्व्वत्र प्रियंवदत्वे मिथ्यावादस्यावश्यकत्वाद्विरोधः, मितभाषित्वाच्च तत्समाधानं। विरोधाभासः।

जलयन्त्रादির যেমন বিধি দিয়া থাকে, তাহারাও তেমন পরের উপকারের জন্য সেই সভাপ্রভৃতি করিয়া থাকে; (প) মন্দরপর্ব্বত যেমন সমুদ্রমন্থনের সময় সমুদ্রের সকল রত্নের সার অমৃত ও ঐরাবতহস্তিপ্রভৃতি উদ্ধৃত করিয়াছিল, তাহারাও তেমন সমস্ত সাগরের রত্ন-সমূহের সারভাগ ক্রয়াদিদ্বারা সংগ্রহ করিয়াছে; (ফ) তাহারা বিষচিকিৎসা জানিয়াও সর্পভীরু; (সমাধান—মরকতমণি সংগ্রহ করিয়াছে এবং বদমাইসকে ভয় করে;) (ব) দুর্জ্জনদিগের আশ্রয়দাতা হইলেও, সজ্জনগণ তাহাদের সম্পত্তি ভোগ করে; (ভূমিসম্পত্তি তাহাদের জীবিকা, প্রণয়িজন তাহাদের সম্পত্তি ভোগ করে;) (ভ) তাহারা বীর হইয়াও অবনত; (বীর এবং শিক্ষিত;) (ম) প্রিয়ভাষী হইয়াও সত্যবাদী; (টীকা দ্রষ্টব্য) (য) রূপের

---

(१) उद्धृत...। (२)...समग्र...। (३) भुजङ्गसङ्गभीरुणापि। (४) खलखलोपजीविनापि।

स्वदारसन्तुष्टेन (य) अतिथिजनाभ्यागमार्थिनापि परप्रार्थनानभिज्ञेन, (र) कामार्थपरेणापि धर्म्मप्रधानेन, (ल) महासत्त्वेनापि परलोक-भीरुणा, (व) सकल-विज्ञान-विशेषविदा (१) वदान्येन (२) दक्षेण स्मितपूर्वाभिभाषिणा परिहास-पेशलेन उज्ज्वल-वेशेन शिक्षिताशेषदेशभाषेण वक्रोक्ति-निपुणेन आख्यायिकाख्यान-परिचय-चतुरेण सर्वलिपिज्ञेन महाभारत-पुराण-रामायणानुरागिणा वृहत्कथा-कुशलेन द्यूतादि-कला-कलाप-पारगेण श्रुतरागिणा सुभाषित-

(य) अभीति। अभि अभिमतं रूपं यस्य तेन रूपपक्षपातिनेत्यर्थः, तथापि स्वदारसन्तुष्टेनेति रूपपक्षपातित्वे स्वभार्य्यायां कुरूपायां परभार्य्यायान्तु सुरूपायां तत्प्रीतेरवश्यम्भावाद्विरोधः, अभिरूपेण पण्डितेनेति तत्परिहारः। विरोधाभासः। अभिरूपो बुधे रम्ये" इति मेदिनी।

(र) अतिथीति। अतिथिजनानां अभ्यागमार्थिनापि परप्रार्थनानभिज्ञेनेत्यतिथीनामपि परत्वाद्विरोधः, परैश्वर्थप्रार्थनानभिज्ञेनेति तत्परिहारः। विरोधाभासः।

(ल) कामेति। कामो रतिः, अर्थो धनं तौ परावुत्तमौ प्रधानौ यस्य तथाभूतेनापि सता, धर्म्म एव प्रधानं यस्य तेनेति विरोधः, कामार्थव्यापृतेनापि धर्म्मः प्रधानं प्रधानभावेन सेवनीयो यस्य तेनेति तत्समाधानम्। विरोधाभासः। "दूरानात्मोत्तमा परा" इत्यमरः।

(व) महेति। महासत्त्वेनापि महाबलेनापि परलोकात् शत्रुजनात् भीरुणेति विरोधः, जन्मान्तरभीरुणा जन्मान्तरेऽनिष्टजनकैहिकपापाचरणाच्छशीलेनेति तत्परिहारः। विरोधाभासः।

(श) सकलेति। सकलानां विज्ञानानां शिल्पशास्त्रादिज्ञानानां विशेषं तारतम्यं वेत्तीति तेन नानाविधशिल्पशास्त्रिणासुत्कर्षापकर्षविवेचनसमर्थेनेत्यर्थः, एतेन तस्यापि तदभिज्ञत्वं सूचितं। अथवा सकलविज्ञानानि सकलविज्ञानविषयीभूतानि शिल्पानि शास्त्राणि च विशेषेण वेत्तीति तेन। "मोक्षे धीर्ज्ञानमन्यत्र विज्ञानं शिल्पशास्त्रयो"रित्यमरः। वदान्येन दानशीलेन। दक्षेण सर्वकार्य्यनिपुणेन। परिहासपेशलेन नर्म्मवचननिपुणेन। शिक्षिता अभ्यस्ताः अशेषाणां सर्वेषां देशानां भाषाः शौरसेन्यादयो येन तेन। वक्रोक्तौ "अन्यस्यान्यार्थकं वाक्य"मित्यादिदर्पणोक्तलक्षणायां कुटिलवाचि निपुणेन। आख्यायिकाख्यानयोर्गद्यकाव्यविशेषचूर्णकयोः परिचये विशेषज्ञाने निपुणस्तेन। सर्वलिपिज्ञेन सर्वप्रकाराक्षरपरिचयशालिना। रामायण-

পক্ষপাতী হইয়াও নিজভার্য্যাতেই সন্তুষ্ট (পণ্ডিত ও নিজভার্য্যাতেই সন্তুষ্ট); (র) অতিথির আগমন প্রার্থনা করিলেও পরের প্রার্থনা জানে না (অতিথির আগমন প্রার্থনা করে, কিন্তু পরের নিকট অর্থের প্রার্থনা জানে না); (ল) কাম ও অর্থকে প্রধান বলিয়া মনে করিলেও ধর্ম্মকে প্রধান বলিয়া মনে করে (কাম ও অর্থ সেবায় ব্যাপৃত থাকিয়াও প্রধানভাবে ধর্ম্মসেবাই করে); (ব) মহাবলবান্ হইয়াও শত্রুভীরু (মহাবলবান্ এবং পরজন্মে অনিষ্টের জনক পাপ হইতে ভয় করে); (শ) এবং তাহারা সকলপ্রকার শিল্প ও শাস্ত্র জানে, দানশীল, সকল কার্য্যে চতুর, ঈষৎ হাস্য করিয়া কথা বলে, পরিহাস করিতে নিপুণ, উজ্জ্বল বেশধারী,

(१)...विदा विद्यावदातेन दानशीलेनादीनेन। (२) वदान्येन इति क्वचिन्नास्ति।

व्यसनिना प्रशान्तेन (ग) सुरभिमास-मारुतेनेव सतत-दक्षिणेन (घ) हिमगिरि-काननेनेवान्तःसरलेन (ङ) लक्ष्मणेनेव रामाराधन-निपुणेन (च) शत्रुघ्नेनेवाविष्कृत-भरत-परिचयेन (छ) दिवसेनेव मित्रानुवर्त्तिना (ज) बौद्धेनेव

महाभारतयोरितिहासत्वात् पृथगुक्तिः। बृहत्कथायां "भूतभाषामयीं प्राहुरद्भुतार्थां बृहत्कथा"मिति दण्ड्युक्तलक्षणायां कुशली निपुणस्तेन। द्यूतादिकलाकलापस्य द्यूतादिकलाविद्यासमूहस्य पारमेव पारदर्शिना। श्रुतरागिणा शास्त्रज्ञानानुरागिणा। सुभाषितव्यसनिना मधुरवचनासक्तेन। प्रशान्तेन क्रोधरहितेन।

(घ) सुरभीति। सुरभिमासयोर्वसन्तमासयोश्चैत्रवैशाखयोः मारुतेन वायुनेव, सततदक्षिणेन निरन्तरोदारचरितेन वायुपक्षे सर्वदा दक्षिणदिश आगतेन। पूर्णोपमा।

(ङ) हिमेति। हिमगिरेः काननेनेव, अन्तर्मध्ये सरलेन अवक्रेण कुटिलतारहितचित्तेन, तत्काननपक्षे तु अन्तर्मध्ये सरलाः सरलाख्यवृक्षा यस्य तेन। पूर्णोपमा।

(च) लक्ष्मणेनेति। लक्ष्मणेन सौमित्रिणेव, रामाया रमण्याः रामस्य च आराधने मनोऽनुवृत्त्या सन्तोषणे निपुणस्तेन। पूर्णोपमा।

(छ) शत्रुघ्नेनेति। शत्रुघ्नेन द्वितीयेन सुमित्रापुत्रेणेव, आविष्कृतः अभिनयादिना प्रकटितः भरते भरतमुनिप्रणीते नाट्यशास्त्रे परिचयो विशेषज्ञानं येन तेन, अन्यत्र तु आविष्कृतः परिचर्य्यादिना प्रकटितः भरते कैकेयीपुत्रे परिचय आत्मभक्तिपरिचयो येन तेन। पूर्णोपमा।

(ज) दिवसेनेति। दिवसेन दिनेनेव, मित्राणां सुहृदां अनुवर्त्तिना अनुकूलेन, दिवसपक्षे तु मित्रस्य सूर्य्यस्य अनुवर्त्तिना अनुगामिना सूर्य्यस्थितिपर्य्यन्तस्थायिनेत्यर्थः। पूर्णोपमा।

(झ) बौद्धेनेवेति। बौद्धेनेव बौद्धमतावलम्बिना सम्प्रदायविशेषेणेव, सर्वेषां विक्रेयवस्तूनां अस्तिवादे क्रेतुः प्रश्नानन्तरं अस्तित्वभाषणे शूरेण समर्थेन, सर्वप्रकारपण्यपूर्णापणत्वादिति भावः। पक्षान्तरे तु सर्वेषां भूतभौतिकानां बाह्यानां चित्तचैत्तानामाभ्यन्तराणां पदार्थानां अस्तिवादे अस्तित्वभाषणे शूरेण तदस्तित्वस्य युक्त्यादिना समर्थनात्रितान्तदक्षेण। तथा च शारीरकभाष्ये शङ्कराचार्य्याः—"बौद्धसिद्धान्ते एते

সকল দেশের ভাষা শিক্ষা করিয়াছে, বক্র কথা বলিতে নিপুণ, আখ্যায়িকা ও আখ্যান বেশ জানে, সকলপ্রকার লেখা চেনে, রামায়ণ, মহাভারত ও পুরাণ শাস্ত্রের অনুরাগী, বৃহৎ উপাখ্যান বলিতে নিপুণ, দ্যূতপ্রভৃতি সমস্ত কলাবিদ্যায় পারদর্শী, শাস্ত্রজ্ঞানের অনুরাগী, সর্ব্বদাই মধুর বাক্য বলিয়া থাকে; এবং শান্তচিত্ত; (ঘ) বসন্তকালের বায়ু যেমন সর্ব্বদা দক্ষিণদিক্ হইতে চলিতে থাকে, তাহারাও তেমন সর্ব্বদা উদারতা অবলম্বন করিয়া চলে; (ঙ) হিমালয় পর্ব্বতের বনে যেমন সরলনামে বৃক্ষ আছে, তাহাদের চিত্তেও তেমন সরলতা আছে; (চ) লক্ষ্মণ যেমন রামের সন্তোষবিধানে নিপুণ ছিলেন, তাহারাও তেমন রমণীর সন্তোষবিধানে নিপুণ; (ছ) শত্রুঘ্ন যেমন ভরতের প্রতি ভক্তির পরিচয় দিয়াছিলেন, তাহারাও তেমন ভরত-প্রণীত নাট্যশাস্ত্রে দক্ষতার পরিচয় দিয়া থাকে; (জ) দিন যেমন সূর্য্যের অনুবর্ত্তী, তাহারাও তেমন সুহৃদের অনুবর্ত্তী; (ঝ) বৌদ্ধদিগের মধ্যে সর্ব্বাস্তিত্ববাদীরা যেমন সকল পদার্থেরই অস্তিত্ব স্বীকার করে; তাহাদের মধ্যে বাণিজ্যব্যবসায়ীরাও তেমন

सर्वास्तिवाद-(१) सूरेण (ख) सांख्यागमेनेव प्रधान-पुरुषोपेतेन (२) (ग) जिन-धर्म्मेणेव जीवानुकम्पिना (३) (घ) विलासिजनेनाधिष्ठिता, (ङ) सशैलेव प्रासादैः, सशाखानगरेव (४) महाभवनैः, सकल्पवृक्षेव सत्पुरुषैः, दर्शित-

त्रयो वादिनो भवन्ति। केचित् सर्वास्तित्ववादिनः, केचिद्विज्ञानास्तित्वमात्रवादिनः, अन्ये पुनः सर्वशून्यत्ववादिनः। तत्र ये सर्वास्तित्ववादिनो वाह्यमाभ्यन्तरञ्च वस्त्वभ्युपगच्छन्ति भूतं भौतिकं चित्तं चैत्तञ्चेति तांस्तावत् प्रति ब्रूमः।" पूर्णोपमालङ्कारः। अस्तीत्यव्ययं विद्यमानार्थे।

(ग) सांख्येति। सांख्यागमेन कापिलसांख्यशास्त्रेणेव, प्रधानपुरुषैः धनगुणादिसम्पन्नतया श्रेष्ठमानवैः उपेतेन युक्तेन, पक्षान्तरे तु प्रधानं सत्त्वरजस्तमसां साम्यावस्थारूपा प्रकृतिः, पुरुषो नित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वभावः प्रकृतिविकृतिविलक्षणश्चित्स्वरूपः ताभ्यामुपेतेन युक्तेन। तथा च सांख्यसूत्रं—"सत्त्वरजस्तमसां साम्यावस्था प्रकृति"रित्यादि। "न नित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वभावस्य तद्योगस्तद्योगादृते।" सांख्यकारिका च—"न प्रकृतिर्न विकृतिः पुरुषः।" पूर्णोपमा।

(घ) जिनेति। जिनधर्म्मेण आर्हतन्यायेनेव, जीवान् सर्वविधान् प्राणिनः अनुकम्पते दयत इति तेन। इदमुभयत्रापि समानं आर्हतानामहिंसावादित्वात्। सर्वदर्शनसंग्रहादावेतन्मतमनुसन्धेयम्। पूर्णोपमा। अहो! महत् प्रकटितमत्र दर्शनशास्त्रनैपुण्यं कविना।

(ङ) विलासीति। विलासिजनेन विलासवता लोकेन, अधिष्ठिता आश्रिता। विलासमाहोज्ज्वलनीलमणिः—"गतिस्थानासनादीनां मुखनेत्रादिकर्म्मणाम्। तात्कालिकन्तु वैशिष्ट्यं विलासः प्रियसङ्गजम्।"

(च) सशैलेति। प्रासादैर्देवभूभुजां वेश्मभिः सशैलेव सपर्वतेव, तेषामत्युच्चत्वादिति भावः। अत्र शैलसंयोगस्योत्प्रेक्षणाद्गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः, तेन च प्रासादा एव शैला इति रूपकालङ्कारो व्यज्यत इत्यलङ्कारेणालङ्कारध्वनिः। एवञ्च प्रासादैरिति प्रकृत्यादित्वात् करणे तृतीया। एवमन्यत्रापि। महाभवनैरतिबृहन्मन्दिरैः, शाखानगरमासन्नवर्त्ति क्षुद्रनगरं तत्सहितेव तेषां शाखानगरवदायतत्वादित्याशयः। पूर्ववदलङ्कारो ध्वनिश्च। सत्पुरुषैर्महापुरुषैः सकल्पवृक्षेव तद्वत्तेषामर्थिप्रार्थनापूरणादित्यभिप्रायः। पूर्ववदलङ्कारो ध्वनिश्च। चित्रभित्तिभिरालेख्यसमन्वितभित्तिभिः, दर्शितानि विश्वेषां जगतां सर्ववस्तूनां रूपाण्याकृतयो यया सेव, जगतां सर्वपदार्थानामेव तत्र चित्रितत्वादिति भावः। अत्र विश्वरूपप्रदर्शनक्रियोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षा।

কেহ আসিয়া কোন বস্তু আছে কি না জিজ্ঞাসা করিলে, সকল বস্তুরই অস্তিত্ব স্বীকার করে; (গ) সাংখ্যশাস্ত্রে যেমন প্রকৃতি ও পুরুষ আছে, তাহাদের মধ্যেও তেমন প্রধান প্রধান মনুষ্য আছে; (ঘ) আর জৈনগণের ন্যায় তাহারা সকল প্রাণীর প্রতিই দয়ালু; (ঙ) তথায় বিলাসী জনগণ অধিষ্ঠান করে; (চ) সেই উজ্জয়িনী উচ্চ উচ্চ দেবমন্দিরে ও রাজভবনে যেন পর্ব্বতসমন্বিত, বৃহৎ বৃহৎ অট্টালিকা থাকায় যেন বহুতর উপনগরসংযুক্ত আর মহাপুরুষগণ অবস্থান করায় যেন কল্পবৃক্ষসম্পন্ন বলিয়া

(१) सर्वदा नास्तिवाद...। (२)...पुरुषगुणोपेतेन। (३) क्वचिदयं पाठो नास्ति। सर्वभूतानुकम्पिना।
(४) सशाखेव।

विश्वरूपैव चित्रभित्तिभिः, (च) सन्ध्येव पद्मरागानुरागिणी (१) (छ) अमराधिप-मूर्त्तिरिव मखशतानलधूम-पूता, (ज) पशुपति-लास्यक्रीडेव सुधाधवलाट्टहासा, (झ) वृद्धेव जातरूपक्षया, (ञ) गरुड़मूर्त्तिरिवाच्युतस्थिति-रमणीया, (ट) प्रभातवेलेव प्रबुद्धसर्वलोका, (ठ) शबर-वसतिरिवावलम्बित-(२) चारुचामर-(३)

(छ) सन्ध्येति। सन्ध्या सायंकाल इव, पद्मरागैर्यत्र तत्र सन्निवेशितैस्तदाख्यमणिभिः अनुरागो रक्तिमा, पद्मरागवदनुरागो रक्तिमा च यस्या अस्तीति सा। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(ज) अमरेति। अमराधिपस्य मूर्त्तिरिन्द्रस्य शरीरमिव, मखशतस्य बहुतरयज्ञस्य, शतसंख्यकाश्वमेधयज्ञानाञ्च अनलस्य वह्नेः धूमेन पूता पवित्रा। पूर्णोपमा।

(झ) पश्विति। पशुपतेर्लास्यक्रीडेव शिवस्य नृत्यखेलेव, सुधाभिः शुभ्रचूर्णलेपनैः धवलानां शुभ्रीभूतानां अट्टानामट्टालिकानां हासः प्रकाशो यस्यां सा, पक्षान्तरे तु सुधावदमृतवत् धवलः अट्टहासो महाहास्यं यस्यां सा, हासस्य धवलतया वर्णनीयत्वात्। पूर्णोपमा।

(ञ) वृद्धेति। वृद्धा स्थविरा स्त्रीव, जातरूपाणां स्वर्णानां क्षया गृहाणि यस्यां सा, पक्षान्तरे तु जातो वार्द्धक्यादुत्पन्नः रूपस्य सौन्दर्य्यस्य क्षयो विनाशो यस्याः सा। पूर्णोपमा। "निलयापचयौ क्षयौ"इत्यमरः।

(ट) गरुड़ेति। गरुड़स्य मूर्त्तिस्तनुरिव, अच्युता दृढ़निर्म्माणादस्खलिता या स्थितिरवस्थानं तया रमणीया मनोहरा, पक्षान्तरे तु अच्युतस्य विष्णोः स्थित्या तदुपर्य्यवस्थानेन रमणीया। पूर्णोपमा।

(ठ) प्रभातेति। प्रभातवेलेव प्रातःकाल इव, प्रबुद्धाः प्रकृष्टज्ञानशालिनः जागरिताश्च सर्वे लोका जना यस्यां सा। पूर्णोपमा।

(ड) शबरेति। शबरवसतिः किरातवासस्थानमिव, अवलम्बितानि रज्जुभिरालम्बितानि चारुचामराणि सुन्दरवालव्यजनानि येषु तादृशा नागदन्ता हस्तिदन्ता येषु ते तथाविधा धवला गृहा यस्यां सा। पक्षे

বোধ হয়; আর ভিত্তিতে (দেওয়ালে) নানাবিধ অসংখ্য চিত্র থাকায় সেই নগরী যেন জগতের সকল পদার্থের রূপ দেখাইতেছে বলিয়া প্রতীতি হয়; (ছ) সন্ধ্যাকাল যেমন পদ্মরাগমণির ন্যায় রক্তবর্ণ, উজ্জয়িনীও তেমন বহুতর পদ্মরাগমণিখচিত থাকায় রক্তবর্ণ; (জ) ইন্দ্রের শরীর যেমন শত অশ্বমেধযজ্ঞের অগ্নির ধূমে পবিত্র হইয়াছিল, উজ্জয়িনীও তেমন বহুসংখ্যক যজ্ঞের অগ্নির ধূমে পবিত্র হইতেছে; (ঝ) শিবের নৃত্যরূপ খেলা যেমন অমৃতের ন্যায় ধবল অট্টহাস্যসমন্বিত, উজ্জয়িনীও তেমন চূর্ণলেপনে শুভ্রবর্ণ সুশোভিত বহুতর অট্টালিকাসমন্বিত; (ঞ) বৃদ্ধ স্ত্রীলোকের যেমন সৌন্দর্য্য বিনষ্ট হইতে দেখা যায়, উজ্জয়িনীতেও তেমন সুবর্ণময় বহুতর গৃহ দেখা যায়; (ট) গরুড়ের দেহ যেমন বিষ্ণুর অবস্থানে সুন্দর দেখায়, উজ্জয়িনীও তেমন স্থিরভাবে অবস্থান করায় সুন্দর দেখায়; (ঠ) প্রভাতকালে যেমন সকল লোক নিদ্রা হইতে জাগরিত হইয়া থাকে, উজ্জয়িনীতেও তেমন সকল লোক নানাবিষয়ে জ্ঞানী হইয়া থাকে; (ড) ব্যাধগণের বাসস্থানের গৃহগুলি যেমন মনোহর চামর ও হস্তিদন্তে পূর্ণ থাকায়

(१) पद्मरागाढ्या। (२) आलम्बित...। (३) अवलम्बितचामर...।

नागदन्त-धवल-गृहा, (ड) शेष-तनुरिव सदासन्न-वसुधाधरा, (ढ) जलधि-(१) मथनवेलेव महाघोष-पूरित-दिगन्तरा, (ण) प्रस्तुताभिषेक-भूमिरिव (२) सन्निहित-(३) कनकघट-(४) सहस्रा, (त) गौरीव महासिंहासनोचितमूर्त्तिः, (थ) अदितिरिव देवकुल-सहस्रसेव्या, (द) महावराह-लीलेव दर्शित-हिरण्याक्ष-

---

अवलम्बितैः तांस्तान् पशून् निहत्य संगृह्य स्थापितैः चारुचामरैः चमरमृगाणां सुन्दरलोमभिः, नागदन्तैरं सिदन्तैश्च धवलानि गृहाणि यस्यां सा। पूर्णोपमा।

(ढ) शेषेति। शेषस्य अनन्तनागस्य तनुः शरीरमिव, सदा आसन्नाः सन्निहिताः वसुधाधराः पर्वता यस्याः सा। पक्षे सदा सर्वदा आसन्नां उपरिस्थितां वसुधां धरतीति इति सा। पूर्णोपमा।

(ण) जलधीति। जलधिमथनवेलेव समुद्रमन्थनसमय इव, महाघोषैः विशालाभीरपल्लिभिः विशालमन्थनध्वनिभिश्च पूरितानि दिगन्तराणि यस्याः यस्याश्च सा। पूर्णोपमा।

(त) प्रस्तुतेति। प्रस्तुत आरब्धो योऽभिषेकः राजाभिषेकस्तस्य भूमिः स्थानमिव, सन्निहितं संस्थापितं कनकघटसहस्रं स्वर्णकलससमूहो यस्यां सा, एकत्र भवनद्वारतोरणस्तम्भमूलेषु मङ्गलार्थं, अन्यत्र स्नानीयजलसम्भारार्थमिति भावः। पूर्णोपमा।

(थ) गौरीति। गौरी दुर्गेव, महासिंहासनैः विशालैः सिंहाकारासनैः उचिता स्वयोग्या परममनोहरेत्यर्थः मूर्त्तिर्यस्याः सा:, पक्षे महासिंहरूपे आसने उचिता स्थितियोग्या मूर्त्तिर्यस्याः सा। पूर्णोपमा।

(द) अदितिरिति। अदितिर्देवमातेव, देवकुलसहस्रं देवालयसमूहः सेव्यं प्रदक्षिणकरणादिना सेवनीयं यत्र सा, पक्षे देवकुलसहस्रेण देववंशसमूहेन सेव्या प्रसूतित्वात् सेवनीया। पूर्णोपमा।

(ध) महेति। महावराहस्य नारायणतृतीयावतारस्य लीला चेष्टेव, दर्शितः खेलाकाले जनैः प्रदर्शितः हिरण्याक्षाणां स्वर्णनिर्म्मितपाशकानां पातो निक्षेपो यस्यां सा, पक्षे दर्शितो हिरण्याक्षस्य तदाख्यस्य हिरण्य-

---

শুভ্রবর্ণ থাকে, উজ্জয়িনীতেও তেমন বহুতর শুভ্রবর্ণ গৃহ আছে, তাহার মধ্যে হস্তিদন্তে সুন্দর চামর সকল ঝুলান আছে ; (ঢ) অনন্তনাগের শরীরে যেমন সর্ব্বদা পৃথিবী অবস্থিত, উজ্জয়িনীর নিকটেও তেমন সর্ব্বদা পর্ব্বত অবস্থিত ; (ণ) সমুদ্রমন্থনের সময় যেমন মহাশব্দে সকল দিক্ পূর্ণ করিয়াছিল, গোপগণের পল্লী সকলও তেমন উজ্জয়িনীর সকল দিক্ পূর্ণ করিয়া রহিয়াছে ; (ত) রাজার অভিষেকের স্থানে যেমন বহুতর সুবর্ণ-কলস সংস্থাপিত হয়, উজ্জয়িনীতেও তেমন প্রত্যেক গৃহের তোরণের মূলে সুবর্ণ-কলস সংস্থাপিত আছে ; (থ) দুর্গার মূর্ত্তি যেমন নিজ বাহন মহাসিংহে উপবেশনের উপযুক্ত, উজ্জয়িনীও তেমন বৃহৎ সিংহাসনসমূহের উপযুক্ত ; (দ) দেবগণ যেমন মাতা অদিতির সেবা করেন, উজ্জয়িনীর জনসমূহও তেমন দেবালয়ের সেবা করে ; (ধ) নারায়ণ বরাহমূর্ত্তি ধারণ করিয়া যেমন হিরণ্যাক্ষদানবের বিনাশ

---

(१) जलनिधि...। (२)...भूमीरिव, वेलेव।

(३) सदासन्निहित...। (४)...घटक...।

पाता, (ध) आस्तीकतनुरिव (१) आनन्दित-भुजङ्गलोका (न) हरिवंशकथेव अनेक-बाल-क्रीड़ा-रमणीया, (प) प्रकटाङ्गनोपभोगाप्यखण्डित-चरित्रा, (फ) रक्तवर्णापि सुधाधवला, (ब) अवलम्बित-मुक्ता-कलापापि विहारभूषणा, (भ)

कशिपुधातुः पातो विनाशो यया सा। पूर्णोपमा। पुरा नारायणो वराहमूर्त्तिं परिगृह्य पृथिवीमुत्तोल्य, पश्चं गिरिगुहागतं हिरण्याक्षं निहतवानिति भागवतवार्त्ता।

(न) आस्तीकेति। आस्तीकस्य तदाख्यस्य मुनेः तनुराकृतिरिव, आनन्दितः विलासोपयोगिप्रचुरतरगृहशालित्वात् परितोषितः भुजङ्गलोको विटजनो यया सा, पक्षे आनन्दितः जनमेजयस्य सर्पसत्रनिवारणात् परितोषितः भुजङ्गलोकः सर्पगणो यया सा। पूर्णोपमा। पुरा किल भगवानास्तीकः सकलसर्पकुलविनाशोद्यतं जनमेजयस्य सर्पसत्रं प्रार्थनया निवारयामासेति महाभारतवार्त्ता।

(प) हरीति। हरिवंशाख्या या कथा महाभारतशेषोपाख्यानं सेव, अनेकाभिर्विविधाभिः बालक्रीडाभिः तनयानां शिशूनां लीलाभिः यदुवंशीयबालकगणखेलाकथाभिश्च रमणीया। पूर्णोपमा।

(फ) प्रकटेति। प्रकटः दुश्चरित्रतया ख्यातत्वेन लज्जासङ्कोचाद्यभावादभिव्यक्तः अङ्गनानामुपभोगो यत्र सा तादृश्यपि अखण्डितचरित्रेति विरोधः, प्रकटः सौरभनिर्गमादिना प्रव्यक्तः अङ्गनानामुपभोगः स्त्रीगणकर्त्तृककर्पूरताम्बूलादिसम्भोगो यस्यामिति तत्समाधानम्। अत्र विरोधाभासोऽलङ्कारः।

(ब) रक्तेति। रक्तवर्णापि सुधावत् धवलेति विरोधः, रक्ताः सुखवासहेतुत्वादनुरक्ताः वर्णा ब्राह्मणादिजातयो यस्यां सेति तत्परिहारः। विरोधाभासः।

(भ) अवेति। अवलम्बितो धृतः मुक्ताकलापो मुक्तामाला यया सापि, विगतो हारो मुक्तामाला येभ्यस्तानि विहाराणि भूषणानि यस्याः सेति विरोधः, विहारा बौद्धालया भूषणानि यस्याः सेति तत्समाधानम्। विरोधाभासः। "विहारो भ्रमणे स्कन्धे लीलायां सुगतालये।" इति मेदिनी।

দর্শন করাইয়াছিলেন, উজ্জয়িনীর লোকও তেমন খেলায় প্রবৃত্ত হইয়া স্বর্ণনির্ম্মিত পাশকের নিক্ষেপ দর্শন করাইয়া থাকে; (ন) আস্তীকমুনি যেমন সর্পসত্র নিবারণ করিয়া সর্পগণকে আনন্দিত করিয়াছিলেন, উজ্জয়িনীও তেমন ভোগবিলাসের উপযুক্ত গৃহ ধারণ করিয়া ভোগীদিগকে আনন্দিত করিতেছে; (প) হরিবংশোপাখ্যান যেমন নানাবিধ বালক্রীড়ার উপাখ্যানে মনোহর, উজ্জয়িনীও তেমন বালকগণের নানাবিধ খেলায় মনোহর; (ফ) উজ্জয়িনীতে প্রকাশ্যভাবে স্ত্রীদিগের উপভোগ চলিতে থাকিলেও (স্ত্রীগণ প্রকাশ্যভাবে বিলাসসামগ্রী ভোগ করিতেছে এবং) কাহারও চরিত্র দূষিত নহে; (ব) রক্তবর্ণ হইলেও (উজ্জয়িনীতে ব্রাহ্মণাদি সকল বর্ণ অনুরক্ত আছে এবং) উজ্জয়িনী অমৃতের ন্যায় ধবলবর্ণ; (ভ) মুক্তার মালা ধারণ করিলেও উজ্জয়িনী, মুক্তামালাহীন অলঙ্কারে অলঙ্কৃত; (বহুতর বৌদ্ধ আশ্রমে ভূষিত)

---

(१) कद्रूरिव।

बहुप्रकृतिरपि स्थिरा, (म) विजितामरलोक-द्युतिरवन्तीषूज्जयिनी नाम नगरी। (य)

यस्यामुत्तुङ्ग-सौधोत्सङ्ग-सङ्गीतसङ्गिनीनां (१) अङ्गनानामति-मधुरेण गीत-रवेणाकृष्यमाणाधोमुख-रथतुरङ्गः (२) पुरःपर्य्यस्त-(३) रथपताकापटः कृतमहा-काल-प्रणाम इव प्रतिदिनं लक्ष्यते गच्छन् (४) दिवसकरः। (र)

यस्याञ्च सन्ध्यारागारुणा इव सिन्दूरमणिकुट्टिमेषु, प्रारब्ध-नीलकमलिनी-

(म) बह्विति। बह्वी नानाविधा प्रकृतिः स्वभावो यस्याः सापि स्थिरा स्थिरस्वभावेति विरोधः, बह्वः प्रकृतयः स्वाम्यादिराज्याङ्गानि पौरवर्गो वा यस्यां सेति तत्परिहारः। विरोधाभासः।

(य) विजितेति। विजिता अमरलोकस्य स्वर्गस्य द्युतिः कान्तिर्यया सा। अवन्तीषु अवन्तीनामकदेशे "बहुत्ववदस्वादे"रित्यादिना बहुवचनम्। स्वकान्त्या स्वसम्पत्त्या वा उत्कर्षेण जयति सर्वा नगरीरित्युज्जयिनी। नगरीलक्षणमुक्तं रघुनाथेन—

"देवतायतनैश्चित्रैः प्रासादापणवेश्मभिः। नगरं दर्शयेद्विद्वान् राजमार्गैश्च शोभनैः॥"

(र) यस्यामिति। उत्तुङ्गानामत्युच्चानां सौधानां राजसदनानां उत्सङ्गे क्रोडे उपरितल इत्यर्थः सङ्गीतं नृत्यगीतवाद्यानि तत्सङ्गिनीनां तदासक्तानां, अङ्गनानां स्त्रीणां। अत्र वृत्त्यनुप्रासोऽलङ्कारः। आकृष्य-माणा अतएव अधोमुखा रथतुरङ्गा रथनियुक्ताश्वा यस्य सः। तथा पुरःपर्य्यस्तः रथवेगाभावादग्रतः स्रस्तः रथपताकापटो यस्य सः। तेन च गललग्नीकृतवासा इवेति व्यज्यते। कृतः महाकालाय तत्रत्याय तदाख्य-शिवाय प्रणामो येन स इव। गच्छन् उदयाचलादस्ताचलमिति शेषः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ल) यस्यामिति। रविगभस्तयः सिन्दूरमणिकुट्टिमेषु पतिताः सन्तः सन्ध्यारागारुणा इव विराजन्त इत्यं सर्वत्रान्वयः। सिन्दूरमणिकुट्टिमेषु प्रवालबद्धभूमिषु, सन्ध्यारागेण सन्ध्याकालीनरक्तिम्ना अरुणा रक्तवर्णा इव तेषां रक्तवर्णत्वात्। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः। मरकतवेदिकासु पतिताः सन्तः, प्रारब्धं प्रवर्त्तितं

(म) উজ্জয়িনী বহুপ্রকৃতি হইলেও (বহুসংখ্যক লোকের বাসস্থান এবং) স্থিরস্বভাব (য) আর উজ্জয়িনী, নিজের শোভায় স্বর্গের শোভা জয় করিয়াছে।

(র) যে উজ্জয়িনীতে অত্যুচ্চ রাজভবনের উপরিতলে সঙ্গীতচর্চ্চায় প্রবৃত্ত রমণীগণের অতিমধুর গীতধ্বনিতে আকৃষ্ট হইয়া সূর্য্যের রথের অশ্বগণ অধোমুখ হইয়া অবস্থান করে, তাহাতে রথের বেগ না থাকায় তাহার পতাকা সম্মুখে ঝুলিতে থাকে, তখন সূর্য্য যেন মহাকালকে প্রণাম করিয়া যাইতেছেন বলিয়া লোকে প্রতিদিন দেখিয়া থাকে।

(ল) আর যে উজ্জয়িনীতে সূর্য্যের কিরণসমূহ প্রবালময় প্রাঙ্গণে পতিত হইয়া সন্ধ্যা-রাগে রঞ্জিত হইয়াই যেন দীপ্তি পাইতে থাকে, মরকতমণির বেদির উপরে পতিত হইলে বোধ হয় যেন নীলপদ্মসমূহমধ্যে মণ্ডলাকারে অবলুণ্ঠন আরম্ভ করিয়াছে; বৈদূর্য্যমণিময়

(१) उत्सङ्गीतसङ्गिनीनां, उत्सङ्गसङ्गिनीनां। (२) कृष्यमाणाधोमुखतुरङ्गः। (३) पुरःपर्य्यस्त...।
(४) प्रतिदिवसमालक्ष्यते भगवान्...।

परिमण्डला (१) इव मरकत-वेदिकासु, गगनतल-प्रसृता (२) इव वैदूर्य्यमणि-भूमिषु, तिमिर-पटल-विघटनोद्यता इव कृष्णागुरु-धूम-(३) मण्डलेषु, अभिभूत-तारकापङ्क्तय इव मुक्ता-(४) प्रालम्बेषु, विकच-कमल-चुम्बिन इव नितम्बिनी-मुखेषु, प्रभात-चन्द्रिकामध्यपतिता इव स्फटिकभित्ति-(५) प्रभासु, गगनसिन्धु-तरङ्गावलम्बिन (६) इव सितपताकांशुकेषु, पल्लविता इव सूर्य्यकान्तोपलेषु, राहु-मुखकुहर-प्रविष्टा इवेन्द्रनीलवातायन-विवरेषु विराजन्ते रवि-गभस्तयः। (ल)

नीलकमलिनीषु नीलवर्णपद्मिनीषु परिमण्डलं मण्डलाकारेणावलुण्ठनं येषां इव, मरकतवेदिकानां नीलवर्णत्वात्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षा। वैदूर्य्यमणिभूमिषु पतिताः सन्तः, गगनतलप्रसृता इव आकाशे विस्तृता इव, वैदूर्य्यमणिभूमीनामत्यच्छत्वात्। अत्रापि क्रियोत्प्रेक्षा। कृष्णागुरुधूममण्डलेषु देवतापूजादौ दह्यमानकृष्णागुरुत उत्थितधूमपुञ्जेषु पतिताः सन्तः, तिमिरपटलस्य अन्धकारसमूहस्य विघटने विनाशे उद्यता इव, तद्धूममण्डलानामन्धकारतुल्यकृष्णवर्णत्वात्। क्रियोत्प्रेक्षा। मुक्ताप्रालम्बेषु लम्बमानमुक्ताकलापेषु पतिताः सन्तः, अभिभूता तिरस्कृता आच्छाद्यमानेत्यर्थः तारकापङ्क्तिः नक्षत्रश्रेणिर्यैस्ते इव, मुक्ताप्रालम्बानां तारकापङ्क्तितुल्यत्वात्। क्रियोत्प्रेक्षा। नितम्बिनीमुखेषु रमणीनां वदनेषु पतिताः सन्तः विकचानि प्रस्फुटानि कमलानि पद्मानि चुम्बन्तीति ते इव, नितम्बिनीमुखानां विकचकमलतुल्यत्वात्। क्रियोत्प्रेक्षा। स्फटिकभित्तिप्रभासु स्फटिकनिर्म्मितभित्तिद्युतिषु पतिताः सन्तः, प्रभातचन्द्रिकामध्यपतिता इव, तत्प्रभायां प्रभातचन्द्रिकासमानत्वात्। क्रियोत्प्रेक्षा। सितपताकांशुकेषु शुभ्रवैजयन्तीवसनेषु पतिताः सन्तः, गगनसिन्धुतरङ्गावलम्बिन आकाशगङ्गातरङ्गाश्रिता इव, सितपताकांशुकानां तरङ्गवत् पवनान्दोलितत्वात्। क्रियोत्प्रेक्षा। सूर्य्यकान्तोपलेषु सूर्य्यकान्तमणिषु पतिताः सन्तः, पल्लविताः सञ्जातपल्लवाः विस्तृता इवेत्यर्थः सूर्य्यकरस्पर्शे सूर्य्यकान्तमणिभ्योऽपि तेजोनिर्गमात्। क्रियोत्प्रेक्षा। तथा इन्द्रनीलवातायनविवरेषु नीलकान्तमणिनिर्म्मितगवाक्षच्छिद्रेषु पतिताः सन्तः, राहोर्मुखकुहरे वदनविवरे प्रविष्टा इव, तेषामपि राहुमुखकुहरवत् सान्तरालत्वात् कृष्णवर्णत्वाच्च। क्रियोत्प्रेक्षा। रविगभस्तयः सूर्य्यकिरणाः।

ভূমিতে পতিত হইলে প্রতীতি হয় যেন আকাশতলে বিচরণ করিতেছে; কৃষ্ণাগুরুর ধূমপুঞ্জে পতিত হইলে বোধ হয় যেন অন্ধকাররাশি বিনাশে উদ্যত হইয়াছে; মুক্তার ঝালরে পতিত হইলে প্রতীতি হয় যেন নক্ষত্রশ্রেণীকে আবৃত করিতেছে; রমণীগণের মুখে পতিত হইলে বোধ হয় যেন প্রস্ফুটিত পদ্ম চুম্বন করিতেছে; স্ফটিকময় ভিত্তির (দেওয়ালের) প্রভামধ্যে পতিত হইলে প্রতীতি হয় যেন প্রভাতকালের জ্যোৎস্নার মধ্যে পতিত হইয়াছে; শ্বেতবর্ণ পতাকার উপরে পতিত হইলে বোধ হয় যেন আকাশগঙ্গার তরঙ্গ আশ্রয় করিয়াছে; সূর্য্যকান্ত মণির উপরে পতিত হইলে প্রতীতি হয় যেন বিস্তার পাইতেছে আর নীলকান্তমণির গবাক্ষ-রন্ধ্রে পতিত হইলে বোধ হয় যেন রাহুর মুখবিবরে প্রবেশ করিয়াছে।

---

(१) मारब्धकम...। परिमलनी, परिमिलना, परिमलना, परिमला, परिमीलना...। (२) गगनपर्य्यस्ता। (३) धूप...। (४) मुक्ताफल...। (५) स्फटिकमणि...। (६) तरङ्गवल्गिनः।

यस्याश्चानुपजात-तिमिरत्वादविघटित-चक्रवाकमिथुना व्यर्थीकृत-(१) सुरत-प्रदीपाः सञ्जात-मदनानल-दिग्दाहा इव यान्ति कामिनीनां भूषण-प्रभाभिर्बाला-तपपिञ्जरा इव रजन्यः। (व)

याश्च सन्निहित-विषमलोचनामनवरतमतिमधुरो रतिप्रलाप इव प्रसर्पन् (२) मुखरीकरोति मकरकेतु-दाह-हेतुभूतो भवन-कलहंस-कोलाहलः (३)। (श)

यस्याश्च निशि निशि पवनविलोलैः (४) दुकूलपल्लवैरुल्लसद्भिर्मालवी-मुख-

(व) यस्याश्चेति। कामिनीनां भूषणप्रभाभिरलङ्कारदीप्तिभिः, अनुपजाततिमिरत्वादनुत्पन्नान्धकारत्वाद्धेतोः, अविघटितानि अवियोजितानि चक्रवाकानां मिथुनानि युगलानि याभिस्ताः। तथा च चक्रवाकदम्पत्यौ हि दिवा संयुज्यन्ते रात्रौ च वियुज्यन्ते, तदानीन्तु कामिनीनामलङ्कारप्रभाभिरन्धकाराभावात् दिवस एवायमिति भ्रमेण संयुक्ता एव तिष्ठन्तीति भावः। अतएवात्र भ्रान्तिमानलङ्कारो व्यज्यते इति वस्तुनाऽलङ्कारध्वनिः। व्यर्थीकृता निष्प्रयोजनीकृताः सुरतप्रदीपा याभिस्ताः, तद्भूषणप्रभाभिरेवान्धकारापगमादिति भावः। रजन्यो रात्रयः। बालातपेन नवीनसूर्य्यालोकेन पिञ्जराः पिङ्गलवर्णा इव, तथा सञ्जातो मदनानलेन दिग्दाहो यासु ता इव च सत्यो यान्ति अतिक्रामन्ति। अत्र चक्रवाकमिथुनानां विघटनसम्बन्धेऽपि तदसम्बन्धोक्तेरेकातिशयोक्तिः, अपरा च सुरतप्रदीपानां व्यर्थीकरणासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिः, तथा सञ्जातेत्यादौ क्रियोत्प्रेक्षा, बालेत्यादौ च गुणोत्प्रेक्षा, इत्येषां मिथो निरपेक्षतया संसृष्टिः।

(श) याश्चेति। मकरकेतोर्मदनस्य दाह एव हरनयनवह्निना भस्मीकरणमेव हेतुभूतो यस्य सः, रतेर्मदनभार्य्यायाः प्रलाप आर्त्तनाद इव, मकरकेतुना यो दाहः कामकर्त्तृको जनानां सन्तापः तस्य हेतुभूतः हंसरवस्योद्दीपकत्वादिति भावः, अतिमधुरो भवनकलहंसकोलाहलः, अनवरतं प्रसर्पन् प्रसरन् सन्, सन्निहितो महाकालरूपेणावस्थितः विषमलोचनस्त्र्यम्बकः शिवो यस्यां तां, इदन्तु मकरकेतुदाहसम्भवताप्रदर्शनार्थमिति बोध्यं, याश्चोज्जयिनीं मुखरीकरोति सशब्दीकरोति। अतोपमालङ्कारः।

(ष) यस्यामिति। दूरे अत्युच्चं प्रसारिता विस्तारिता उत्तोलिताः ध्वजाः केतुदण्डा एव भुजा यैस्ते,

(व) *আর যে উজ্জয়িনীতে কামিনীগণের অলঙ্কারের আলোকে রাত্রিতেও অন্ধকার জন্মিতে পারে না, তাহাতে চক্রবাক ও চক্রবাকীগণ দিনের বেলা মনে করিয়া পরস্পর বিযুক্ত হয় না ;…এবং মদনাগ্নিতে যেন দিগ্দাহ হইতেছে বলিয়া বোধ হয় আর সূর্য্যের নবীন আলোকে পিঙ্গলবর্ণ হইয়াই যেন রাত্রি অতীত হইয়া যায়।

(শ) শিবের নয়নাগ্নিতে কামদেব দগ্ধ হইলে রতির বিলাপের ন্যায়, গৃহস্থিত কলহংসগণের অতিমধুর কোলাহল, অবিরত চতুর্দ্দিকে বিস্তৃত হইয়া, মহাকালরূপী শিবের আবাসভূমি যে উজ্জয়িনীকে মুখরিত করিতেছে।

(ষ) আর যে উজ্জয়িনীতে অত্যুচ্চ অট্টালিকাসমূহ, ধ্বজরূপ বাহু দূরে উত্তোলন করিয়া,

(१) मकटीकृत…। (२) प्रतिवासरं प्रसर्पन्। (३) भवनकुलहंसकुलकोलाहलः।
(४) पवनवशविलोलैः।

कमल-कान्ति-लज्जितस्येन्दोः कलङ्कमिवापनयन्तो दूरप्रसारित-ध्वज-भुजाः (१) प्रासादा लक्ष्यन्ते । (ष)

यस्याञ्च सौध-शिखर-शायिनीनां (२) पश्यन् मुखानि पुरसुन्दरीणां मदन-परवश इव पतितः प्रतिमाच्छलेन लुठति बहल-चन्दन-जल-सेक-शिशिरेषु मणि-कुट्टिमेषु (३) मृगलाञ्छनः । (स)

यस्याञ्च निशावसाने (४) प्रबुद्धस्य तारतरमपि पठतः पञ्जरभाजः शुक-सारिकासमूहस्याभिभूत-गृहसारस-स्वरामृतेन (५) विस्तारिणा विलासिनी-भूषणरवेणाविभाव्यमानाः (६) व्यर्थीभवन्ति प्रभात-मङ्गलगीतयः । (ह)

प्रासादा राजभवनानि, पवनविलोलैर्वायुचालितैः अतएवोल्लसद्भिरुत्तिष्ठद्भिः, दुकूलपल्लवैः विस्तृतपताकापटैः, मालवीनां मालवदेशीयरमणीनां मुखकमलकान्तिभिर्लज्जितस्य सकलङ्कत्वात् सलज्जीकृतस्य इन्दोश्चन्द्रस्य कलङ्कं लज्जाकारणीभूतं लाञ्छनं कालिमानञ्च अपनयन्तः प्रोञ्छन्त इव लक्ष्यन्ते । सुहृदा सुहृदन्तरस्य मुखकालिम-प्रोञ्छनवदिति भावः । अतएवात्र कार्य्येण प्रासादेषु सुहृद्व्यवहारसमारोपात् समासोक्तिरलङ्कारः क्रियोत्प्रेक्षया सङ्कीर्य्यते । एतेन मालवीनां महासौन्दर्य्यं प्रासादानाञ्चात्युन्नतत्वं व्यज्यते ।

(स) यस्यामिति । मृगलाञ्छनः शशाङ्कः, सौधशिखरशायिनीनां राजसदनोपरिस्थायिनीनां पुर-सुन्दरीणां नगररमणीनां मुखानि पश्यन् मदनपरवशः कामायत्त इव सन्, बहलानां प्रचुराणां चन्दनजलानां सेकेन शिशिरेषु शीतलेषु मणिकुट्टिमेषु तासां पुरसुन्दरीणामाश्रयभूतेषु मणिमयच्छदिःसु प्रतिमाच्छलेन प्रतिविम्बव्याजेन पतितो लुठति, तासामनुनयार्थमिति भावः । अत्रापि कार्य्येण चन्द्रे विटकामुकव्यवहारसमारोपात् समासोक्तिरलङ्कारो गुणोत्प्रेक्षापह्नुतिभ्यां सङ्कीर्य्यते ।

(ह) यस्यामिति । प्रबुद्धस्य जागरितस्य । तारतरं उच्चैस्तरं यथा स्यात्तथा । पञ्जरभाजः पञ्जरमध्य-वर्त्तिनः शुकसारिकासमूहस्य प्रभातमङ्गलगीतयः, अभिभूतं उच्चैस्तया तिरस्कृतं गृहसारसानां गृहस्थित-पक्षिविशेषाणां स्वरामृतं अमृतवन्मधुरध्वनिर्येन तेन, विस्तारिणा महता विलासिनीनां स्त्रीणां भूषणरवेण अल-

---

বায়ুভরে কম্পিত হইয়া উত্থিত পতাকাবসনদ্বারা, মালবদেশীয় রমণীগণের মুখপদ্মের সৌন্দর্য্য দেখিয়া লজ্জিত চন্দ্রের কলঙ্ক যেন মুছিয়া দিতেছে—এইরূপ প্রত্যেক রাত্রিতে দেখা যায়।

(স) এবং যে উজ্জয়িনীতে পুররমণীগণ অট্টালিকার উপরে আরোহণ করিলে তাহাদের মুখ দর্শন করিয়া কামাতুর হইয়াই যেন চন্দ্র, প্রচুর চন্দনজলসেকে সুশীতল মণিময় ছাদে প্রতিবিম্বচ্ছলে পতিত হইয়া লুণ্ঠিত হইতে থাকে।

(হ) আর যে উজ্জয়িনীতে পঞ্জরস্থিত শুক ও সারিকাগণ রাত্রিশেষে জাগরিত হইয়া উচ্চৈঃস্বরে পাঠ করিতে থাকে আর প্রভাতকালের মঙ্গলগান করিতে থাকে ; কিন্তু গৃহস্থিত

---

(१)...ऊर्द्ध्वध्वजभुजाः । (२) सौधशिखरोत्सङ्गशायिनीनां । (३) क्वचिदयं पाठो नास्ति ।
(४) निशावसान··· । (५)...समूहस्य रवेणाभिभूता गृहसारसविटकेन । (६) अभिभाव्यमानाः ।

यस्याञ्चानिवृत्तिः (१) मणिदीपानाम्, (२) तरलता (३) हारलतानाम्, अस्थितिः सङ्गीत-मुरज-ध्वनीनाम्, द्वन्द्ववियोगश्चक्रनाम्नाम्, (४) वर्णपरीक्षा कनकानाम्, अस्थिरत्वं ध्वजानाम्, मित्रद्वेषः कुमुदानाम्, कोषगुप्तिरसीनाम्। (च)

किं बहुना, यस्यां (५) सुरासुर-चूड़ा-मणि-मरीचि-चय-चुम्बित-(६) चरण-नख-मयूखो निशित-त्रिशूल-दारितान्धक-महासुरः, गौरी-नूपुर-कोटि-घृष्ट-शेखर-

---

हारशब्देन, अविभाव्यमाना विशेषेणाश्रूयमाणाः सम्मिलितत्वेन पृथक्तया अज्ञायमानाः सत्यः, अतएव व्यर्थीभवन्ति। अत्र तादृशभूषणरवेण तद्गीतानां गोपनान्मीलितमलङ्कारः पदार्थहेतुककाव्यलिङ्गेन सङ्कीर्य्यते।

(च) यस्यामिति। मणिदीपानां अनिवृत्तिः स्वभावतो दीप्तिमत्त्वात् अनिर्वाणता, न तु लोकानामनिवृत्तिर्विषयादनुपरमः सर्वेषामेव वार्द्धक्ये तदुदयात्। हारलतानां मुक्तामालानां तरलता चञ्चलता, न तु नरनारीणां तरलता, विशेषशिक्षाशालितया परमगाम्भीर्य्यवत्त्वात्। सङ्गीतमुरजध्वनीनां सङ्गीतमृदङ्गयोः शब्दानां अस्थितिः तृतीयक्षणे अविद्यमानता, न तु लोकानामस्थितिः मर्य्यादाहीनता सर्वेषामेव तद्वत्त्वात्। चक्रनाम्नां चक्रवाकपक्षिणां द्वन्द्ववियोगः मिथुनविरहः रात्रौ दम्पतीविच्छेद इति यावत्, न तु जनानां मध्ये दम्पतीविच्छेदः सम्पत्तिमत्तया विदेशगमनाभावात् तादृशधर्म्मवत्तया च विभिन्नकाले मृत्युविरहात्। कनकानां स्वर्णानां वर्णस्य रूपस्य परीक्षा वह्नितापादिना सदोषनिर्दोषताज्ञानं, न तु ब्राह्मणादीनां वर्णपरीक्षा जिज्ञासादिना विशिष्टजातिज्ञानं, साङ्कर्य्यदोषाभावात्। ध्वजानां पताकानां अस्थिरत्वं वायुवेगेन चञ्चलत्वं, न तु जनानामस्थिरत्वं अधीरत्वं तादृशोपद्रवाभावात्। कुमुदानां कैरवाणां मित्रद्वेषः सङ्कोचकारकत्वेन सूर्य्यं प्रति विद्वेषः, न तु जनानां मित्रद्वेषः सुहृत्सु विद्वेषः गुरुतरपापहेतुत्वात्। असीनां तरवारीणां कोषेषु चर्म्ममयावरणेषु गुप्तिः रक्षणं, न तु धनानां कोषेषु भाण्डारेषु गुप्तिर्गोपनं चौराद्यभावात्। सर्वत्र वर्त्तत इति शेषः। अत्र प्रत्येकवाक्ये यथासम्भवश्लेषसङ्कीर्णा आर्थी परिसंख्यालङ्कारः।

(छ) किमिति। बहुना जल्पितेन किमित्यर्थः; सुरासुराणां प्रणमतामिति भावः, चूड़ामणिमरीचिचयैः मस्तकस्थरत्नरश्मिसमूहैः चुम्बिताः संस्पृष्टाः चरणनखानां मयूखाः किरणा यस्य सः। निशितेन

सারসপক্ষিগণের মধুরধ্বনি নীচে ফেলিয়া রমণীগণের অলঙ্কারের শব্দ বিস্তৃতভাবে হইতে থাকে, তাহাতে সেই মঙ্গলগীত পৃথক্‌ভাবে শুনিতে না পাওয়ায় নিষ্ফল হইয়া যায়।

(ঙ) এবং যে উজ্জয়িনীনগরে মণিময় প্রদীপেরই অনিবৃত্তি, মুক্তামালারই চঞ্চলতা, সঙ্গীত ও মৃদঙ্গের শব্দেরই স্থিতিহীনতা, চক্রবাকপক্ষিগণের মধ্যেই দম্পতীবিচ্ছেদ, সুবর্ণেরই বর্ণপরীক্ষা, পতাকারই অস্থিরতা, কুমুদগণেরই মিত্রের (সূর্য্যের) প্রতি বিদ্বেষ এবং তরবারি-সমূহেরই কোষমধ্যে স্থাপন হইয়া থাকে।

(চ) অধিক বলিবার প্রয়োজন নাই; নমস্কার করিবার সময়ে দেবদানবগণের

---

(१) अनिर्वृतिः। (२) माणिप्रदीपानां। (३) अनल्पतरलता। (४) चक्रनाम्नः, चक्रवाकनाम्नाम्।
(५) यस्याञ्च। (६) मरीचिचुम्बित...।

-चन्द्र-शकल:, (१) त्रिपुर-भस्म-रज:-कृताङ्गराग:, मकरध्वज-ध्वंस-विधुरया रत्या प्रसादयन्त्या प्रसारित-कर-युगल-(२) विगलित-वलय-निकरार्चित-चरण:, प्रलयानल-शिखाकलाप-कपिल-जटाभार-भ्रान्त-सुरसिन्धु:, (३) अन्धकारि:, (४) भगवान्, उत्सृष्ट-कैलास-वास-प्रीतिर्महाकालाभिधान: स्वयं प्रतिवसति (५)। (क)

त्रिशूलेन दारित: अन्धकोऽन्धकनामा महासुरो येन स:। गौर्य्या: प्रणयकुपिताया: पार्वत्या: नूपुरकोट्या पदाघातकाले मञ्जीराग्रदेशेन, घृष्टं विलिखितं शेखर: शिरोभूषणभूतं चन्द्रशकलं चन्द्रखण्डं यस्य स:। अत्रानेन विशेषणेन भगवतो न किमपि माहात्म्यं प्रकाशितमिति "सदा शिवं नौमि पिनाकपाणि"मिति दर्पणोदाहृतवदधिकपदतादोष:, स चैतत्परित्यागेनैव समाधेय:। त्रिपुरासुरस्य भस्मन: स्वयं कृतस्येति भाव:, रजसा रेणुना कृत: अङ्गराग: अङ्गलेपनं येन स:। मकरध्वजध्वंसेन कामदेवविनाशेन विधुरया तदीयशोकेन विह्वलया रत्या कामपत्न्या प्रसादयन्त्या अनुग्रहलाभाशया तमेव प्रसन्नीकुर्वत्या सत्या, प्रसारितात् चरणग्रहणाय विस्तारितात् करयुगलात् विगलितेन निपतितेन वलयनिकरेण गोलाकाराभरणसमूहेन अर्चितौ चरणौ यस्य स:। तथा प्रलयानलस्य प्रलयकालीनवह्ने: शिखाकलापवत् कपिले पिङ्गलवर्णे जटाभारे जटासमूहे भ्रान्त्वा पतित्वा घूर्णिता सुरसिन्धुर्गङ्गा यस्य स:। स्वयं भगवान् अन्धकारिर्महादेव:, उत्सृष्टा त्यक्ता कैलासवासस्य प्रीति: प्रमोदो येन स:, तथा महाकाल इत्यभिधानं नाम यस्य तादृशश्च सन् यस्यामुज्जयिन्यां प्रतिवसति। तथा च कथासरित्सागरे—

"यस्यां वसति विश्वेशो महाकालवपु: स्वयं। शिथिलीकृतकैलास-निवासव्यसनो हर:।"

एतेन कैलासादप्युत्कृष्टस्थानमुज्जयिनीति ध्वनितम्। तथात्र सुरासुरेत्यादिनैकेनैव विशेषणेनाभिप्रेतमाहात्म्यप्रकाशनिर्वाहे सत्यपि तदर्थ एव बहुतरविशेषणान्तरोपन्यासात् समुच्चयोऽलङ्कार:, प्रलयानलेत्यादौ लुप्तोपमा च, अनयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्कर:।

চূড়ামণির কিরণসমূহে যাঁহার চরণনখের রশ্মিসমূহ সংস্পৃষ্ট হইয়া থাকে; যিনি নিশিত ত্রিশূলদ্বারা মহাবলবান্ অন্ধকাসুরকে বিদীর্ণ করিয়াছিলেন; প্রণয়কুপিতা পার্ব্বতী যখন মস্তকে পদাঘাত করেন, তখন তাঁহার চরণনূপুরের অগ্রভাগদ্বারা যাঁহার মস্তকালঙ্কার চন্দ্রখণ্ড, ঘর্ষণ প্রাপ্ত হইয়া থাকে; যিনি ত্রিপুরাসুরকে ভস্ম করিয়া সেই ভস্মরেণুদ্বারা অঙ্গরাগ করিয়াছিলেন; কামদেবকে দগ্ধ করিলে পর তাঁহার শোকে বিহ্বল হইয়া রতি, পুনরায় অনুগ্রহলাভের প্রত্যাশায় প্রসন্ন করিতে আরম্ভ করিয়া চরণধারণ করিবার নিমিত্ত করযুগল প্রসারিত করিলে তাহা হইতে বলয়সমূহ (চুড়ীগুলি) নিপতিত হইয়া যাঁহার চরণযুগলের অর্চ্চনা করিয়াছিল, এবং প্রলয়কালের অগ্নির শিখাসমূহের ন্যায় পিঙ্গলবর্ণ যাঁহার জটাসমূহে নিপতিত হইয়া গঙ্গা বহুকাল ভ্রমণ করিয়াছিলেন; স্বয়ং সেই ভগবান্

---

(१) चन्द्रशकलशेखर:। (२)...करयुग...। (३)...अमरसिन्धु:। (४) अन्धकाराति:।
(५) वसति।

तस्याञ्चैवंविधायां नगर्य्यां नल-(१) नहुष-ययाति-धुन्धुमार-भरत-भगीरथ-दशरथप्रतिमः, (२) भुजवलार्जित-(३) भूमण्डलः, फलित-शक्तित्रयः, मतिमान्, उत्साह-सम्पन्नः, नीतिशास्त्राखिन्न-बुद्धिः, अधीत-धर्म्मशास्त्रः, तृतीय इव तेजसा कान्त्या च सूर्य्याचन्द्रमसोः, अनेक-सप्ततन्तु-पूत-मूर्त्तिः, उपशमित-सकल-जगदु-पप्लवः, (ख) विहाय कमल-वनानि, अविगणय्य (४) नारायण-वक्षःस्थल-वसति-सुखं, उत्फुल्लारविन्दहस्तया शूर-समागम-व्यसनिन्या (५) निर्व्याजमालिङ्गितो

अहो यदीयमुज्जयिनी वैद्युतशकट-जलयन्त्रादिविविधाश्चर्य्यशालिन्यभविष्यत् तदिदानीन्तनीं कलिकातानगरी-मप्यारयिष्यत्।

(ख) तस्यामिति। तस्याञ्चैवंविधायां नगर्य्यां राजा तारापीड़ो नामाभूदिति वक्ष्यमाणक्रिययान्वयः। अत्र प्रथमान्तपदानि तारापीड़ इत्यस्य विशेषणानि। धुन्धुमारः कुवलाश्वः।. नलादयः प्रतिमा उपमा यस्य सः। भुजवलेन अर्जितं आयत्तीकृतं भूमण्डलं येन सः। फलितं सफलं जातं शक्तित्रयं प्रभावोत्साह-मन्त्रजातशक्तित्रयं यस्य सः, नैपुण्यवशाददृष्टवशाच्चेति भावः। मतिमान् बुद्धिमान्। नीतिशास्त्रेषु अखिन्ना अनवरतालोचनयाप्यश्रान्ता बुद्धिर्यस्य सः। सूर्य्य इव तेजस्वी चन्द्रमा इव च कान्तिमानित्यर्थः। तृतीय इवेति द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः। सप्तभिः सप्तप्रकारच्छन्दोबद्धमन्त्रैस्तन्यत इति सप्ततन्तुर्यज्ञः पृषोदरादित्वात् साधुः। अनेकैः सप्ततन्तुभिः पूता पवित्रा मूर्त्तिः शरीरं यस्य सः। उपशमिताः स्वचेष्टादेवार्च्चनादिना निवारिताः सकला जगतां उपप्लवा विपदो येन सः।

(ग) विहायेति। उत्फुल्लं विकसितं अरविन्दं पद्मं हस्ते यस्यास्तया, एतेन विलाससामग्रीव्यव-स्थानुरागिण्येति व्यज्यते। शूरसमागमे वीरपुरुषसंसर्गे व्यसनिन्या आसक्तिमत्या, लक्ष्म्या राजश्रिया निर्व्याज-

---

মহাদেব, কৈলাসধামে বাস করার আমোদ পরিত্যাগ করিয়া যে উজ্জয়িনীতে মহাকাল নাম ধারণ করিয়া বাস করিতেছেন।

(খ) এইরূপ সেই উজ্জয়িনী নগরীতে নল, নহুষ, যযাতি, ধুন্ধুমার, ভরত, ভগীরথ ও দশরথের তুল্য, বুদ্ধিমান্ ও উৎসাহশীল 'তারাপীড়' নামে এক রাজা ছিলেন; তিনি বাহুবলে সমগ্র ভূমণ্ডল আয়ত্ত করিয়াছিলেন; তাঁহার প্রভুশক্তি, উৎসাহশক্তি ও মন্ত্রশক্তি সর্ব্বত্রই সফল হইত; সর্ব্বদা নীতিশাস্ত্র পর্য্যালোচনা করাতেও তাঁহার বুদ্ধি ক্লান্ত হইত না; তিনি সমগ্র ধর্ম্মশাস্ত্র অধ্যয়ন করিয়াছিলেন এবং তেজ ও সৌন্দর্য্যে সূর্য্য ও চন্দ্রের যেন তৃতীয় ব্যক্তি ছিলেন; বহুতর যজ্ঞ অনুষ্ঠান করায় তাঁহার দেহ পবিত্র হইয়াছিল; তিনি নানাবিধ উপায়ে জগতের সমস্ত উপদ্রব নিবারণ করিয়াছিলেন; (গ) প্রস্ফুটিত-পদ্ম-হস্তা এবং বীরপুরুষের সংসর্গে অনুরাগিণী স্বয়ং রাজলক্ষ্মী, পদ্মবন পরিত্যাগ করিয়া এবং নারায়ণের বক্ষঃস্থলে বাস করার

---

(१) नृग-नल…। (२)…दशरथ-जनमेजयार्जुनप्रतिमः। (३)…उपार्जित…।
(४) अवगणय्य। (५)…एकव्यसनिन्या, शूरसमागमैर्व्यसनिन्या।

लक्ष्म्या, (ग) महामुनिजन-संसेवितस्य मधुसूदन-चरण इव सुर-सरित्-प्रवाहस्य प्रभवः सत्यस्य, (घ) शिशिरस्यापि रिपुजन-सन्तापकारिणः स्थिरस्याप्यविरतं (१) भ्रमतः, निर्म्मलस्यापि मलिनीकृतारातिवनिता-मुखकमल-द्युतेः, अतिधवलस्यापि सर्वजनरागकारिणः, सुधासूतेरिव जलनिधि-(२) रुद्भवो यशसः, (ङ)

मकपटमालिङ्गितः। एतेन कमलवनादपि नारायणादपि च सुखवसतिस्थानं राजेति व्यतिरेकालङ्कारो व्यज्यत इति वस्तुनालङ्कारध्वनिः, तथा राज्ञोऽपि नितान्तविलासित्वं महावीरत्वञ्च ध्वन्यत इति वस्तुना वस्तुध्वनिश्च।

(घ) महेति। महामुनिजनैः संसेवितस्य व्यवहारेण धर्म्मार्जनार्थं अवगाहनेन धर्म्मार्जनार्थञ्च सततमाश्रितस्य, सुरसरित्प्रवाहस्य गङ्गास्रोतसः, मधुसूदनचरण इव विष्णोः पाद इव, सत्यस्य सत्यव्यवहारस्य, प्रभवत्यस्मादिति प्रभव उत्पत्तिस्थानम्। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(ङ) शिशिरस्येति। शिशिरस्यापि शीतलस्यापि, रिपुजनस्य शत्रुलोकस्य विरहिलोकस्य च सन्तापकारिण इति विरोधः, ईर्ष्यया कामोद्दीपनया च चित्तक्षोभकरस्येति तत्समाधानं। स्थिरस्य निश्चलस्यापि अविरतं भ्रमत इति विरोधः, स्थिरस्य चिरस्थायिनः नित्याकाशस्थायिनश्च, अविरतं भ्रमतः लोकपरम्परया गीयमानत्वात् सर्वासु दिक्षु गच्छतः, सर्वदा राशिचक्रे घूर्णमानस्य चेति तत्परिहारः। निर्म्मलस्येत्यादौ विरोधः स्फुट एव, समाधानन्तु विद्वेषान्मदनवेदनावशाच्च मलिनीकृता अरातिवनितानां शत्रुस्त्रीणां विरहिस्त्रीणाञ्च मुखकमलद्युतिर्येनेति। अतिधवलस्यापि सर्वेषु जनेषु रागकारिणो रक्तिमविधायिन इति विरोधः, सर्वेषां जनानां रागकारिण आत्मन्यनुरागविधायिन इति समाधानम्। एवम्भूतस्य सुधासूतेः सुधाकरस्य चन्द्रस्य जलनिधिः समुद्र इव, एवम्भूतस्य यशसः, उद्भवत्यस्मादित्युद्भव आकरः। अत्र विरोधालङ्कारचतुष्टयसङ्कीर्णा पूर्णोपमालङ्कारः।

সুখ গণনা না করিয়া অকপটে তাঁহাকে আলিঙ্গন করিয়াছিলেন ; (ঘ) বিষ্ণুর চরণ যেমন মহর্ষিসেবিত গঙ্গাপ্রবাহের উৎপত্তিস্থান, তিনিও তেমন মহর্ষিসেবিত সত্যের উৎপত্তিস্থান ছিলেন ; (ঙ) সমুদ্র যেমন চন্দ্রের আকর, তিনিও তেমন যশের আকর ছিলেন ; চন্দ্র যেমন শীতল হইয়া বিরহিগণের সন্তাপ জন্মান (কামোদ্দীপনানিবন্ধন চিত্তের ক্ষোভ জন্মান,) তাঁহার সেই যশও তেমন শীতল হইয়াও শত্রুদিগের সন্তাপ জন্মাইত ; (ঈর্ষ্যাবশতঃ চিত্তের ক্ষোভ জন্মাইত ;) চন্দ্র যেমন স্থির হইয়াও সর্ব্বদা ভ্রমণ করেন, (আকাশে স্থায়ী হইয়া রাশিচক্রের সঙ্গে সঙ্গে ভ্রমণ করেন,) তাঁহার যশও তেমন স্থির হইয়াও সর্ব্বদা ভ্রমণ করিত ; (চিরস্থায়ী হইয়া লোকমুখে চতুর্দ্দিকে চলিয়া যাইত ;) চন্দ্র যেমন নির্ম্মল হইয়াও বিরহিণী রমণীগণের বদনকমলের কান্তি মলিন করেন, (মদনবেদনা জন্মাইয়া মলিন করেন,) তাঁহার যশও তেমন নির্ম্মল হইয়াও শত্রুস্ত্রীদিগের মুখকমলের শোভা মলিন করিত ; (বিদ্বেষবশতঃ মলিন করিত ;) চন্দ্র যেমন অতিশয় ধবল হইয়াও সকল লোকের রক্তিমা (অনুরাগ) জন্মাইয়া থাকেন, তাঁহার যশও তেমন অতিশয়

---

(१) निरन्तरं। (२) सागरः।

पातालवदाश्रितो (१) निजपक्षक्षतिभीतैः (२) क्षितिभृतां कुलैः, (३) (च) ग्रहगण इव बुधानुगतः, (छ) मकरध्वज इवोत्सन्न-विग्रहः, (ज) दशरथ इव सुमित्रोपेतः (झ) पशुपतिरिव महासेनानुयातः, (ञ) भुजगराज इव क्षमाभरगुरुः, (ट) नर्म्मदा-प्रवाह इव महावंशप्रभवः, (ठ) अवतार इव धर्म्मस्य, प्रति-

---

(च) पातालवदिति। निजपक्षाणां आत्मीयजनानां स्वकीयपतत्राणाञ्च या क्षतिः विरुद्धतारापीड़तो हानिः इन्द्रेण च्छेदनञ्च ततो भीतैः क्षितिभृतां राज्ञां पर्वतानाञ्च कुलैः समूहैः पातालमिव पातालवत् आश्रितः तारापीडः। इन्द्रकर्त्तृकपक्षच्छेदभीतैः पर्वतगणैर्यथा पातालमाश्रितं तथा विरुद्धतारापीडकर्त्तृकस्वजनहानिभीतैः राजगणैः स आश्रित इति सरलार्थः। पूर्णोपमा।

(छ) ग्रहेति। ग्रहगण इव, बुधैः पण्डितैः, बुधेन सौम्येन चानुगतः। पूर्णोपमा।

(ज) मकरेति। मकरध्वजः कामदेव इव, उत्सन्नो विनष्टः विग्रहो युद्धं शरीरञ्च यस्य सः, एकत्र नीतिकौशलादन्यत्र हरनयनाग्निना दाहादिति भावः। पूर्णोपमा।

(झ) दशेति। दशरथो राजेव, सुमित्रैरुत्तमसुहृद्भिः, सुमित्रया लक्ष्मणजनन्या च उपेतो युक्तः। पूर्णोपमा।

(ञ) पश्विति। पशुपतिः शिव इव, महासेनया विशालसैन्येन, कार्त्तिकेयेन च अनुयातः अनुगतः। पूर्णोपमा।

(ट) भुजगेति। भुजगराजः अनन्तनाग इव, क्षमाभरेण क्षमागुणबाहुल्येन, धारणात् पृथिवीभारेण च गुरुर्गौरवान्वितः भारवांश्च। पूर्णोपमा।

(ठ) नर्म्मदेति। नर्म्मदाया नद्याः प्रवाह इव, महावंशात् प्रशस्तकुलात् विशालवेणुनिकरमध्याच्च प्रभवति उत्पद्यत इति सः। पूर्णोपमा। मेखलाचलस्थवेणुनिकरमध्यान्नर्म्मदाया उत्पत्तिरिति प्रवादः।

ধবল হইয়াও সকল লোকের রক্তিমা (অনুরাগ) জন্মাইত; (চ) পর্ব্বতগণ যেমন ইন্দ্রকর্ত্তৃক আপনাদের পক্ষচ্ছেদনের ভয়ে পাতাল আশ্রয় করিয়াছিল, অন্যান্য রাজগণও তেমন নিজেদের ক্ষতির ভয়ে তারাপীড়কে আশ্রয় করিয়াছিলেন; (ছ) বুধ যেমন অন্যান্য গ্রহগণের অনুগমন করেন, পণ্ডিতগণও তেমন তারাপীড়ের অনুগমন করিতেন; (জ) কামদেবের যেমন দেহ নাই, তারাপীড়েরও তেমন যুদ্ধ ছিল না; (ঝ) রাজা দশরথ যেমন সুমিত্রানামে ভার্য্যার সহিত সম্মিলিত ছিলেন, তারাপীড়ও তেমন উত্তম সুহৃদ্‌গণের সহিত সম্মিলিত ছিলেন; (ঞ) কার্ত্তিক যেমন শিবের অনুগমন করেন, বিশাল সৈন্যমণ্ডলীও তেমন তারাপীড়ের অনুগমন করিত; (ট) নাগরাজ অনন্ত যেমন পৃথিবী ধারণ করায় ভারবান্, তারাপীড়ও তেমন অতিশয় ক্ষমাগুণে গৌরবসম্পন্ন ছিলেন; (ঠ) নর্ম্মদানদীর প্রবাহ যেমন বিশাল বংশসমূহ (বাঁশঝাড়) হইতে উৎপন্ন হইয়াছে, তারাপীড়ও তেমন উচ্চ কুল হইতে উৎপন্ন হইয়াছিলেন;

---

(१) पाताल इव। (२) क्षितिभीतैः। (३) क्षितिबलकुटिलैः।

निधिरिव पुरुषोत्तमस्य, परिहृत-(१) प्रजापीडो राजा तारापीडो नामाभूत् (२)। (ङ)

यस्तमः-प्रसर-मलिनवपुषा पापबहुलेन कलिकालेन चालितमामूलतो धर्म्मं दशाननेनेव कैलासमिव (३) पशुपतिरिवाष्टभ्य पुनरपि स्थिरीचकार (४)। (ढ)

यस्य रति-प्रलाप-जनित-(५) दयार्द्र-हृदय-हर-निर्म्मितमपरमिव (६) मकरकेतुममंस्त लोकः। (ण)

(ङ) भवेति। धर्म्मस्य धर्म्मराजस्य अवतार इव, रूपान्तरेणोत्पन्नः अंश इव, सर्वदा न्यायसत्यानुसरणादित्याशयः। पुरुषोत्तमस्य नारायणस्य प्रतिनिधिरिव साहश्यात् कार्य्यभारप्राप्त इव, सर्वदा जगत्परिपालनपरायणत्वादिति भावः। उभयत्रापि उत्प्रेक्षालङ्कारः। परिहृता परित्यक्ता प्रजानां पीडा दुर्वहकरभारार्पणादिजनितयातना येन सः।

(ढ) य इति। पशुपतिर्महादेव इव यस्तारापीडः, दशाननेन रावणेनेव, तमसां तमोगुणानां प्रसरेण बाहुल्येन मलिनं वपुर्यस्य तेन, तथा पापमेव बहुलं अतिरिक्तं यस्मिन् तेन, कलिकालेन आमूलतः मूलादवधि चालितं स्वस्थानाद्भ्रंशयितुमुपक्रान्तं, कैलासं पर्वतमिव धर्म्मं, अवष्टभ्य सर्वतः श्रौतस्मार्त्तविधानप्रवर्त्तनेन पादाङ्गुष्ठनिर्भरेण च आश्रित्य, पुनरपि स्थिरीचकार निश्चलं कृतवान्। अत्र तिसृणामेवोपमानामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। पुरा किल परमशैवेन दशाननेन शिवार्च्चनाय प्रतिदिनं लङ्कातः कैलासागमनपरिश्रमं परिजिहीर्षुणा तमचलमुत्तोल्य लङ्कायां नीयमानं भगवान् महेश्वरश्चरणाङ्गुष्ठभरेण पुनरपि स्वस्थाने स्थापयामासेति रामायणवार्त्ता।

(ण) यमिति। रतेः कामभार्य्यायाः प्रलापेन कामदेवविनाशजनितशोकात् विलापेन, जनिता या दया तया आर्द्रं हृदयं यस्य तेन हरेण शिवेन निर्म्मितं अपरं मकरकेतुं कामदेवमिव यं तारापीडं अमंस्त मनसि चकार। अत्र उत्प्रेक्षालङ्कारः। तेन चास्य परमसौन्दर्य्यं व्यज्यत इत्यलङ्कारेण वस्तुध्वनिः।

(ড) আর তিনি, ধর্ম্মের যেন অবতার এবং নারায়ণের যেন প্রতিনিধিস্বরূপ ছিলেন এবং প্রজাগণের কোনরূপ পীড়ন করিতেন না।

(ঢ) রাবণ কৈলাসপর্ব্বতকে মূল হইতে সঞ্চালিত করিলে মহাদেব চরণাঙ্গুষ্ঠের ভরে যেমন পুনরায় তাহাকে স্থির করিয়াছিলেন, সেইরূপ তমোগুণের বাহুল্যনিবন্ধন কৃষ্ণবর্ণ এবং অধিকপরিমাণে পাপশালী কলিকাল ধর্ম্মকে মূল হইতে সঞ্চালিত করিলে তারাপীড় শ্রুতি ও স্মৃতির বিধান প্রবর্ত্তিত করিয়া সেই ধর্ম্মকে পুনরায় স্থির করিয়াছিলেন।

(ণ) এবং মহাদেব রতির বিলাপে দয়ার্দ্রচিত্ত হইয়া আর একটি কামদেব যেন নির্ম্মাণ করিয়া রাখিয়াছেন বলিয়া যে তারাপীড়কে সকলে মনে করিত।

---

(१) परिहृत...। (२) तारापीडोऽभूत्, तारापीडोऽभवत्। (३) कैलासं। (४) चक्रे।
(५)...उपजनित। (६) अपरं।

यश्च जलनिधि-तरङ्ग-धौत-मेखलात् पत्रान्तर-(१) विचारि-तारागण-द्विगुणित-तट-तरु-कुसुम-प्रकरात् उद्यदिन्दु-विम्ब-विगलदमृत-बिन्दासारार्द्र-(२) चन्दनात् अशिशिरकर-रथ-तुरङ्ग-(३) खुर-शिखरोल्लेख-खण्डितोल्लसल्लवङ्ग-(४) पल्लवात् ऐरावत-कर-(५) लून-शल्लकी-किसलयात् (६) आ शैलादुदयनाम्नः, (त) कपिवल-(७) विलुप्त-विरल-लवलीलता-फलात् उदधि-विनिर्गत-जलदेवताभिवन्द्य-मान-राघवपादात् अचल-पात-(८) दलित-शङ्खकुल-शकल-तारकित-शिलातलात्

(त) यश्चेति। अपि चेति चार्थः। पूर्वदिगवस्थितादुदयशैलात् दक्षिणदिगवस्थितात् सेतुबन्धात् पश्चिमदिगवस्थितान्मन्दराचलात् उत्तरदिगवस्थिताच्च गन्धमादनशैलादारभ्य अवनीपतयो राजानो यं प्रणेमुरिति वक्ष्यमाणक्रिययान्वयः। अत्र पञ्चम्यन्तपदानि तेषामचलानां विशेषणानि। तत्रादावुदयशैलविशेषणान्याह जलनिधीति। जलनिधेः पूर्वसागरस्य तरङ्गैर्धौता मेखला मध्यभागो यस्य तस्मात्। पत्रान्तरविचारिभिः अत्युच्चतया नक्षत्रमण्डलस्पर्शित्वात् पर्णमध्यसञ्चारिभिः, तारागणैर्नक्षत्रसमूहैः, द्विगुणितः कुसुमतुल्यवर्णत्वात् द्विगुणीकृतः तटतरूणां खोदेशस्थवृक्षाणां कुसुमप्रकरो यस्य तस्मात्। उद्यत उदयमानात् इन्दुबिम्बात् चन्द्रमण्डलात् विगलतां अमृतबिन्दूनां आसारेण धारासम्पातेन आर्द्राश्चन्दना वृक्षा यस्मिन् तस्मात्। अशि-शिरकरस्य सूर्य्यस्य ये रथतुरङ्गा रथनियुक्तघोटकास्तेषां खुरशिखरैः खुराग्रभागैर्य उल्लेखो घर्षणं तेन खण्डि-तानि छिन्नानि अतएव उल्लसन्ति स्फुरन्ति लवङ्गपल्लवानि यस्मिन् तस्मात्। ऐरावतस्य हस्तिनः करेण शुण्डया लूनानि छिन्नानि शल्लकीनां हस्तिखाद्यवृक्षविशेषाणां किसलयानि पल्लवानि यस्मिन् तस्मात्। उदयनाम्नः शैलात् आ आरभ्येत्यर्थः। अत्र पत्रान्तरेत्यादौ, उद्यदित्यादौ, अशिशिरेत्यादौ च विशेषणे प्रत्येकमसम्बन्धे सम्बन्धरूपातिशयोक्तिरलङ्कारः, तेषाञ्च मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(थ) सेतुबन्धं विशेषयन्नाह कपीति। कपिवलेन लङ्कागमनसमये वानरसैन्येन विलुप्तानि भक्षणाय छिन्नानि अतएव विरलानि अल्पीभूतानि लवलीलतानां फलानि यस्मिन् तस्मात्। उदधेः सागरात् विनिर्ग-

---

(ত) পূর্ব্বদিকে উদয়াচল হইতে আরম্ভ করিয়া সমস্ত রাজগণ আসিয়া যে তারাপীড়কে নমস্কার করিতেন। সমুদ্রের তরঙ্গে যে উদয়াচলের মধ্যস্থান ধৌত হইতেছে; যে উদয়াচলের উপরিস্থিত বৃক্ষসমূহের পত্রের অভ্যন্তরে বিচরণকারী নক্ষত্রসমূহে কুসুমসমূহকে যেন দ্বিগুণ করিয়াছে বলিয়া প্রতীতি হইয়া থাকে; উদয়মান চন্দ্রমণ্ডল হইতে নিঃসৃত অমৃতবিন্দুর বৃষ্টিতে যে উদয়াচলের চন্দনবৃক্ষ সকল আর্দ্র হইয়া যায়; সূর্য্যের রথে নিযুক্ত অশ্বগণের খুরের আঘাতে যে উদয়াচলের লবঙ্গপল্লবগুলি ছিন্ন হইয়া স্পন্দিত হইতে থাকে; এবং ঐরাবতহস্তী শুণ্ডদ্বারা যে উদয়াচলের শল্লকীবৃক্ষের পল্লবগুলি ছিন্ন করিয়া থাকে।

(থ) আর দক্ষিণদিকে সেতুবন্ধ হইতে আরম্ভ করিয়া সমস্ত রাজগণ আসিয়া যে তারা-পীড়কে নমস্কার করিতেন। রামের সঙ্গে লঙ্কায় যাইবার সময়ে বানরসৈন্যগণ অধিকপরিমাণে

---

(१) पत्रान्तः...। (२) दुर्द्दिनार्द्र...। (३)...तुरग...। (४)...लवङ्ग...। (५)...करतल..., करतलरोध..., करलूनश्रोध...। (६)...कवलात्। (७) कपिकुल...। (८) निपत...।

नल-करतलाकलित-शैल-सहस्र-सम्भूतादा सेतुबन्धात्, (थ) स्वच्छ-निर्भर-जल-धौत-तारका-सार्थात् अमृत-मथनोद्यत-वैकुण्ठ-केयूरपत्र-मकरकोटि-कषण-मसृणित-ग्रावणः सुरासुर-हेला-वलयित-(१) वासुकि-समाकर्षण-प्रारम्भ-चलित-(२) चरण-भर-दलित-नितम्बात् (३) अमृत-सीकर-सिक्तसानोरा मन्दराचलात् (४),(द)

तया उत्थितया जलदेवतया अभिवन्द्यमानाः पूज्यमानाः राघवस्य रामस्य पादाः चरणचिह्नानि यस्मिन् तस्मात्। अचलानां शैलानां पातेन निक्षेपेण सेतुबन्धनसमये पर्वतनिक्षेपाघातेनेत्यर्थः दलितानां भग्नानां शङ्खकुलानां शकलैः खण्डैः तारकितानि सञ्जाततारकाणि शिलातलानि यस्मिन् तस्मात्। नलस्य तदाख्यस्य विश्वकर्म्मपुत्रस्य वानरप्रधानस्य करतलेन आकलितेन संस्थापितेन शैलसहस्रेण पर्वतसमूहेन सम्भूतात् उत्पन्नात् सेतुबन्धात् आ आरभ्य। अत्र शङ्खकुलशकलतारकितेत्यनेन शङ्खखण्डा एव नक्षत्रश्रेणितया प्रतीयन्ते स्मेति तात्पर्य्याद्भ्रान्तिमानलङ्कारो व्यज्यते।

(द) मन्दराचलं विशेषयन्नाह स्वच्छेति। स्वच्छैर्निर्म्मलैः निर्भरजलैः धौतः प्रक्षालितः तारकाणां नक्षत्राणां सार्थः समूहो यस्मिन् तस्मात्, अत्युच्चतया नक्षत्रमण्डलस्पर्शित्वादिति भावः। अमृतमथने सागर-मन्थनपूर्वकामृतोत्तोलन इत्यर्थः, उद्यतस्य प्रवृत्तस्य वैकुण्ठस्य विष्णोः, केयूरपत्राणां पत्राकारबाहुभूषणविशेषाणां या मकरकोटयः मकराकाराग्रभागाः तेषां कषणेन घर्षणेन मसृणिताः श्लक्ष्णीकृताः ग्रावाणः पाषाणा यस्य तस्मात्। सुरासुरैः हेलया वलयितौ मण्डलीकृतौ यो वासुकिरनन्तनागस्तस्य समाकर्षणप्रारम्भेण चलितानां चरणानां तेषामेव सुरासुराणां पादानां भरेण दलितौ मर्द्दितौ नितम्बौ मध्यदेशौ यस्य तस्मात्। अमृतस्य उत्तिष्ठन्त्याः सुधायाः, सीकरैर्विन्दुभिः सिक्ताः सानवः प्रस्थदेशा यस्य तस्मात्, मन्दराचलात् आ आरभ्य। पुरा किल नारायणेन कूर्म्मरूपेण पृष्ठे धृतं ऊर्द्धे च विष्णुरूपेणैव बाहुभ्यामावेष्ट्य रक्षितं मन्दराचलं मन्थानदण्डं, वासुकिञ्च रज्जुं विधाय सुरासुराः सागरं मथितवन्त इति महाभारतवार्त्ता।

নিয়া গিয়াছিল বলিয়া যে সেতুবন্ধে লবলীফল (নোয়াড়ি, লোয়াইল) অঙ্ক হইয়া গিয়াছে ; জলদেবতাগণ সমুদ্র হইতে নির্গত হইয়া যে সেতুবন্ধস্থিত রামচন্দ্রের চরণচিহ্নগুলির পূজা করিয়া থাকে ; নিক্ষিপ্ত পর্ব্বতের আঘাতে চূর্ণিত শঙ্খসমূহের খণ্ডগুলি যে সেতুবন্ধের প্রস্তর সকলের উপরে নক্ষত্রপুঞ্জের ন্যায় প্রতীতি হইয়াছিল ; এবং বানরশ্রেষ্ঠ নলের হস্তনিক্ষিপ্ত পর্ব্বতসমূহে যে সেতুবন্ধ নির্ম্মিত হইয়াছিল। (দ) এবং পশ্চিমদিকে মন্দরপর্ব্বত হইতে আরম্ভ করিয়া সমস্ত রাজগণ আসিয়া যে তারাপীড়কে নমস্কার করিতেন। যে মন্দরপর্ব্বতের নির্ঝরজলে নক্ষত্ররাশি ধৌত হইয়াছিল ; অমৃতমন্থনে প্রবৃত্ত বিষ্ণুর কেয়ূরসমূহের মকরাকার অগ্রভাগের ঘর্ষণে যে মন্দরপর্ব্বতের পাষাণসমূহ মসৃণ (পালিস) হইয়াছিল ; দেব ও দানবগণ অবহেলায় মণ্ডলীকৃত বাসুকিনাগের আকর্ষণ আরম্ভ করিলে তাঁহাদের চঞ্চল চরণসমূহের ভরে যে মন্দরাচলের মধ্যদেশ মর্দ্দিত হইয়াছিল আর উত্থিত অমৃতবিন্দুসমূহে মন্দরাচলের অনেক

(१) सुरासुरावलयित...। (२)...आरम्भचलचरण..., ...चलाविलतचरण...। (३) नितम्बकटकात्। (४) मन्दरात्।

नर-नारायण-चरण-मुद्राङ्कित-वदरिकाश्रम-रमणीयात् कुवेर-पुर-सुन्दरी-भूषण-रव-मुखर-शिखरात् सप्तर्षि-सन्ध्योपासना-पूत-प्रस्रवणाम्भसः वृकोदरोद्दलित-सौगन्धिक-षण्ड-सुगन्धि-मेखलात् (१) आ गन्धमादनात्, (ध) सेवाञ्जलि-कमल-मुकुल-दन्तुरैः (२) शिरोभिश्चरण-नख-मयूख-(३) ग्रथित-मुकुटपत्रलता-ग्रन्थयो भय-चकित-तरल-तारक-(४) दृशो भुजवल-विजिताः प्रणमुरवनी-पतयः (५)। (न)

(ध) गन्धमादनं विशेषयन्नाह नरेति। नरनारायणयोस्तदाख्ययोर्मुन्योः चरणमुद्राभिः पादन्यासचिह्नैः अङ्कितश्चिह्नितो यो वदरिकाश्रमस्तेन रमणीयात्। कुवेरपुरसुन्दरीणां अलकानगरीस्थरमणीनां भूषणरवैः मुखराणि सशब्दानि शिखराणि शृङ्गाणि यस्य तस्मात्। सप्तर्षीणां मरीच्यादीनां सन्ध्योपासनया पूतानि पवित्राणि प्रस्रवणाम्भांसि निर्झरजलानि यस्य तस्मात्। तथा वृकोदरेण भीमसेनेन उद्दलितं आमर्द्दितं यत् सौगन्धिकषण्डं कह्लारसमूहस्तेन सुगन्धिर्मेखला मध्यभागो यस्य तस्मात्। गन्धमादनात् आ आरभ्य। यदा तु द्यूतनिर्जिताः पाण्डवा द्वैतवनमध्यासीना आसन्, तदा द्रौपद्या अभिलाषात् भीमेन गन्धमादनाद्गन्धर्वान् विजित्य सौगन्धिकान्याहृतानीति महाभारतवार्त्ता।

अहो इत्थमनुपयोगिनी वर्णना खल्वलाबुलम्बितस्तनी वातपरिपीवरशरीरा प्रौढ़नारीव नितरां विरक्तिमाव-हति प्रकृतरसिकानाम्।

(न) अथावनीपतीन् विशेषयन्नाह सेवेति। सेवाञ्जलय एव आनुगत्यप्रदर्शनाय ललाटे करयुगल-संयोगा एव कमलमुकुलानि पद्मकलिका अथवा सेवाञ्जलयः कमलमुकुलानीव, तैर्दन्तुराणि विषमाणि तैः। अत्र साधकवाधकप्रमाणाभावादुपमारूपकयोः सन्देहसङ्करः। शिरोभिर्मस्तकैर्विशिष्टाः। चरणनखमयूखै-स्तारापीड़स्य पदनखरकिरणैः ग्रथिता नमस्कारकाले संस्पृष्टाः मुकुटानां अवनीपतीनामेव किरीटानां पत्र-लताग्रन्थयः पत्रलताकाराग्रदेशबन्धनानि येषां ते। भयेन चकिता अधीराः तरला भास्वराः, "तरलो भास्वरे

স্থান সিক্ত হইয়াছিল। (ধ) আবার উত্তরদিকে গন্ধমাদনপর্ব্বত হইতে আরম্ভ করিয়াও সমস্ত রাজগণ আসিয়া যে তারাপীড়কে প্রণাম করিতেন। যে গন্ধমাদনপর্ব্বত নর ও নারায়ণ ঋষির চরণচিহ্নে চিহ্নিত বদরিকাশ্রমদ্বারা মনোহর; আর কুবেরের রাজধানী অলকানগরীস্থিত রমণীগণের অলঙ্কারের শব্দে যাহার শৃঙ্গগুলি শব্দায়মান, এবং সপ্তর্ষিগণ সন্ধ্যোপাসনা করায় যাহার নির্ঝর-জল পবিত্র হইয়েছে আর ভীমসেনকর্ত্তৃক কহ্লারবন (সুঁদি সাপলার বন) দলিত হওয়ায় যাহার মধ্যভাগ সৌরভময় হইয়াছিল। (ন) নমস্কার করিবার সময়ে সেই সকল রাজগণ ললাটদেশে কমলকলিকার ন্যায় অঞ্জলিবন্ধন করিলে তাঁহাদের মস্তক উঁচু নীচু হইয়া যাইত, তারাপীড়ের চরণনখের কিরণে তাঁহাদের কিরীটের পত্রলতাগ্রন্থিগুলি সংস্পৃষ্ট হইত, আর ভয়ে উজ্জ্বল নয়নের তারাগুলি কাঁপিতে থাকিত; কারণ—তাঁহারা সকলেই তারাপীড়ের বাহুবলে নির্জ্জিত হইয়াছিলেন।

---

(१)...मखलात्। (२) मुकुलैर्दन्तुरैः। (३)...मयूखाग्र...। (४)...तार...। (५) अवनिपाः।

येन चानेक-रत्नांशुजाल-(१) पल्लविते व्यालम्बिमुक्ताफलजालके (२) दिग्गजेनेव कल्पतरावाक्रान्ते सिंहासने भरेण शिलीमुखव्यतिकरकम्पिता लता इव नेमुरायामिन्यः सर्व्वा दिशः (३)। (प)

यस्य च मन्येऽनन्यसाधारणशक्तिसम्पदे (४) सुरपतिरपि स्पृहयाञ्चकार। (फ)

यस्माच्च धवलीकृत-भुवनतलः सकल-लोक-हृदयानन्दकारी क्रौञ्चादिव हंस-निवहो निर्जगाम गुणगणः। (ब)

चक्षी" इत्यादि हेमः, तारका कनीनिका यासां तास्तथोक्ता दृशश्चक्षूंषि येषां ते। भुजबलेन तारापीडस्यैव बाहुबलेन विजिता आयत्तीकृताः।

(प) येनेति। दिग्गजेन कल्पतराविव येन तारापीडेन, अनेकेषां रत्नानां स्वर्णनिविष्टानां मणीनां अंशुजालैः किरणसमूहैः पल्लविते सर्व्वतः प्रसरणाद्विस्तारिते सञ्जातानेकरत्नांशुजालात्मककिसलये च, तथा व्यालम्बि लम्बमानं मुक्ताफलजालं मुक्तामाला यस्मिन् तादृशे सिंहासने आक्रान्ते आरूढ़े धृते च सति, भरेण तदीयभारेण, शिलीमुखानां तत्कल्पतरूत उड्डीय पततां भ्रमराणां बाणानाञ्च व्यतिकरेण सम्पर्केण कम्पिता लता इव तत्कल्पतरुसन्निहिता वल्ल्य इव, आयामिन्यो दीर्घाः सम्पूर्णा इत्यर्थः सर्व्वा दिशो नेमुः आयत्ता अवनताश्च बभूवुः। अत्र पूर्णोपमयोर्मिथः सापेक्षत्वात् सङ्करः।

(फ) यस्येति। सुरपतिरिन्द्रोऽपि, अनन्यसाधारणशक्तिसम्पदे यस्मै च तारापीडाय स्पृहयाञ्चकार तथाविधामात्मनः शक्तिसम्पदमभिलषितवानित्यर्थः। इत्यहं मन्ये इति वाचकशब्दसद्भावादेव वाच्या क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ब) यस्मादिति। क्रौञ्चात् पर्व्वतात् हंसनिवह इव। गुणगणो दयादाक्षिण्यादिः। निर्जगाम तमनुचिकीर्षूणां जनानां हृदय इति शेषः। अत्रोपमालङ्कारः। पुरा किल भार्गवो भगवतो महेश्वरादस्त्र-

---

(प) কোন দিগ্‌হস্তী কল্পবৃক্ষকে আক্রমণ করিলে তাহা হইতে ভ্রমরগণ যাইয়া বসিলে তাহাদের ভরে কম্পিত হইয়া নিকটবর্ত্তী লতাসমূহ যেমন অবনত হইয়া পড়ে; সেইরূপ, বহুতর রত্ন-কিরণে বিস্তৃত এবং লম্বমান মুক্তামালাসংযুক্ত সিংহাসনে মহারাজ তারাপীড় আরোহণ করিলে তাঁহার ভরে এবং বাণপ্রহারের ভয়ে কম্পিত হইয়া সকল দিক্ তাঁহার নিকট সম্পূর্ণরূপে অবনত হইয়াছিল।

(ফ) আমি মনে করি—স্বয়ং দেবরাজ ইন্দ্রও, তারাপীড়ের অসাধারণ শক্তি ও সম্পদ দেখিয়া তদনুরূপ শক্তি ও সম্পদ লাভ করিবার ইচ্ছা করিতেন।

(ব) পূর্ব্বকালে ক্রৌঞ্চপর্ব্বত হইতে হংসগণ যেমন নির্গত হইয়াছিল, সেইরূপ দয়াদাক্ষিণ্য

---

(१) अंशुकजाल, अंशुजाल...। (२)...मुक्ताजालके। (३) सर्व्वदिशः। (४) मन्ये सुर...।

यस्य चामृतामोद-सुरभिपरिमलया मन्दरोद्धत-(१) बहुल-दुग्धसिन्धु-फेन-लेखयेव धवलीकृतसुरासुरलोकया दशसु दिक्षु मुखरित-भुवनमभ्रम्यत (२) कीर्त्त्या। (भ) यस्य चातिदुःसह-प्रताप-सन्ताप-खिद्यमानेव क्षणमपि न मुमोचातपत्रच्छायां (३) राजलक्ष्मीः। (म) तथा च यस्य (४) दिष्टिवृद्धिमिव शुश्राव, उपदेशमिव जग्राह, मङ्गलमिव (५) बहु मेने, मन्त्रमिव जजाप, आगममिव (६) न विसस्मार चरितं जनः। (य)

र्वर्द्धं शिक्षमाणः कदाचित् कार्त्तिकेयेन स्पर्द्धमानः शरेण क्रौञ्चगिरिं विदारयामास, तद्विवराच्च हंसा निर्गता इति ब्रह्मवैवर्त्तवार्त्ता।

(भ) यस्येति। अमृतामोदवत् सुधागन्धवत् मथनोत्थितामृतामोदेन च सुरभिर्घ्राणतर्पणः परिमलो गन्धो यस्यास्तया, तथा धवलीकृताः सुरासुरलोकाः जगद्व्यापनात् देवलोकदानवलोकाः मथनप्रवृत्ता देव-दानवाश्च यया तया। मन्दरेण घूर्णितमन्दराचलेन उद्धता उत्तोलिता बहुला या दुग्धसिन्धोः क्षीरोदसागरस्य फेनलेखा तयेव, यस्य कीर्त्त्या, मुखरितं स्वकीयालोचनाशब्दैः आलोड़नशब्दैश्च शब्दायमानीकृतं भुवनं यस्मिन् कर्म्मणि तत् यथा तथा दशसु दिक्षु अभ्रम्यत। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः। "कीर्त्त्याः सौगन्ध्यं वर्ण्यं त" इति भानुचन्द्रधृतात् अमृतामोदेत्याद्युक्तः कीर्त्तेः परिमलः ख्यातिविरुद्धोऽपि गुण एव। तथा च दर्पणः— "कवीनां समये ख्याते गुणः ख्यातविरुद्धता।" अभ्रम्यतेति भावे लङ्।

(म) यस्येति। राजलक्ष्मीः, अतिदुःसहः प्रतापः कोषदण्डजातं तेज एव प्रतापः सूर्य्यादितेजः तस्माद् यः सन्ताप उष्णता तेन खिद्यमानेव क्लिश्यमानेव सती क्षणमपि यस्य आतपत्रच्छायां राजच्छत्रस्य अनातपतलस्थलं न मुमोच सूर्य्यादितापतप्तस्य छायाश्रयणस्यावश्यकत्वादिति भावः। अत्र कोषदण्डजतेजः-सूर्य्यादितेजसोर्भेदेऽपि श्लेषेणाभेदाध्यवसायादतिशयोक्तिः क्रियोत्प्रेक्षा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(य) तथाचेति। तथाच अपिचेत्यर्थः। जनो लोकः यस्य चरितं शौर्य्यदयादिकं दिष्टिवृद्धिमिव दैवज्ञ-मुखात् स्वकीयभाग्योपचयमिव लोकमुखात् शुश्राव, लालसया कौतुकेन च आग्रहातिशयसम्भवादिति भावः।

প্রভৃতি গুণগ্রাম, সমগ্র জগৎ শুভ্রবর্ণ করিয়া এবং সকল লোকের চিত্তে আনন্দ জন্মাইয়া যে তারাপীড় হইতে নির্গত হইয়াছিল।

(ভ) আর, অমৃতসৌরভের ন্যায় নাসিকার তৃপ্তিজনক সৌরভসম্পন্ন, এবং মন্দরপর্ব্বতের আলোড়নে বহুপরিমাণে উত্থিত ক্ষীরোদসাগরের ফেনরাশির ন্যায় শুভ্রবর্ণ যাঁহার কীর্ত্তি, দেবলোক ও দানবলোককে শুভ্রবর্ণ করিয়া এবং ভুবনমণ্ডলকে নিজের আলোচনায় মুখরিত করিয়া দশ দিকে ভ্রমণ করিয়াছিল। (ম) এবং রাজলক্ষ্মী, যাঁহার অত্যন্ত দুঃসহ তেজের উত্তাপে উত্তপ্ত হইয়া ক্ষণকালের জন্যও রাজচ্ছত্রের ছায়া পরিত্যাগ করেন নাই। (য) আর লোকে যাঁহার চরিত্র, দৈবজ্ঞমুখে নিজের সৌভাগ্যবৃদ্ধির ন্যায় আগ্রহসহকারে

---

(१) मन्दरोद्धृत...। (२) अभ्राम्यत। (३) आतपच्छायां। (४) अस्य।
(५) बहुमङ्गलमिव मेने। (६) आगमवचनमिव।

यस्मिंश्च राजनि गिरीणां विपक्षता, प्रत्ययानां परत्वम्, दर्पणानामभिमुखावस्थानम्, शूलपाणिप्रतिमानां दुर्गाश्लेषः, जलधराणां चापधारणम्, (१) प्रतीहाराणामसिधारणम्, तैक्ष्ण्यमसिधाराणाम्, (२) ध्वजानामुन्नतिः, धनुषामवनतिः,

---

गुरोरुपदेशमिव श्रयाद् शिशिक्षे, उभयोरप्युन्नतिहेतुत्वादित्याशयः। मङ्गलमिव स्वकीयशुभोदयमिव बहु मेने आद्रियते स्म सुखहेतुत्वादित्यभिप्रायः। उपास्यमन्त्रमिव जजाप असकृदुच्चारयामास, तज्जपेन तदनुकरणस्य सुकरत्वात् मन्त्रपक्षे च इष्टसाधनत्वादिति भावः। आगमं अधीतवेदमिव न विसस्मार न विस्मृतवान्, एकत्र "अधीत्यक्ता" इत्यादिमनुवचनेन पापादशादन्यत्र मनोहरत्वादिति आशयः। अत्र सर्वत्रोपमालङ्कारः।

(१) यस्मिन्निति। गिरीणां पर्वतानामेव विपक्षता इन्द्रेण च्छेदनात् पक्षराहित्यं, न तु लोकानां विपक्षता परस्परशत्रुता तत्कारणाभावात्। पृथिव्यामासीदिति वक्ष्यमाणक्रियया सर्वत्रान्वयः। इतः प्रभृति अवलक्रीडासु शून्यटहदर्शनमित्यन्तं यावत् सर्वत्र यथासम्भवश्लेषसङ्कीर्णा आर्थी परिसंख्यालङ्कारः। प्रत्ययानां सुप्तिङादीनामेव परत्वं प्रातिपदिकादिप्रकृतेरुत्तरवर्त्तित्वं, न तु लोकानां परत्वं अनात्मीयत्वं सर्वदा सद्व्यवहारात्। दर्पणानां मुकुराणामेव अभिमुखावस्थानं सम्मुखेऽवस्थितिः, न तु लोकानां लोकान्तरस्य प्रहारार्थमभिमुखावस्थानं तादृशविद्वेषाभावात्। शूलपाणिप्रतिमानां मृत्तिकादिनिर्म्मितशिवप्रतिकृतीनामेव दुर्गाया दुर्गाप्रतिमानां आश्लेषः संयोगः, न तु लोकानां दुर्गेषु आश्लेषः आश्रयः, विपक्षाक्रमणाशङ्काया अभावात्। जलधराणां मेघानामेव चापधारणं इन्द्रधनुर्धारणं, न तु लोकानां चापधारणं धनुर्धारणं युद्धाभावात्। प्रतीहाराणां द्वारपालानामेव असिधारणं, न तु लोकानां लोकान्तरप्रहारार्थमसिधारणं शत्रुताया एवाभावात्। असिधाराणां तरवारिनिशिताग्रानामेव तैक्ष्ण्यं तीक्ष्णता, न तु लोकानां तैक्ष्ण्यं उग्रस्वभावत्वं सुशिक्षागुणेन सर्वेषामेव मधुरस्वभावत्वात्। ध्वजानां केतूनामेव उन्नतिरुत्थितिः, न तु

শুনিত, গুরুর উপদেশের ন্যায় শিক্ষা করিত, মঙ্গললাভের ন্যায় আদর করিত, ইষ্টমন্ত্রের ন্যায় জপ করিত এবং বেদের ন্যায় কখনও বিস্মৃত হইত না।

(২) আর যিনি রাজা হইলে পর পৃথিবীতে পর্ব্বতগণেরই বিপক্ষতা (পক্ষহীনতা) ছিল, কিন্তু লোকের মধ্যে বিপক্ষতা (পরস্পর শত্রুতা) ছিল না; সুপ্ ও তিঙ্ প্রভৃতি প্রত্যয়েরই পরত্ব (প্রকৃতির পরবর্ত্তিত্ব) ছিল, কিন্তু লোকের মধ্যে পরত্ব (পরস্পর অনাত্মীয়তা) ছিল না; দর্পণই অভিমুখে অবস্থান করিত, কিন্তু প্রহার করিবার জন্য এক ব্যক্তি অপর ব্যক্তির অভিমুখে অবস্থান করিত না; শিবের প্রতিমারই দুর্গাশ্লেষ (দুর্গা প্রতিমার সংযোগ) ছিল, কিন্তু লোকের দুর্গাশ্লেষ (দুর্গ আশ্রয়) ছিল না; মেঘেরই চাপধারণ (ইন্দ্রধনু ধারণ) ছিল, কিন্তু লোকের চাপধারণ (যুদ্ধের জন্য ধনুর্গ্রহণ) ছিল না; দ্বারপালগণেরই তরবারিধারণ ছিল, কিন্তু অপর লোকের ছিল না; তরবারির ধারেরই তীক্ষ্ণতা ছিল, কিন্তু কাহারও স্বভাবের তীক্ষ্ণতা ছিল না; ধ্বজদণ্ডেরই উন্নতি (উত্থান) ছিল, কিন্তু লোকের উন্নতি (ঔদ্ধত্য)

---

(१) पद्मानां जलदित्वं, इति क्वचिदधिकः पाठः। (२) प्रतिहाराणामित्यादिः असिधाराणामित्यन्तः पाठः क्वचिन्नास्ति।

वंशानां शिलीमुखक्षतिः, (१) देवतानां यात्रा, कुसुमानां बन्धनस्थितिः, इन्द्रियाणां निग्रहः, वनकरिणां वारिप्रवेशः, व्रतिनामग्निधारणम्, (२) ग्रहाणां तुलारोहणम्, अगस्त्योदये विषशुद्धिः, केशनखानामायतिभङ्गः, जलधर-(३) दिवसानां मलिनाम्बरत्वम्, रत्नोपलानां भेदः, मुनीनां योगसाधनम् (४) कुमार-

लोकानां उन्नतिरौद्धत्यं गर्वोष्माभावात्। धनुषामेव अवनतिः शिक्षासमये गुणाकर्षणेनावनमनं, न तु लोकानामवनतिः अवस्थाह्रासः सर्वेषामेव महोद्यमेन धनाद्यर्जनात्। वंशानां वेणूनामेव शिलीमुखैर्भ्रमरैः क्षतिर्विवरविधानेन हानिः, न तु लोकानां शिलीमुखैर्बाणैः क्षतिरवदारणं युद्धाभावात्। देवतानामेव यात्रा पूजायामुत्सवः, न तु सैन्यानां यात्रा युद्धार्थं गमनं विपक्षाभावात्। "यात्रोत्सवे गतौ वृत्तौ" इति हेमः। कुसुमानां पुष्पाणामेव बन्धनेषु वृन्तेषु स्थितिः, न तु लोकानां बन्धने बन्धनगृहे कारागारे स्थितिः, अपराधाभावात्। इन्द्रियाणां मनःप्रभृतीनामेव निग्रहः योगानुष्ठानेन दमनं, न तु लोकानां निग्रहो दमनं दुर्व्यवहाराभावात्। वनकरिणां वन्यहस्तिनामेव वारौ वन्धनस्थाने प्रवेशः शिक्षार्थं प्रवेशनम्, न तु लोकानां वारिणि जले प्रवेशः 'यद्यहं पापी स्यां तदा मग्नो भवेय'मिति शपथेनावतरणं पापाभावात्। "वारि ह्रीवेर-नीरयोः। वारिर्घटयां सरस्वत्यां गजबन्धनभुव्यपि।" इति हेमः। व्रतिनां अग्निहोत्रादिनियमवतामेव अग्निधारणं होमार्थमग्निग्रहणं, न तु लोकानां 'यद्यहं पापी स्यां तदाग्निना दग्धहस्तो भवेय'मिति शपथेनाग्निधारणं पापाभावात्। ग्रहाणां रव्यादीनामेव तुलारोहणं तुलाराशौ गमनं, न तु लोकानां 'यद्यहं पापी स्यां तदा नीचगामी भवेय'मिति शपथेन तुलादण्डारोहणं पापाभावात्। अगस्त्योदये सौरभाद्रमासशेषे अगस्त्यनक्षत्रोदय एव विषाणां जलानां शुद्धिर्निर्म्मलता, न तु पापोदयसंशये लोकानां विषेण 'यद्यहं पापी स्यां तदा विषपानेनाचेतनो भवेय'मिति शपथपूर्वकविषपानेन शुद्धिर्निष्पापताख्यापनं पापसंशयाभावात्। "विषन्तु गरले तोयेऽतिविषायाञ्च योषिति।" इति मेदिनी। केशनखानामेव आयतेर्दीर्घताया भङ्गश्छेदेन विलोपः,

ছিল না, ধনুকেরই অবনতি (গুণাকর্ষণের সময় নমন) হইত, কিন্তু লোকের অবস্থার অবনতি হইত না; বাঁশেরই শিলীমুখদ্বারা (ভ্রমরদ্বারা) ক্ষতি হইত, কিন্তু লোকের মধ্যে কাহারও শিলীমুখদ্বারা ক্ষতি (বাণদ্বারা বিদারণ) হইত না; দেবগণেরই পূজাদি উপলক্ষে যাত্রা (উৎসব) হইত, কিন্তু যুদ্ধার্থ সৈন্যগণের যাত্রা (প্রস্থান) হইত না; পুষ্পসমূহেরই বন্ধনে (বৃন্তে বোঁটায়) অবস্থান ছিল, কিন্তু লোকের বন্ধনে (কারাগারে) অবস্থান ছিল না; ইন্দ্রিয়গণেরই দমন ছিল, কিন্তু লোকের দমন ছিল না; বন্যহস্তিগণকেই বারিতে (বন্ধনস্থানে) প্রবেশ করান হইত, কিন্তু পাপের শপথপূর্ব্বক কোন লোকের জলপ্রবেশ হইত না; ব্রতিগণেরই অগ্নিগ্রহণ ছিল, কিন্তু পাপের শপথপূর্ব্বক কোন লোকের অগ্নিগ্রহণ ছিল না; গ্রহগণেরই তুলারোহণ (তুলারাশিতে গমন) ছিল, কিন্তু পাপের শপথপূর্ব্বক কোন লোকের তুলারোহণ (তুলাদণ্ডে আরোহণ) ছিল না; অগস্ত্যনক্ষত্রের উদয়ে বিষশুদ্ধি (জলের নির্ম্মলতা) হইত,

(१) शिलीमुखमुखक्षतिः। (२) क्वचित् व्रतिनामसिधाराधारणम् इति पाठः, क्वचिदेष पाठो नास्ति।
(३) जलद···। (४) योगधारणं।

स्तुतिषु तारकोद्धरणम्, उष्णरश्मेर्ग्रहणाशङ्का, (१) शशिनो ज्येष्ठातिक्रमः, महाभारते दुःशासनापराधाकर्णनम्, (२) वयःपरिणामे दण्ड-ग्रहणम्, मणि-परिवारेषु

न तु लोकानामायतेरुत्तरकालस्य उत्तरकालवर्त्तिनः सुखस्य भङ्गो नाशः, शुभादृष्टवत्त्वात्। जलधरदिवसानां मेघाच्छन्नदिनानामेव मलिनाम्बरत्वं मेघावृतत्वात् मलिनाकाशत्वं, न तु लोकानां मलिनाम्बरत्वं मलिनवसनत्वं सन्नद्धिमत्तया सर्वदा सुपरिष्कृतपरिच्छदत्वात्। रत्नोपलानां मणीनामेव भेदो ग्रथनसूत्रप्रवेशाय विदारणं छिद्रकरणं, न तु लोकानां भेदो भेदनीतिप्रयोगः, शत्रुताऽभावेनावश्यकत्वाभावात्। मुनीनामेव योगसाधनं चित्तवृत्तिनिरोधानुष्ठानं, न तु लोकानां योगसाधनं लोकान्तरहत्यार्थं विश्वम्भघातकनियोजनम्, तादृशनृशंसव्यवहाराभावात्। "योगो विश्रम्भघातिनि" इत्यादि हैमः। कुमारस्तुतिषु कार्त्तिकेयस्तवेष्वेव तारकस्य तदाख्यस्य तेन निहतस्य असुरविशेषस्य उद्धरणमुदाहरणं, न तु दण्डेषु कस्यचिदपि तारकोद्धरणं नयनतारोत्पाटनं, तादृशापराधाभावात् दण्डयितुश्चानृशंसत्वात्। उष्णरश्मेः सूर्य्यस्यैव ग्रहणाशङ्का उपरागसम्भावना, न तु कस्यचिदपि जनस्य ग्रहणाशङ्का अपराधवशात् राजपुरुषैर्बलाद्धारणातङ्कः, अपराधाभावात्। शशिनश्चन्द्रस्यैव ज्येष्ठातिक्रमः ज्येष्ठानक्षत्रमुल्लङ्घ्य मूलादौ गमनं, न त्वपरस्य ज्येष्ठानां वयोवृद्धानां भ्रात्रादीनामतिक्रमः अवमानना, शिष्टत्वात्। महाभारते ग्रन्थ एव दुःशासनस्य दुर्य्योधनकनिष्ठभ्रातुः अपराधाकर्णनं द्रौपद्याः केशाम्बराकर्षणापराधश्रवणं, न त्वन्यत्र दुःशासनेन न्यायधर्म्मासङ्गततया दूषितशासनेन अपराधाकर्णनं राजपुरुषाणामपराधश्रवणं, राजानुशासनेन तेषां सर्वत्रैव सुशासनात्। वयःपरिणामे वार्द्धक्य एव दण्डग्रहणं अवलम्बनाय यष्टिधारणं, न त्वपराधे दण्डग्रहणं धनदानादिदण्डस्वीकारः, अपराधाभावात्। परिव्रियन्ते आच्छाद्यन्ते

কিন্তু পাপের শপথপূর্ব্বক কোন লোকের বিষশুদ্ধি (বিষপান করিয়া নিষ্পাপতা প্রকাশ) হইত না; কেশ ও নখসমূহেরই আয়তিভঙ্গ (ছেদন করায় বৃদ্ধির ব্যাঘাত) হইত, কিন্তু লোকের আয়তিভঙ্গ (পরবর্ত্তিকালে সুখভোগের অভাব) হইত না; মেঘাচ্ছন্ন দিনেই মলিনাম্বরত্ব (আকাশ মলিন) হইত, কিন্তু লোকের মলিনাম্বরত্ব (বস্ত্র মলিন) ছিল না; মণিগণেরই ভেদ (ছিদ্র করা) হইত, কিন্তু লোকের মধ্যে ভেদ (পরস্পর মনোবাদ স্থাপন) হইত না; মুনিগণেরই যোগসাধন (যোগাভ্যাস) ছিল, কিন্তু লোকের হত্যার নিমিত্ত যোগসাধন (গুপ্তঘাতক প্রেরণ) ছিল না; কার্ত্তিকের স্তবের সময়েই তারকোদ্ধরণ (তারকাসুরের উল্লেখ) হইত, কিন্তু দণ্ডের সময় কাহারও তারকোদ্ধরণ (নয়নের তারা উৎপাটন) হইত না; সূর্য্যেরই গ্রহণাশঙ্কা (রাহুকর্ত্তৃক গ্রহণের সম্ভাবনা) ছিল, কিন্তু লোকের গ্রহণাশঙ্কা (রাজানুচরকর্ত্তৃক বলক্রমে ধারণের আশঙ্কা) ছিল না; চন্দ্রেরই জ্যেষ্ঠাতিক্রম (জ্যেষ্ঠানক্ষত্র অতিক্রম করিয়া যাওয়া) ছিল, কিন্তু কোন লোক কর্ত্তৃক জ্যেষ্ঠাতিক্রম (জ্যেষ্ঠভ্রাতাপ্রভৃতির অবমাননা) ছিল না; মহাভারতেই দুঃশাসনের (দুর্য্যোধনের কনিষ্ঠ ভ্রাতার) অপরাধ শুনা যাইত, কিন্তু রাজ্যের মধ্যে কোন স্থানে রাজপুরুষদিগের দুঃশাসনের (অন্যায্য শাসনের) অপরাধ শুনা যাইত না; বৃদ্ধকালেই দণ্ডগ্রহণ (যষ্টিধারণ) হইত, কিন্তু অপরাধের জন্য কাহারও

---

(१) ग्रहणाशङ्का। (२) दुःशासनापराधः।

कलङ्कयोगः, (१) कामिनी-कुचपत्रभङ्गेषु वक्रता, (२) करिणां दान-विच्छित्तिः, अक्ष-क्रीडासु शून्यगृह-दर्शनम्, पृथिव्यामासीत् । (र)

तस्य च राज्ञः (३) निखिल-शास्त्र-कलावगाह-गभीरबुद्धिः, (४) आशैशवादुपारूढ़-निर्भर-प्रेमरसः, नीतिशास्त्र-प्रयोग-कुशलः, भुवनराज्यभारनौ-(५) कर्णधारः, महत्स्वपि कार्य्यसङ्कटेष्वविषण्णधीः, (ल) धाम धैर्य्यस्य, स्थानं स्थितेः,

एभिरिति परिवाराः करणे घञ् । असिपरिवारेषु तरवारीणां कोषेष्वेव कलङ्कयोगः परिष्करणाभावेन मल-चिह्नसम्पर्कः, न तु लोकानां परिवारेषु स्त्रीपुत्रादिपरिजनेषु कलङ्कयोगः अपवादसम्बन्धः, निर्दोषत्वात् । कामिनीनां कुचयोः पत्रभङ्गेषु पत्राकाररेखासु वक्रता कुटिलता, न तु लोकचित्तेषु वक्रता कुटिलता सर्व्वेषामेव सरलचित्तत्वात् । करिणां हस्तिनामेव दानैः स्वमदजलैः विच्छित्तिरङ्गरागः, न तु धनिनां दान-विच्छित्तिः धनवितरणविच्छेदः, "अहरहर्दद्या" दिति श्रुतेस्तेषां प्रतिदिनमेव-दानात् । अक्षक्रीडास्वेव शून्य-गृहस्य गुटिकारहितकोष्ठस्य दर्शनं, न तु नगरग्रामेषु शून्यगृहस्य लोकरहितभवनस्य दर्शनं, सर्वविधोपद्रवाभावेन सर्वदैव लोकपूर्णत्वात् ।

(ल) तस्येति । किञ्चेति चार्थः । शुकनासो नाम ब्राह्मणः तस्य राज्ञोऽमात्य आसीदिति वक्ष्यमाण-क्रिययाऽन्वयः । अत्र प्रथमान्तपदानि शुकनासस्य विशेषणानि । शास्त्राणि वेदादीनि च कला नृत्यगीतादिकला-विद्याश्च ताः । निखिलासु शास्त्रकलासु अवगाहेन प्रवेशेन लब्धशिक्षयेत्यर्थः गम्भीरा अगाधा बुद्धिर्यस्य सः । आ शैशवात् उपारूढ़ो राजन्युत्पन्नः निर्भरः अतिमात्रः प्रेमरसः स्नेहानुरागो यस्य सः । भुवनराज्यस्य भारः शासन-व्यापार एव नौर्नौका तस्याः कर्णधारो नाविकः । अत्र परम्परितरूपकमलङ्कारः । कार्य्यसङ्कटेषु कर्त्तव्य-कृच्छ्रेषु अविषण्णा अकुण्ठिता धीर्बुद्धिर्यस्य सः ।

দণ্ডগ্রহণ (দণ্ড দিতে স্বীকার করিতে) হইত না; অসিপরিবারেই (তরবারির কোষেই) কলঙ্কযোগ (মলচিহ্নের সম্পর্ক) ছিল, কিন্তু লোকের স্ত্রীপুত্রাদি পরিজনবর্গের মধ্যে কলঙ্কযোগ (অপবাদের সম্পর্ক) ছিল না; রমণীগণের স্তনের উপর পত্রাকার রেখা তই বক্রতা ছিল, কিন্তু লোকের চিত্তে বক্রতা (কুটিলতা) ছিল না; হস্তিগণেরই দানবিচ্ছিত্তি (স্বকীয় মদজলদ্বারা অঙ্গরাগ) হইত, কিন্তু ধনিগণের দানবিচ্ছিত্তি (ধনবিতরণের বিরাম) হইত না; আর অক্ষক্রীড়াতেই শূন্যগৃহ (গুটীশূন্য কোঠ) দেখা যাইত, কিন্তু নগরে বা গ্রামে শূন্যগৃহ (মানুষশূন্য ঘর) দেখা যাইত না।

(ল) শুকনাস নামে এক ব্রাহ্মণ সেই মহারাজ তারাপীড়ের মন্ত্রী ছিলেন। বেদাদি সকল শাস্ত্রে ও নৃত্যগীতাদি সকল কলাবিদ্যায় সম্পূর্ণ শিক্ষালাভ করায় তাঁহার বুদ্ধি অপরিসীম হইয়াছিল; বাল্যকাল হইতে রাজার উপরে তাঁহার অত্যন্ত প্রণয়ানুরাগ জন্মিয়াছিল; তিনি

(१) असिपरिवारेषु कुशलयोगः, असिधारासु कोषगुप्तिः । (२) कामिनीनां कुचभङ्गेन, कामिनीकुचभङ्गेन ।
(३) तस्य राज्ञः । (४)...कलाकलापावगाहनगभीरबुद्धिः, निखिलशास्त्रकलापावगाहनगभीरबुद्धिः ।
(५)...भारैकनौ... ।

सिन्धुः (१) सत्वस्य, गुरुगुणानाम्, आचार्य्य आचाराणाम्, धाता धर्मस्य, (व) शेषाहिरिव सकलमहो-(२) भारधारणक्षमः, (श) सलिलनिधिरिव महासत्त्व-निवासः, (ष) जरासन्ध इव घटित-(३) सन्धिविग्रहः, (स) त्र्यम्बक इव प्रसाधित-दुर्गः, (ह) युधिष्ठिर इव धर्म्मप्रभवः, (क्ष) सकल-वेद-वेदाङ्गवित्, अशेषराज्य-

(व) धामेति। धाम आश्रयः। स्थितेर्मर्य्यादायाः स्थानमाधारः। सिन्धुर्महाश्रयः। गुणानां दयाविनयादीनां गुरुः शिक्षयिता। आचाराणां शिष्टव्यवहाराणां आचार्य्य उपदेशकः। धाता धारयिता।

(श) शेषेति। शेषाहिरनन्तनाग इव, सकलाया मह्याः पृथिव्याः, भारः शासनव्यापारस्तस्य धारणे परिचालने, अन्यत्र तु भारो गुरुत्वरूपगुणविशेषस्तस्य धारणे वहने क्षमः समर्थः। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(ष) सलिलेति। सलिलनिधिः समुद्र इव, महासत्त्वस्य अत्यन्ताध्यवसायस्य महासत्त्वानां मकरादि-विशालजलजन्तूनाञ्च निवास आश्रयः। पूर्णोपमा।

(स) जरेति। जरासन्धः स्वनामख्यातो राजेव, घटितौ प्रयोजितौ, सामप्रयोगपूर्वकधनादिदानेन विपक्षस्य मित्रीकरणं सन्धिः, विग्रहो युद्धञ्च तौ येन सः, अन्यत्र तु घटितो विहितः सन्धिरुभयखण्डयोः संयोगो यस्य स तादृशो विग्रहः शरीरं यस्य सः। पूर्णोपमा। पुरा किल बृहद्रथो नाम राजा पुत्रार्थमाराधितेन मुनिना चण्डकौशिकेनार्पितमाम्रफलमेकं पत्नीभ्यां भोक्तुं ददौ, विभज्य च भुक्तवतीभ्याञ्च ताभ्यां कालान्तरे बालशरीरस्यैकैकखण्डं प्रसूतं, दृष्ट्वा च राजा दुःखितः श्मशाने न्यक्षिपत्, अथ जरा नाम श्मशान-वासिनी काचन राक्षसी यावदेव तत् खण्डद्वयं सन्दधौ तावदेव तं जीवितमवलोक्य बृहद्रथाय ददाविति महाभारतवार्त्ता। केचित् प्रकारान्तरमिदमुपाख्यानमाचक्षते।

(ह) त्र्यम्बक इति। त्र्यम्बकः शिव इव, प्रसाधितानि निष्पादितानि दुर्गाणि येन सः, पक्षे प्रसाधिता अलङ्कृता दुर्गा पार्वती येन सः। पूर्णोपमा।

(क्ष) युधीति। धर्म्माणां पुण्यानां प्रभवो यागादिना उत्पत्तिर्यस्मात् सः, पक्षे धर्म्मात् प्रभव उत्पत्तिर्यस्य सः। पूर्णोपमा। युधिष्ठिरस्य धर्म्मादुत्पत्तिकथा महाभारतेऽनुसन्धेया।

নীতিশাস্ত্রে ও নীতিপরিচালনায় অত্যন্ত দক্ষ এবং জগতের রাজ্যশাসনকার্য্যরূপ নৌকার কর্ণধার ছিলেন; (ব) আর তিনি ধৈর্য্যের আধার, মর্য্যাদার আশ্রয়, সত্যের সাগর, গুণের শিক্ষক, সদাচারের উপদেশক এবং ধর্ম্মের আশ্রয় ছিলেন; (শ) অনন্তনাগ যেমন সমগ্র পৃথিবীর ভার বহন করিতে সমর্থ, তিনিও তেমন সমগ্র পৃথিবীর শাসনকার্য্যের পরিচালনায় সমর্থ ছিলেন; (ষ) সমুদ্র যেমন মকরপ্রভৃতি বৃহৎ জলজন্তুসমূহের আশ্রয়, তিনিও তেমন অত্যন্ত অধ্যবসায়ের আশ্রয় ছিলেন; (স) জরা নামে রাক্ষসী যেমন জরাসন্ধের শরীরের দুই খণ্ড সঙ্ঘটিত করিয়াছিল, তিনিও তেমন যথাস্থানে সন্ধি ও বিগ্রহ সঙ্ঘটিত করিতেন; (হ) মহাদেব যেমন দুর্গার ভূষণক্রিয়া সম্পাদন করিতেন, তিনিও তেমন নানা স্থানে দুর্গনির্ম্মাণক্রিয়া সম্পাদন করিতেন; (ক্ষ) যুধিষ্ঠির যেমন ধর্ম্ম প্রভব (ধর্ম্মরাজ হইতে উৎপন্ন) ছিলেন, তিনিও তেমন

(१) धीतुः। (२) मह्या...। (३) प्रकटित...।

मण्डलैकसार:, (१) (क) बृहस्पतिरिव सुनासीरस्य, कविरिव वृषपर्वण:, वशिष्ठ इव दशरथस्य, विश्वामित्र इव रामस्य, धौम्य इवाजातशत्रो:, दमनक इव भीमस्य, सुमतिरिव नलस्य, (२) सर्वकार्य्येष्वाहितमति: (३) अमात्यो ब्राह्मण: शुकनासो नामासीत् (४)। (ख)

यो नरकासुर-शस्त्रप्रहार-भीषणे (५) भ्रमन्मन्दर-नितम्ब-निर्दय-(६) निष्पेष-कठिनांसपीठे नारायणवक्ष:स्थलेऽपि स्थितामदुष्करलाभाममन्यत प्रज्ञाबलेन लक्ष्मीम्। (ग)

(क) सकलेति। "शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दसां चिति:। ज्योतिषामयनञ्चैव वेदाङ्गानि वदन्ति षट्।" अशेषे समस्ते राजमण्डले एकोऽद्वितीय: सार: श्रेष्ठ:, सर्वगुणाकरत्वादिति भाव:।

(ख) बृहेति। शोभनो नासीरो वीर इति सुनासीर इन्द्रस्तस्य। "वृद्धश्रवा: सुनासीर: पुरुहूत: पुरन्दर:।" इत्यमर:। वृषपर्वण: स्वनामप्रसिद्धस्यासुरराजस्य, कवि: शुक्राचार्य्य इव। अजातशत्रोर्युधिष्ठिरस्य। भीमस्य विदर्भाधिपतेर्दमयन्तीपितु:। आहितमति: स्थापितबुद्धि:। शुकस्येव नासा नासिका यस्येति स:।

(ग) य इति। य: शुकनास: प्रज्ञाबलेन बुद्धिसामर्थ्येन, नरकासुरस्य शस्त्रप्रहारेण भीषणे क्षतचिह्नशालितया भयङ्करे, तथा भ्रमत: समुद्रमथनसमये घूर्णमानस्य मन्दरस्य पर्वतस्य यो नितम्बो मध्यदेशस्तस्य निर्दयनिष्पेषेण निष्ठुरघर्षणेन कठिने अंसपीठे पीठवद्विशालं स्कन्धद्वयं यस्य तादृशे, नारायणस्य वक्ष:स्थले स्थितामपि लक्ष्मीं अदुष्करो लाभो यस्यास्तां सुलभामित्यर्थ: अमन्यत। अत्र नरकासुर: शस्त्रप्रहारेणापि यां लब्धुं नाशकत्, या च मन्दरनिष्पेषणेनापि न ययौ, तामपि लक्ष्मीमदुष्करलाभाममन्यत, इत्यर्थस्य प्रथमविशेषणद्वयेन सूचनान्नापुष्टार्थत्वदोष:। कृष्णेन भूमिपुत्रो नरकासुरो निहत इति हरिवंशवार्त्ता। समुद्रमथनवृत्तान्तस्तु क्त:।

धर्म्मप्रभव (যাগাদিদ্বারা ধর্ম্মের উৎপাদক) ছিলেন। (ক) আর তিনি সকল বেদ ও বেদাঙ্গ জানিতেন এবং সমস্ত রাজ্যের মধ্যে অদ্বিতীয় প্রধান ব্যক্তি ছিলেন। (খ) বৃহস্পতি যেমন ইন্দ্রের, শুক্রাচার্য্য যেমন অসুররাজ বৃষপর্ব্বার, বশিষ্ঠ যেমন দশরথের, বিশ্বামিত্র যেমন রামচন্দ্রের, ধৌম্য যেমন যুধিষ্ঠিরের, দমনকমুনি যেমন ভীমরাজার, এবং সুমতি যেমন নলরাজার মন্ত্রী ছিলেন, শুকনাসও তেমনই তারাপীড়ের মন্ত্রী ছিলেন, আর তিনি সকল কার্য্যেই বুদ্ধি-প্রয়োগ (মনোনিবেশ) করিতেন।

(গ) নরকাসুরের অস্ত্রপ্রহারের ক্ষতচিহ্নে যে বক্ষঃস্থল ভয়ঙ্কর হইয়াছিল এবং সমুদ্র-মন্থনের সময় ঘূর্ণমান মন্দরপর্ব্বতের নিষ্ঠুর ঘর্ষণে যে বক্ষঃস্থলের নিকটবর্ত্তী স্কন্ধদ্বয় কঠিন হইয়াছিল, লক্ষ্মীদেবী নারায়ণের সেই বক্ষঃস্থলে বাস করিলেও যিনি বুদ্ধিবলে তাঁহাকে লাভ করাও দুষ্কর নহে বলিয়া মনে করিতেন।

---

(१)...मण्डलैकसार:। (२) दमनक इव नलस्य। (३) अप्रतिहतमति:।
(४) अभवत्। (५) शस्त्रभीषणे। (६)...मन्दरनिर्दय...।

यस्य समासाद्य (१) दर्शितानेकराज्यफला लतेव महापादपं (२) अनेकप्रतानगहना विस्तारमुपययौ (३) प्रज्ञा। (घ)

यस्य चानेक-(४) चारपुरुष-सहस्र-सञ्चार-निचिते (५) चतुरुदधि-वलय-परिखा-(६) प्रमाणे धरणीतले (७) भवन इवाविदितमहरहः समुच्छ्वसितमपि राज्ञां नासीत्। (ङ)

स राजा बाल एव सुर-कुञ्जर-कर-पीवरेण राजलक्ष्मी-(८) लीलोपधानेन, सकल-जगदभय-प्रदान-शौण्डेन, रण-यज्ञ-दीक्षायूपेन, (९) स्फुरदसिलता-मरीचि-

---

(घ) यस्येति। लता महापादपं विशालवृक्षमिव, प्रज्ञा बुद्धिः, यस्य शुकनासं समासाद्य प्राप्य, दर्शितानि अनेकानि राज्यानि नूतनानेकराज्यलाभा इत्यर्थः फलानीव यया सा। लतेवेत्युपमानुसारादुपमितसमास एव न्याय्यः। तथा अनेकैः प्रतानैः पल्लवैः गहना निविड़ा, बुद्धिपक्षे तु अनेकेषु विषयेषु प्रतानेन प्रसारेण गहना अपरैर्दुर्गमा, सती। अत्र लुप्तोपमासङ्कीर्णा पूर्णोपमालङ्कारः।

(ङ) यस्येति। अनेकस्य चारपुरुषाणां गुप्तचराणां सहस्रस्य सञ्चारेण विचरणेन निचिते व्याप्ते, चत्वारि उदधिवलयानि मण्डलीभूतसमुद्रा एव परिखास्ताभिः प्रमाणं परिमाणं यस्य तस्मिन् समस्त इत्यर्थः, धरणीतले भवन इव स्वगृह इव राज्ञामन्येषां नृपतीनां अहरहः समुच्छ्वसितमपि प्रतिदिनं निश्वासत्यागोऽपि यस्य च शुकनासस्य अविदितं अज्ञातं नासीत्। गुप्तचरैः सर्वमेव वृत्तान्तं शुकनासोऽवगतवानित्यर्थः। अत्रोपमालङ्कारः।

(च) स इति। स राजा तारापीड़ः कर्त्तव्यशेषमपरमपश्यदितिपरेणान्वयः। सुरकुञ्जरस्य ऐरावतस्य करवत् शुण्डावत् पीवरेण स्थूलेन। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। राजलक्ष्म्याः लीलोपधानेन विलासोपबर्हस्वरूपेण।

(ঘ) এবং কোন লতা বৃহৎ একটি বৃক্ষ পাইয়া তাহার অবলম্বনে ফল জন্মাইয়া নূতন নূতন পল্লবে নিবিড় হইয়া যেমন ক্রমে বিস্তার লাভ করে, সেইরূপ বুদ্ধি, যে শুকনাসকে পাইয়া নূতন নূতন রাজ্যলাভ দর্শন করাইয়া এবং বহুতর বিষয়ে প্রবেশ করায় অন্যের দুর্জ্ঞেয় হইয়া ক্রমে বিস্তার লাভ করিয়াছিল।

(ঙ) আর নিজের গৃহে কোন ঘটনা ঘটিলে তাহা যেমন লোকের অজ্ঞাত থাকে না, সেইরূপ পরিখাস্বরূপ চারিটি সমুদ্র-পরিবেষ্টিত সমগ্র পৃথিবীতে বহুতর গুপ্তচর বিচরণ করায় অন্যান্য রাজগণের প্রতিদিন নিশ্বাসত্যাগও যে শুকনাসের অজ্ঞাত ছিল না।

(চ) সেই রাজা তারাপীড়, বালক অবস্থাতেই ঐরাবতহস্তীর শুণ্ডের ন্যায় স্থূল, রাজলক্ষ্মীর লীলোপধান-(সখের বালিস) স্বরূপ, সমগ্র জগতের অভয়দানে মত্ত, যুদ্ধরূপ

---

(१) यस्याश्रय। (२) पादपं। (३) उपाययौ। (४) यस्यानेक...।
(५)...परिचिते, विचिते। (६)...परिधिप्रमाणे, परिक्षेपप्रमाणे।
(७) धरणितले। (८) राज्यलक्ष्मी...। (९) सकलजगदभयदानयज्ञदीक्षायूपेन।

जाल-जटिलेन, निखिलाराति-कुल-प्रलयधूमकेतुना, बाहुदण्डेन (१) विजित्य सप्तद्वीपवलयां (२) वसुन्धरां तस्मिन् शुकनासनाम्नि मन्त्रिणि सुहृदीव राज्यभार-मारोप्य सुस्थिता: प्रजा: कृत्वा कर्त्तव्यशेषमपरमपश्यत् (३)। प्रशमिताशेष-विपक्षतया विगताशङ्क: शिथिलीकृत-वसुन्धराव्यापार: (४) प्रायशो यौवनसुख-मनुबभूव (५)। (च)

तथाहि कदाचिदुल्लसत्कठोर-कपोल-पुलक-जर्जरित-कर्णपल्लवानां प्रणयि-

अत्र निरङ्गकेवलरूपकमलङ्कार:। सकलानां जगतां अभयप्रदाने दीक्षो मखस्तेन। "मखे दीक्षोत्कट-श्चौवा" इत्यमर:। रणो युद्धमेव यज्ञ: क्षत्रियाणां धर्मजनकत्वादुत्सवरूपत्वाच्चेति भाव:, तस्य दीक्षायामारम्भे यूपेन पशुबन्धनकाष्ठस्वरूपेण। अत्र रणे यज्ञत्वारोपो राजबाहौ यूपत्वारोपे निमित्तमित्यश्लिष्टशब्दनिबन्धनं परम्परितरूपकमलङ्कार:। स्फुरन्त्या दीप्यमानाया: असिलताया लतावल्लम्बमानतरवारे: मरीचिजालेन किरण-समूहेन जटिलो व्याप्तस्तेन। तथा निखिलस्य अरातिकुलस्य शत्रुगणस्य प्रलये विनाशे धूमकेतुना तत्-स्वरूपेण, अथवा धूमकेतुरिव तेन, विनाशसूचकेनेत्यर्थ:। अत्र साधकबाधकप्रमाणाभावान्निरङ्गकेवलरूपक-लुप्तोपमयो: सन्देहसङ्कर:। सप्त द्वीपवलयानि द्वीपमण्डलानि यस्यां ताम्। सुहृदीव सख्याविव। अतीव-विश्वस्ततया क्षतिशङ्काभावादिति भाव:। अत्रोपमालङ्कार:। प्रशमिता: शान्तिं प्रापिता: अशेषा: समस्ता विपक्षा: शत्रवो येन तस्य भावस्तया हेतुना, विगताशङ्को निरातङ्क:, तथा शिथिलीकृतो मन्दीकृत: वसुन्धरा-व्यापार: पृथिवीशासनकार्य्यं येन स:।

(छ) यौवनसुखानुभवप्रकारमेव दर्शयति तथाहीति। कदाचित् अनङ्गपरवश: कामाधीन: सन् राजा सुरतमाततानेति परेणान्वय:। उल्लसद्भि: प्रकाशमानै: कठोरैर्वेधनयोग्यत्वात् परुषै:, कपोलयोर्गण्डयो: पुलकै रोमाञ्चै: जर्जरितानि गण्डोपरि पतनात् जीर्णीकृतानि कर्णपल्लवानि यासां तासां, प्रणयिनीनां प्रियाणां चन्दनजलस्य छटाभिर्बिन्दुसमूहैरिव, स्मितं ईषत् हास्यं सुधा अमृतमिव स्मितमेव सुधेति वा, तस्या: छविभि:

यज्ञारম্ভের যূপকাষ্ঠস্বরূপ, দেদীপ্যমান তরবারির কিরণজালে ব্যাপ্ত এবং ধূমকেতুর ন্যায় সকল শত্রুগণের বিনাশসূচক বাহুদণ্ডদ্বারা সপ্তদ্বীপা পৃথিবীকে জয় করিয়া সুহৃদের ন্যায় অত্যন্ত বিশ্বাসী সেই শুকনাসনামক মন্ত্রীর উপরে রাজ্যভার অর্পণ করিয়া প্রজাদিগকে সুস্থ করিয়া অপর কর্ত্তব্যের অবশিষ্ট দেখিয়াছিলেন। পরে পৃথিবীর শাসনকার্য্যে বিশেষ লিপ্ত না থাকিয়া এবং সকল শত্রুগণ শান্তভাব অবলম্বন করায় নিঃশঙ্কচিত্ত হইয়া প্রায়ই যৌবন-সুখ অনুভব করিতেছিলেন।

(ছ) কখনও রাজা, চন্দনজল-বিন্দুসমূহের ন্যায় প্রণয়িনীগণের সুধাময় ঈষৎ হাস্যের শোভা-জলে অভিষিক্ত হইতে থাকিতেন, তখন সেই রমণীগণেরও গণ্ডের উপরে অত্যন্ত

(१)...धूमकेतुदण्डेन बाहुना। (२) सकलद्वीपवलयां। (३) अपश्यन्।
(४) विगलिताशङ्क:। शिथिलितपृथ्वीव्यापार:, शिथिलितपृथिवीव्यापार:। (५) प्रायो यौवनसुखान्यनुबभूव।

नीनां चन्दन-जलच्छटाभिरिव स्मित-सुधाच्छविभिरभिषिच्यमानः, (छ) कर्णोत्पलै-रिव लोचनांशुभिस्ताड्यमानः, (ज) कुङ्कुमधूलिभि-(१) रिवाभरणप्रभाभिराकुली-क्रियमाण-लोल-लोचनः, (झ) धवलांशुकैरिव कर-नख-(२) मयूख-जालकैराहन्य-मानः, (ञ) चम्पक-कुसुम-दल-मालिकाभिरिव भुजलताभिराबध्यमानः, (ट) दष्टाधर-धूत-(३) करतल-चलन्मणिवलय-कलकल-(४) रमणीयम्, अतिरभस-(५) दलित-दन्त-पत्र-दन्तुर-(६) शयनम्, उत्क्षिप्त-चरणतल-(७) गलदलक्तक-रक्त-शेखरम्, सरभस-कच-ग्रह-चूर्णित-मणिकर्णपूरम्, उल्लसित-कुच-कृष्णागुरु-पङ्क-

---

कान्तिभिः, अभिषिच्यमानः स्नप्यमानः, तच्छवीनां विशदत्वादिति भावः। अत्रोपमालङ्कारः, लुप्तोपमानिरङ्ग-केवलरूपकयोः सन्देहसङ्करश्च, तयोरपि मिथो निरपेक्षतया संसृष्टिः।

(ज) कर्णेति। ताड्यमानः प्रक्रियमाणः तीव्रकटाक्षपातादिति भावः। अत्रोपमालङ्कारः।

(झ) कुङ्कुमेति। आभरणप्रभाभिरलङ्कारद्युतिभिः, आकुलीक्रियमाणे व्याहन्यमाने अतएव लोले चञ्चले लोचने चक्षुषी यस्य सः। उपमा।

(ञ) धवलेति। धवलांशुकैरिव श्वेतवसनैरिव, करनखानां मयूखजालकैः किरणसमूहैः, आहन्यमानः प्रक्रियमाणः, अत्यासन्नतया तीव्रपातित्वादिति भावः। उपमा।

(ट) चम्पकेति। चम्पककुसुमानां दलमालिकाभिरिव कोमलत्वाद्दलश्रेणीभिरिव। आबध्यमान आश्लिष्यमाणः। उपमा।

(ठ) दष्टेति। दष्टेन दशनैर्व्यथितेन अधरेण हेतुना, धूतं निषेधसूचनाय कम्पितं यत् करतलं तस्मिन् चलतां चञ्चलीभूतानां मणिवलयानां कलकलेन मधुरास्फुटध्वनिनिवहेन रमणीयं मनोहरं। वक्ष्य-माणस्य सुरतमित्यस्य विशेषणमेतत्, एवमपराण्यपि। अतिरभसेन नितान्तवेगेन दलितैः खण्डितैः दन्तपत्रैः गजदन्तनिर्म्मितकर्णाभरणैः दन्तुरं विषमं शयनं शय्या यस्मिन् तत्। उत्क्षिप्ताभ्यां राज्ञो मस्तकं यावदुत्तोलिताभ्यां चरणतलाभ्यां रमण्याः पादतलाभ्यां गलता तरलत्वात् स्रवता अलक्तकेन लाक्षारसेन रक्तो लोहितीकृतः शेखरो राज्ञः शिखा यस्मिन् तत्। सरभसं सवेगं यः कचग्रहः केशधारणं तेन

রোমাঞ্চ উৎপন্ন হইয়া কর্ণের পল্লবগুলিকে জীর্ণ করিতে থাকিত; (জ) কোন কোন রমণী, তীব্র কটাক্ষ করিবার সময়ে কর্ণের নীলোৎপলের ন্যায় নয়ন-কিরণদ্বারা রাজাকে তাড়ন করিত; (ঝ) কুঙ্কুমের রেণুসমূহের ন্যায় কোন কোন রমণীর অলঙ্কারের কিরণে রাজার নয়নযুগল প্রতিহত হইয়া চঞ্চলভাব ধারণ করিত; (ঞ) শুভ্রবসনের ন্যায় কোন রমণীর হস্তস্থিত নখসমূহের কিরণপুঞ্জদ্বারা রাজা আহত হইতেন; (ট) কোন কোন রমণী চম্পক-পুষ্পের দলসমূহের ন্যায় কোমল বাহুলতাদ্বারা রাজাকে বন্ধন করিত; (ঠ) … … …।

---

(१) कुङ्कुमपटवासधूलिभिः, कुङ्कुमवासधूलिभिः (२) …नखर…। (३) दष्टाधराधूतकरतल…, दष्टाधरकरतल…,। (४)…कलकलरव…, कलरव…,। (५) रतिरभस…।

(६)…दन्तुरित…। (७)…चरणगलत्…।

पत्रलताङ्कित-प्रच्छदपटम्, अच्छ-श्रमजल-(१) लुलित-गोरोचना-(२) तिलक-पत्रभङ्गम्, अनङ्ग-परवशः सुरतमाततान। (ठ)

कदाचिन्मकरकेतु-कनक-नाराच-परम्पराभिरिव कामिनी-करपुट-विनिर्गताभिः (३) कुङ्कुमजल-धाराभिः पिञ्जरीक्रियमाण-कायो लाक्षाजलच्छटा-प्रहार-पाटलीकृत-दुकूलो मृगमद-जलविन्दु-शवल-चन्दन-स्थासकः कनकशृङ्गकोषैश्चिरं चिक्रीड़। (ड)

कदाचित् कुच-चन्दन-चूर्ण-धवलितोर्म्मिमालम्, (४) चटुल-तुला-कोटि-वाचाल-चरणालक्तक-सिक्त-हंस-मिथुनम्, अलक-निपतित-कुसुमनिकर-शारम्, (५) प्लवमान-कर्णपूर-कुवलयदलम्, उन्नत-नितम्ब-संक्षोभ-(६) जर्जरित-तरङ्गम्,

---

चूर्णितं खण्डखण्डीकृतं मणिकर्णपूरं रत्नमयकर्णाभरणं यस्मिन् तत्। उल्लसितयोः राज्ञः करस्पर्शेन स्फुरितयोः कुचयोर्याः कृष्णागुरुपङ्कस्य गाढ़कृष्णागुरुद्रवस्य पत्रलतास्तदाकारचिह्नानि ताभिरङ्कितश्चिह्नितः प्रच्छदपटः शय्याया आस्तरणवस्त्रं यस्मिन् तत्, रमण्या न्यु अशयनादिति भावः। अच्छैर्निर्म्मलैः श्रमजलैः-घर्म्मविन्दुभिः लुलिताः कथञ्चित् चालिताः गोरोचनायास्तिलकपत्रभङ्गा ललाटस्थतिलकपत्रभङ्गाकारचिह्नानि यस्मिन् तत्। आततान बाहुल्येन चकार।

(ड) कदाचिदिति। मकरकेतोर्मदनस्य कनकनाराचपरम्पराभिः सुवर्णमयवृहद्वाणश्रेणीभिरिव। अत जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः। कस्याश्चित् कामिन्याः करपुटेन तत्प्रेरणयेत्यर्थः विनिर्गताभिस्तदीयशृङ्गकोषान्निःसृताभिः। पिञ्जरीक्रियमाणः पिङ्गलवर्णीक्रियमाणः कायः शरीरं यस्य सः। लाक्षाजलस्य छटाभिर्धाराभिः कस्याश्चित् कामिन्याः शृङ्गकोषान्निर्गताभिरिति भावः, प्रहारेण पाटलीकृतं आरक्तीकृतं दुकूलं वसनं यस्य सः। मृगमदजलविन्दुभिः कस्याश्चित् कामिन्याः शृङ्गकोषान्निर्गताभिः कस्तूरीजलकणिकाभिः, शवलो विचित्रः, चन्दनस्थासकः चन्दनकृतचर्च्चा यस्य सः। "चर्च्चा तु चार्च्चिक्यं स्थासक" इत्यमरः। कनकशृङ्गकोषैः लम्बमान-कोषाकारजलयन्त्रविशेषैः। "क्रीड़ाम्बुयन्त्रे शृङ्गोऽस्त्री" इति यादवः। चिक्रीड़ क्रीड़ां कृतवान्।

(ढ) कदाचिदिति। सावरोधजनः प्रणयिनीजनसमेतो राजा जलक्रीड़या गृहदीर्घिकाणामम्भो जलं,

---

(ড) কোন সময়ে রাজা সোনার পিচকারী নিয়া প্রণয়িনীগণের সহিত বহু সময় খেলা করিতেন; তখন কোন রমণীর হস্তের আকর্ষণে পিচকারী হইতে নির্গত, কামদেবের স্বর্ণময় বাণশ্রেণীর ন্যায় কুঙ্কুমের জলধারা পতিত হইয়া রাজার শরীর পিঙ্গলবর্ণ করিত; কোন রমণীর পিচকারী হইতে নির্গত আলতার জলের ধারা পতিত হইয়া রাজার বস্ত্র আরক্তবর্ণ করিত; এবং কোন রমণীর পিচকারী হইতে নির্গত কস্তূরীর জলবিন্দু সকল পতিত হইয়া রাজার শরীরস্থিত চন্দনচিহ্নগুলিকে বিচিত্র করিত।

(ঢ) কোন সময়ে রাজা অন্তঃপুরবাসিনী প্রণয়িনীগণের সহিত জলক্রীড়া করিবার

---

(१) अस्रमजल...। (२)...रोचना...। (३)...विनिर्गताभिरिव।

(४) धवलोर्म्मिमालं। (५)...कुसुमसारम्, कुसुमनिकरसारम्। (६)...क्षोभ...।

उद्दलित-नाल-पर्य्यस्त-नलिन-निपतित-धूलि-पटलम्, अनवरत-करास्फालन-(१) स्फुरत्-(२) फेनविन्दु-चन्द्रकितम् मानसोभजनो जलक्रीड़या गृहदीर्घिकामम-भ्रमकार। (ढ)

कदाचित् सङ्केत-वञ्चिताभिः प्रणयिनीभिराबद्ध-भङ्गुर-भ्रूकुटिभिः (३) आर-

ईदृशं चकार इत्यन्वयः। अत्र द्वितीयान्तपदानि जलविशेषणानि। कुचयोश्चन्दनचूर्णैः धवलिता श्वेतीकृता ऊर्म्मिमाला तरङ्गश्रेणी यस्य तत्। चटुलाभ्यां चलिताभ्यां तुलाकोटिभ्यां नूपुराभ्यां वाचालयोर्मुखरयोः चरणयोः अलक्तकैर्लाक्षारसैः सिक्तं हंसमिथुनं नूपुररवाकृष्टौ हंसदम्पती यस्मिन् तत्। "तुलाकोटिर्मान-भेदेऽर्बुदे स्यान्नूपुरेऽपि च।" इति हैमः। अलकाश्चूर्णकुन्तलात् निपतितैः कुसुमनिकरैः शारं चित्रं नानावर्णं। प्लवमानानि उपरि सन्तरन्ति कर्णपूराणां आकण्ठमग्नललनाकर्णाभरणीभूतानां, कुवलयानां नीलोत्पलानां दलानि यस्मिन् तत्। उन्नतानां नितम्बानां संक्षोभेण आस्फालनेन जर्जरिताश्चूर्णीकृतास्तरङ्गा यस्मिन् तत्। उद्दलितानि आमर्द्दितानि नालानि येषां तानि, अतएव पर्य्यस्तानि जलोपरि पतितानि यानि नलिनानि पद्मानि तेभ्यो निपतितं धूलिपटलं परागसमूहो यस्मिन् तत्। तथा अनवरतं करास्फालनेन जलसेचनाय तत्रैव हस्तान्दोलनेन स्फुरद्भिः प्रकाशमानैः फेनविन्दुभिः, सञ्जाताश्चन्द्रकाश्चन्द्राकारजलस्फोटा अस्येति तत्।

(ण) कदाचिदिति। सङ्केते वञ्चिताभिः, 'ईदृशसमये तादृशस्थाने युष्मान् रमयिष्ये' इति निर्द्देशे कृते तासु तत्रागतासु राज्ञा तु नोपस्थितमिति तेन प्रतारिताभिरित्यर्थः, अतएव आबद्धाः कृताः भङ्गुराः कुटिलाः भ्रूकुटयो याभिस्ताभिः, आरणिताल्लाड़नाय करसञ्चालनात् शब्दिताः ये मणिपारिहार्य्या रत्नवलयानि "आवापकः

নিমিত্ত অন্তঃপুরের দীর্ঘিকার মধ্যে প্রবেশ করিতেন; তখন কোন রমণীর স্তনলিপ্ত শুষ্ক চন্দনের রেণুতে তরঙ্গশ্রেণী শ্বেতবর্ণ করিত; কোন রমণীর চঞ্চল নূপুরের রবে শব্দায়মান চরণ হইতে নিঃসৃত আল্‌তার রস, অনুসরণকারী হংসদম্পতীকে সিক্ত করিত; কোন সুন্দরীর স্খলিত কেশকলাপ হইতে কুসুমসমূহ নিপতিত হইয়া দীর্ঘিকার জল বিচিত্র করিত; কোন যুবতী জলমধ্যে আকণ্ঠ মগ্ন হইলে তাহার কর্ণাভরণ নীলোৎপলের দলগুলি জলের উপরে ভাসিতে থাকিত; কোন রমণীর উন্নত নিতম্বের আস্ফালনে তরঙ্গ সকল চূর্ণ হইয়া যাইত; কোন তরুণী পদ্মের নালগুলি ভাঙ্গিয়া ফেলিলে পদ্মগুলি জলের উপরে পতিত হইতে থাকিত; এবং কোন সুন্দরী রাজার শরীরে জলসেচন করিবার সময়ে অনবরত হস্ত আস্ফালন করায় ফেনবিন্দু সকল উৎপন্ন হইয়া জলের উপরে চন্দ্রের আকার ধারণ করিত।

(ণ) কোন সময়ে রাজা সঙ্কেত করিয়া রাত্রিতে সে স্থানে না যাওয়ায় প্রতারিত প্রণয়িনী-গণ পরদিন কুটিল ভ্রূভঙ্গি করিয়া, বকুলকুসুমের মালা দ্বারা সেই অপরাধী রাজার চরণ বন্ধন

(१)...करतलास्फालन...। (२)...विस्फुरत्...।

(३) भ्रुकुटिभिः, भ्रकुटिभिः, भ्रूकुटीभिः।

णित-मणिपारिहार्थ्य-(१) मुखर-भुजलताभिर्वकुल-कुसुमावलीभिः संयत-चरणः (२) नख-किरण-विमिश्रैः कुसुम-दामभिः कृतापराधो दिवसमताड्यत। (ण)

कदाचिद्बकुलतरुरिव कामिनी-गण्डूष-(३) सीधु-धारा-स्वाद-(४) मुदितो विकाशमभजत। (त) कदाचिदशोक-पादप इव युवति-चरणतल-प्रहार-संक्रान्तालक्तकरसो (५) रागमुवाह। (थ) कदाचिन्मुषलायुध इव चन्दन-धवलः (६)

पारिहार्य्यः कटको वलयोऽस्त्रिया''मित्यमरः, तैर्मुखराः शब्दायमानाः भुजलता यासां ताभिः, प्रणयिनीभिः कर्त्रीभिः, वकुलकुसुमावलीभिः वकुलपुष्पमालाभिः करणैः, संयतचरणो बद्धपादः, कृतापराधः सङ्केतस्थानेऽनुपस्थितेरिति भावः, राजा, नखकिरणविमिश्रैः कुसुमदामभिरपरपुष्पमाल्यैः, दिवसं समस्तदिनं व्याप्य अताड्यत प्राक्रियत। दिवसमिति ''अभिविधौ कालाध्वमाना''दिति द्वितीया।

(त) कदाचिदिति। कामिन्या गण्डूषसीधुधारायाः मुखपूर्णमद्यधारायाः स्वादेन पानास्वादेन मुदितो हृष्टः, विकाशं आनन्देन विस्फारितचित्तत्वं विकसनञ्च। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः। तथा ईदृग्वकुलतरुर्विकाशं भजते राजा तु विकाशमभजत, इति कालभेदात् ''काप्यभिख्या तयोरासी''दित्यादिदर्पणोदाहृतवद्भग्नप्रक्रमतादोषः, स च 'यथा किल भजते वकुलतरुः कामिनीगण्डूषसीधुधारास्वादमुदितस्तथा विकाशमभजत कदाचित्' इति पाठेन समाधेयः। एवमेव 'कदाचिन्मधुकर इवेत्यन्तं यावत् प्रसज्जन्नसौ दोषः परिहरणीयः। न चात्र ''मद्यमदेयमपेयमनिर्ग्राह्य''मित्युशनोवचनादिना कथं राज्ञो मद्यास्वाद इति वाच्यं, ''कामतोऽपि हि राजन्यो वैश्यो वापि कथञ्चन। मद्यं पीत्वाऽसुरासंज्ञं न किञ्चिद्दोषमर्हति॥'' इति मनुवचनेन मद्यपदस्य सुरामद्यपरत्वात् अत्र सीधुपदस्य चेक्षुविकारवाचकत्वेन दोषाभावात्। एवमन्यत्रापि बोध्यम्।

(थ) कदाचिदिति। युवतिचरणतलप्रहारेण संक्रान्तस्तस्मात् स्वगात्रे सञ्चरितः अलक्तकरसो यस्य सः, रागं तास्वनुरागं लौहित्यञ्च। पूर्णोपमा। ''पादाघातादशोकं विकसति वकुलं योषितामास्यमद्यै''-रितिदर्पणकारिका उभयत्रैव प्रमाणम्।

করিয়া স্বকীয় নখের কিরণমিশ্রিত অপর পুষ্পমালাদ্বারা তাঁহাকে তাড়ন করিতে থাকিত; তখন রত্নময় বলয়ের শব্দে তাহাদের ভুজলতাও শব্দিত হইত।

(ত) বকুলবৃক্ষ যেমন কামিনীগণের মুখমদ্যের সংস্পর্শে স্বকীয় পুষ্পসমূহের বিকাশ লাভ করে, রাজাও তেমন কোন সময়ে কামিনীগণের মুখোচ্ছিষ্ট মদ্যপানে আনন্দিত হইয়া স্ফূর্ত্তি লাভ করিতেন। (থ) অশোকবৃক্ষ যেমন যুবতিগণের চরণপ্রহারে তরল আলতা সংলগ্ন হওয়ায় রক্তবর্ণ হয়, রাজাও তেমন কোন সময়ে যুবতিগণের চরণপ্রহারে গাত্রে তরল আলতা-সংলগ্ন হইলে তাহাদের প্রতি আরও অনুরক্ত হইতেন। (দ) কখনও রাজা,

---

(१)...आरचितपारिहार्य्य...। (२) बकुलकुसुमावलीसंयत...। (३) कामिनीनां गण्डूष...।
(४)...स्वादन...। (५)...अलक्तकी रागं...। (६) चन्दनधवलकाण्ड...।

कण्ठावसक्तोल्लसल्लोल-(१) कुसुममालः पानमसेवत। (द) कदाचिद्‌गन्धगज इव मदरक्त-कपोल-दोलायमान-कर्णपल्लवो (२) मदकलः काननं विकच-वनलता-कुसुम-सुरभि-परिमलं जगाहे। (ध) कदाचित् क्वण-(३) मणिनूपुर-निनादानन्दित-मानसो हंस इव कमल-वनेषु रेमे। (न) कदाचिन्मृगपतिरिव स्कन्धावलम्बित-केशर-(४) मालः क्रीड़ा-पर्वतेषु विचचार। (प) कदाचिन्मधुकरे

(द) कदाचिदिति। मुषलायुधो बलराम इव, चन्दनेन गात्रे चन्दनलेपनेन धवलः, कण्ठे अवसक्ता लग्ना उल्लसन्ती दोप्यमाना लोला चञ्चला कुसुममाला यस्य सः, पानं सीधुप्रभृतिमद्यपानं। पूर्णोपमा।

(ध) कदाचिदिति। गन्धप्रधानो गजः गन्धगजः। तल्लक्षणन्तु पालकाप्ये—"यस्य गन्धं समाघ्राय न तिष्ठन्ति प्रतिद्विपाः। तं गन्धहस्तिनं प्राहुर्नृपतेर्विजयावहम्।" मदेन मद्यपानजनितमत्ततया रक्तौ लोहितौ, पक्षे मदजलेन रञ्जितौ यौ कपोलौ गण्डौ तयोर्दोलायमानौ कर्णपल्लवौ कर्णाभरणीभूतपल्लवौ विस्तृतकर्णौ च यस्य सः। मदेन हर्षेण कलो मधुरास्फुटध्वनिर्यस्य सः, मदमत्तश्च। विकचैः प्रस्फुटितैः वनलतानां कुसुमैः सुरभिः परिमलो गन्धो यस्मिन् तत्। काननमुपवनं वनञ्च, जगाहे बभ्राम। पूर्णोपमा।

(न) कदाचिदिति। क्वणतां शब्दायमानानां सहचारिणीनां तरुणीनामिति भावः मणिनूपुराणां निनादेन आनन्दितं मानसं चित्तं यस्य सः। हंसपक्षेऽप्येवं, तस्यापि नूपुरनिनादेन हृष्टचित्ततायाः प्रसिद्धत्वात्। पूर्णोपमा।

(प) कदाचिदिति। मृगपतिः सिंह इव, स्कन्धे अवलम्बिता धृता केशरमाला बकुलकुसुममाला, जटाश्रेणी च येन सः। पूर्णोपमा।

(फ) कदाचिदिति। विजृम्भमाणैर्विकसद्भिः कुसुममुकुलैर्दन्तुराणि विषमाणि तेषु। पूर्णोपमा।

বলরামের ন্যায় চন্দনলেপনে শুভ্রবর্ণ হইয়া এবং কণ্ঠে মনোহর ও চঞ্চল কুসুমমালা ধারণ করিয়া প্রণয়িনীগণের সহিত মদ্য পান করিতেন। (ধ) মত্ত গন্ধহস্তী যেমন স্বকীয় মদজল-রঞ্জিত গণ্ডযুগলের উপরে বিস্তৃত কর্ণযুগল আন্দোলিত করিয়া প্রস্ফুটিত বনলতা-কুসুমের সৌরভসমন্বিত বনমধ্যে বিচরণ করে, রাজাও তেমন কোন সময়ে, মত্ততাবশতঃ আরক্তবর্ণ গণ্ডের উপরে কর্ণের পল্লব আন্দোলিত করিয়া এবং হর্ষবশতঃ মধুরধ্বনিসম্পন্ন হইয়া রমণীগণের সহিত বিকসিত বনলতা-কুসুমের সৌরভসমন্বিত উদ্যানে বিচরণ করিতেন। (ন) কোন সময়ে রাজা সহচারিণীগণের শব্দায়মান নূপুরের রবে আনন্দিতচিত্ত হইয়া হংসের ন্যায় পদ্মবনে ক্রীড়া করিতেন। (প) কোন সময়ে গলদেশে বকুলপুষ্পের মালা ধারণ করিয়া, স্কন্ধদেশে জটাসমূহধারী সিংহের ন্যায় ক্রীড়াপর্ব্বতে বিচরণ করিতেন। (ফ) কোন সময়ে পুষ্পের কলিকাসমূহ প্রস্ফুটিত হইতে থাকায় অসমানতাপ্রাপ্ত লতাগৃহে ভ্রমরের ন্যায় পরিভ্রমণ

(१) कण्ठावसक्तलोल..., कण्ठावसक्तसमुल्लसल्लोल...।

(२) मानपल्लवः। (३) क्वणित...। (४) स्कन्धावलम्बिकेसर...।

इव विजृम्भमाण-कुसुम-मुकुल-दन्तुरेषु लताग्टहेषु बभ्राम। (फ) कदाचित् (१) नील-पट-विरचिता-वगुण्ठनो बहुलपक्ष-(२) प्रदोष-दत्त-सङ्केताः सुन्दरीरभिससार।(ब) कदाचिच्च विघटित-कनक-कपाट-(३) प्रकट-वातायनेष्वनवरत-दह्यमान-कृष्णागुरु-धूमरक्तैरिव पारावतैः (४) अध्यासित-(५) विटङ्केषु महाप्रासाद-(६) कुक्षिषु कतिपयाप्त-सुहृत्-परिवृतो वीणा-वेणु-मुरज-मनोहरमन्तःपुर-सङ्गीतकं ददर्श। (भ) किं बहुना, (७) यद्यदतिरमणीयमभिमतमविरुद्धमायत्यां (८) तदात्वे च तत्तदनाक्षिप्तचेताः परिसमाप्तत्वादन्येषां पृथिवीव्यापाराणां सिषेवे,

(ब) कदाचिदिति। नीलपटेन कृष्णवसनेन विरचितं कृतं अवगुण्ठनं मस्तकावधिगात्रावरणं येन सः, अन्यकर्त्तृकदर्शनाशङ्कयेति भावः। बहुलपक्षस्य कृष्णपक्षस्य प्रदोषे निशामुखे दत्तः सङ्केतः 'युष्मासु तत्रागतासु मया गत्वा रन्तव्य'मिति निर्द्देशो यासु ताः।

(भ) कदाचिदिति। अपि चेति चार्थः। विघटितैरुद्घाटितैः कनककपाटैः प्रकटानि प्रकाशितानि वातायनानि गवाक्षा येषां तेषु, अनवरतं दह्यमानानां सौरभार्थमिति भावः, कृष्णागुरूणां धूमैः रक्ता रञ्जितास्तैरिव धूम्रवर्णत्वादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। पारावतैः कपोतैः अध्यासितानि आश्रितानि विटङ्कानि कपोतपालिका येषु तेषु, महाप्रासादानां उत्तमराजगृहाणां कुक्षिषु मध्येषु कतिपयैः आप्तैर्विश्वस्तैः सुहृद्भिः परिवृतः, वीणावेणुमुरजैस्तेषां वाद्यैरित्यर्थः मनोहरं, अन्तःपुरस्य सङ्गीतकं स्त्रीणां नृत्यं गीतं वाद्यञ्च। तेषु च नृत्यस्यैव तत्र प्रधानत्वात् ददर्शेति दर्शनक्रियोपपद्यते। तथा चोक्तं—'नृत्यं गीतञ्च वाद्यञ्च त्रयं सङ्गीतमुच्यते।''

(म) किमिति। आयत्यां उत्तरकाले, तदात्वे तस्मिन् समये च ''तत्कालस्तु तदात्वं स्यादुत्तरः काल आयतिः।'' इत्यमरः। अविरुद्धं परदाररमणजनगणात्याचारादिविरुद्धरहितं। अन्येषां भोगविलास-व्यतिरिक्तानां पृथिव्या व्यापाराणां शासनादीनां, परिसमाप्तत्वात् सुयोग्यमन्त्रिषु न्यस्ततया अवसितत्वात्,

করিতেন।৹ (ব) কোন সময়ে নীলবর্ণবস্ত্রে সকল অঙ্গ আবৃত করিয়া কৃষ্ণপক্ষের প্রদোষকালে দত্তসঙ্কেত সুন্দরীগণের উদ্দেশে গমন করিতেন। (ভ) এবং কোন সময়ে কতিপয় বিশ্বস্ত সুহৃদ্‌গণে পরিবৃত হইয়া উৎকৃষ্ট অট্টালিকার মধ্যে থাকিয়া, অন্তঃপুরস্থ রমণীগণের বীণা, বংশী ও মৃদঙ্গবাদ্যে মনোহর নৃত্যগীতাদি সঙ্গীতব্যাপার দর্শন করিতেন; তখন সেই সকল অট্টালিকার সুবর্ণময় কপাটগুলি উদ্‌ঘাটিত করায় গবাক্ষসমূহ উন্মুক্ত থাকিত এবং অবিশ্রান্ত কৃষ্ণাগুরু দগ্ধ করায় তাহার ধূমে রঞ্জিত হইয়াই যেন পায়রাগুলি খোপের ভিতরে বসিয়া থাকিত। (ম) বহুতর বলিয়া কি হইবে, (এইমাত্রই বলিলে চলিতে পারে, যে,) জগতের

(१) अत्र कस्मिंश्चित् पुस्तके स्मरथाविषयको विस्तृत एकः पाठो दृश्यते, स तु अप्राकरणिकतया नोद्धृतः।
(२) बहुलनिशाप्रदोष...। (३)...कनककपाटं। (४) पारापतैः। (५) अधिष्ठित...।
(६) प्रासाद...। (७) किञ्च बहुना। (८) अतिरमणीयमविरुद्धं आयत्या।

न तु व्यसनितया (१)। (म) प्रमुदितप्रजस्य हि पारसमाप्त-सकल-महीप्रयोजनस्य (२) नरपतेर्विषयसम्भोग-(३) लीला-भूषणम्, इतरस्य तु विडम्बना। (य) प्रजानुरागहेतोरन्तरान्तरा (४) दर्शनं ददौ, सिंहासनञ्च निमित्तेष्वारुरोह। (र) शुकनासोऽपि महान्तं तं (५) राज्यभारमनायासेनैव प्रज्ञाबलेन बभार। (ल) यथैव राजा सर्वकार्य्याण्यकार्षीत् (६) तद्वदसावपि द्विगुणीकृत-प्रजानुरागो

अनासक्तचेतास्तैरनाकृष्टचित्तः सन् सिषेवे भेजे, तु किन्तु, व्यसनितया तत्र तथासक्तिमत्तया न। अत एवास्य भोगविलासो न दोषायेति भावः। कालिदासोऽप्याह स्म "असक्तः सुखमन्वभूत्।"

(य) प्रमुदितेति। हि तथाहि। प्रमुदिता यथायथशासनपालनादिना आनन्दिताः प्रजा येन तस्य, परिसमाप्तानि योग्यसचिवादौ न्यस्ततया अवसितानि सकलानि महीप्रयोजनानि पृथिव्यामावश्यकाः शासन-पालनादिव्यापारा यस्य तस्य। विषयसम्भोगलीला स्रक्चन्दनवनितादिभोगविलासः भूषणं अलङ्कारस्वरूपा, तु किन्तु, इतरस्य तद्भिन्नस्य अपरिसमाप्तसकलमहीप्रयोजनस्य सुशासनाभावादशान्तिपूर्णराज्यस्य नरपतेरित्यर्थः, विषयसम्भोगलीला विडम्बना केवलात्मप्रतारणा, सततमेवोद्विग्नतया तादृक्सुखानुभवाभावादिति भावः। अत्र सामान्येन विशेषसमर्थनरूपोऽर्थान्तरन्यासोऽलङ्कारः।

(र) प्रजेति। अन्तरान्तरा मध्ये मध्ये, दर्शनं ददौ ताभ्यः प्रजाभ्य इति शेषः, अन्यथा स्वकीय-सुखदुःखयोरौदासीन्यानुमानेन प्रजानां विरागः स्यादिति भावः। निमित्तेषु केषुचिद् गुरुशासनव्यापारेषु उपस्थितेषु।

(ल) यथैवेति। असौ शुकनासोऽपि। द्विगुणीकृतः प्रजानामनुरागो येन सः।

মধ্যে যে যে বস্তু অতিশয় মনোহর, নিজের অভিমত এবং পরবর্ত্তী সময়ে ও সেই সময়ে কোনরূপ অনিষ্টজনক নহে, সেই সমস্তই তিনি অনাসক্তচিত্তে সম্ভোগ করিয়াছিলেন, কিন্তু আসক্তিবশতঃ নহে; কারণ—সুযোগ্য মন্ত্রীর হস্তে সমস্ত রাজকার্য্য ন্যস্ত থাকায় পৃথিবীর শাসন-পালনাদি অন্য সকল কার্য্যই তাঁহার সমাপ্ত হইয়া গিয়াছিল। (য) এই জগতে, উপযুক্ত মন্ত্রিপ্রভৃতির উপরে সমস্ত ভার বিন্যস্ত থাকায় যাঁহার রাজ্যের রক্ষণাবেক্ষণাদি সকল কার্য্য পরিসমাপ্ত হইয়া গিয়াছে, সেইরূপ প্রজারঞ্জক রাজারই ভোগবিলাস অলঙ্কারস্বরূপ; আর যাঁহার রাজ্য সুশাসনের অভাবে অশান্তি-পরিপূর্ণ, তাঁহার ভোগবিলাস করা বিড়ম্বনা মাত্র। (র) রাজা, প্রজাবর্গের নিমিত্ত মধ্যে মধ্যে তাহাদিগকে দর্শন দিতেন এবং বিশেষ কোন কার্য্য উপস্থিত হইলে সিংহাসনেও আরোহণ করিতেন।

(ল) শুকনাসও বুদ্ধিবলে, গুরুতর সেই রাজ্যভার অনায়াসেই বহন করিতেছিলেন। (ব) রাজা যে ভাবে সকল কার্য্য করিতেন, শুকনাসও রাজা হইতে দ্বিগুণ প্রজাগণের

---

(१) अतिव्यसनितया। (२)...महीमण्डलप्रयोजनस्य। (३) विषयोपभोगलीला। (४)...हेतोरान्तरा।
(५) महान्तं राज्यभारं, महान्तमपि तं राज्यभारं। (६) कार्य्याण्यकार्षीत्।

राजकार्य्याणि चक्रे (१)। (व) तमपि आवलित-(२) चूडामणि-मरीचि-मञ्जरी-जालिभिर्मौलिभिरावर्जित-कुसुम-शेखर-च्युत-मधु-शीकर-सिक्त-नृप-सभं (३) दूरावनति-प्रेङ्खोलित-(४) मणि-कुण्डल-कोटि-संघट्टिताङ्गदं राजकमाननाम। (श) तस्मिन्नपि चलति (५) चलित-चटुल-तुरग-(६) बल-मुखर-खुर-रव-बधिरीकृत-भुवनान्तराला:, (७) बल-भर-प्रचल-(८) वसुधातल-दोलायमान-गिरय:, गल-न्मदान्ध गन्धगज-दान-धारान्धकारा:, संसर्पदतिबहल-धूलि-पटल-(९) धूसरित-सिन्धव:, प्रचलत्-पदातिबल-कलकल-स्फोटित-(१०) कर्ण विवरा:, सरभसोद्-

(श) तमपीति। आवर्जितात् नमस्कारकाले शिरोनमनेन नमितात्, कुसुमशेखरात् पुष्पमयशिरो-भूषणात् च्युतैर्गलितै: मधुशीकरैर्मकरन्दविन्दुभि: सिक्ता नृपसभा येन तत्। तथा दूरादवनत्या पूर्वकायनमनेन प्रेङ्खोलितयोरान्दोलितयो: मणिकुण्डलयो रत्नमयकर्णकुण्डलयो: कोटिभ्यां अग्रदेशाभ्यां संघट्टिते घृष्टे अङ्गदे केयूरयुगलं यस्य तत्। "स्तनादीनां द्वित्वविशिष्टा जाति"रिति वामनवचनात् मणिकुण्डलयोरित्यादौ वाक्ये द्विवचनमुपन्यस्तं। राजकं राज्ञां समूह: कर्तृ, समूहेऽकण्। आवलितं अवनतं चूडामणिमरीचिमञ्जरीणां शिर:स्थितरत्नकिरणाग्राणां जालं समूह एषामस्तीति तै: मौलिभिर्मस्तकै:, तं शुकनासमपि आननाम।

(ष) तस्मिन्निति। तस्मिन् शुकनासेऽपि चलति कुत्रापि प्रतिष्ठमाने सति, दश दिश एवम्भूता बभुवु-रित्यन्वय:। तथा च चलितस्य शुकनासेन सह प्रस्थितस्य चटुलस्य चञ्चलस्य तुरगबलस्य अश्वसैन्यस्य, मुखरा: शब्दायमाना: ये खुरा: तेषां रवै: शब्दै: बधिरीकृतं भुवनान्तरालं जगन्मध्यं यासु ता:। बलभरेण सह-गामिसैन्यभारेण प्रचले कम्पिते वसुधातले भूतले दोलायमाना: कम्पमाना: गिरय: पर्वता यासु ता:। गलन्तीभि: क्षरन्तीभि: मदान्धानां गन्धगजानां पूर्वोक्तरूपाणां गन्धहस्तिनां दानधाराभिर्मदजलधाराभि: अन्ध-कारो यासु ता:। संसर्पता प्रसरता अतिबहलेन नितान्तप्रचुरेण धूलिपटलेन धूसरिता धूम्रवर्णीकृता: सिन्धवो नद्यो यासु ता:। प्रचलतां सह प्रतिष्ठमानानां पदातिबलानां कलकलै: कोलाहलै: स्फोटितानि विदारितानि कर्णविवराणि यासु ता:। सरभसं सवेगं उद्घुष्यमाणैर्जयशब्दै:, निर्न विद्यते अन्तरमवकाशो यासां ता:,

অনুরাগ জন্মাইয়া সেই ভাবেই রাজকার্য্য সম্পাদন করিতেন। (শ) অধীনস্থ রাজগণ মস্তকদ্বারা তাঁহাকেও (শুকনাসকেও) নমস্কার করিতেন, তখন তাঁহাদের চূড়ামণির কিরণজালের অগ্রভাগ অবনত হইত; মস্তক অবনত করায় পুষ্পময় শিরোভূষণ হইতে মধুবিন্দু সকল নিঃসৃত হইয়া রাজসভা সিক্ত করিত এবং দূর হইতে মস্তক অবনত করায় মণিময় কর্ণকুণ্ডলের অগ্রদেশদ্বারা বাহুস্থিত কেয়ূর সংঘর্ষিত হইত। (ষ) তিনিও কোন স্থানে প্রস্থান করিলে মদান্ধ গন্ধহস্তিদিগের মদধারা গলিত হইয়া দশদিক্ অন্ধকার করিত; সহগামী চপল অশ্বগণের শব্দায়মান খুরের ধ্বনিতে জগতের মধ্য বধির করিয়া ফেলিত; সৈন্যগণের পদভরে ভূমণ্ডল কম্পিত হইলে পর্ব্বতসমূহও কম্পিত হইতে

(१) चकार। (२) चलित...। (३)...सिक्तसभं। (४)...प्रेङ्खित...। (५) चलिते। (६) चटुलतुरङ्ग। (७)...भुवना:। (८) बलप्रचल...। (९)...अतिबहुल...। (१०)...। रवस्फोटित...

घुष्यमाण-जयशब्द-निरन्तराः, (१) प्रोद्धूयमान-धवल-चामर-सहस्र-संच्छादिताः, पुञ्जित-नरेन्द्रवृन्द-कनकदण्डातपत्र-संघट्ट-(२) नष्ट-दिवसाः, दश दिशो बभूवुः। (ष)

एवं तस्य मन्त्रि-विनिवेशित-राज्यभारस्य यौवन-सुखमनुभवतः कालो (३) जगाम। भूयसा च कालेनान्येषामपि जीवलोकसुखानां प्रायः सर्वेषामन्तं ययौ, एकन्तु सुत-मुख-(४) दर्शनसुखं न लेभे। तथा सम्भुज्यमानमपि (५) निष्फलपुष्पदर्शनं शरवणमिवान्तःपुरमभवत् (६)। (स) यथा यथा च यौवन-

---

तैः परिपूर्णा इत्यर्थः। प्रोद्धूयमानेन सञ्चाल्यमानेन धवलचामराणां सहस्रेण समूहेन संच्छादिताः। तथा पुञ्जितस्य सञ्जातराशिभावस्य नरेन्द्रवृन्दस्य राजगणस्य यानि कनकदण्डातपत्राणि स्वर्णदण्डशालीनि छत्राणि तेषां संघट्टेन उपरि परस्परदृढसंयोगेन नष्टस्तिरोभूतः दिवसो दिवसालोको यासु ताः। अत्र प्रत्येक-विशेषण एव असम्बन्धे सम्बन्धरूपातिशयोक्तिरलङ्कारः।

(स) एवमिति। एवमनेन प्रकारेण। मन्त्रिणि विनिवेशितः सम्पूर्णभावेन विन्यस्तो राज्यभारो येन तस्य, तस्य राज्ञः। अन्तं ययौ अनुभवेन पारं प्राप। तथा सम्भुज्यमानमपि तादृगुत्कटभावेन रम्यमानमपि अन्तःपुरं अन्तःपुरस्थस्त्रीगणः, शरवणं बाणाख्यतृणवृन्दमिव, निर्न विद्यते फलं पुत्रजननरूपं प्रयोजनं शस्यञ्च यस्य तत् निष्फलं, पुष्पाणां रजसां कुसुमानाञ्च दर्शनं यस्मिन् तत् तादृशमभवत्। शरवणे यथा पुष्पोत्पत्तावपि फलं नोत्पद्यते, तथा तासु स्त्रीषु रजस्वलासु सतीष्वपि सम्भोगमुख्यप्रयोजनभूतः पुत्रो नोदपद्यतेति सरलार्थः। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः। शरवणमिति "प्रनिरन्त"रित्यादिना णत्वम्।

থাকিত; অতিরিক্ত ধূলিসমূহ উত্থিত হইয়া পথের নিকটবর্ত্তী নদীগুলিকে ধূম্রবর্ণ করিয়া ফেলিত; সহচর পদাতিসৈন্যগণের কোলাহলে কর্ণবিবর বিদীর্ণ করিত; বেগে জয়ধ্বনি ঘোষণা করায় দশদিক্ পূর্ণ হইয়া যাইত এবং অসংখ্য শ্বেত চামর আন্দোলন করায় দশদিক্ আচ্ছাদিত হইত আর রাজগণ পরস্পর সংলগ্ন হইয়া অত্যন্ত ঘনভাবে সুবর্ণময় দণ্ড-সমন্বিত অসংখ্য ছত্র ধারণ করিতেন, তাহাতে দিনের আলোক তিরোহিত হইয়া যাইত।

(স) মহারাজ তারাপীড় মন্ত্রীর উপরে রাজ্যভার সম্পূর্ণ বিন্যস্ত করিয়া এই ভাবে যৌবনসুখ অনুভব করিতে লাগিলেন, সময় চলিয়া যাইতে লাগিল, বহুকাল যাবৎ সেই সুখ অনুভব করায় সংসারের অন্যান্য প্রায় সকল সুখেরই পার পাইলেন; কিন্তু একমাত্র পুত্রমুখ-দর্শনসুখ লাভ করিতে পারিলেন না।··· (হ) যেমন যেমন যৌবন অতীত হইতে

---

(१)...निर्भराः। (२)...संघट्टन...। (३) कश्चित् कालः। (४) तनयमुख..., लोकसुख...।
(५) उपभुज्यमानमपि। (६) अभूत्।

मतिचक्राम, तथा तथा विफल-(१) मनोरथस्यानपत्यता-जन्माऽवर्द्धतास्य (२) सन्तापः। विषयोपभोग-सुखेच्छाभिश्च मनो विजह्रे (३)। (छ) नरपति-सहस्र-परिवृतमप्यसहायमिव, चक्षुष्मन्तमप्यन्धमिव, भुवनालम्बनमपि (४) निरालम्बनमिव (५) आत्मानं (६) अमन्यत। (च)

अथ तस्य (७) चन्द्रलेखेव हरजटा-कलापस्य, कौस्तुभ-प्रभेव कैटभारि-(८) वक्षःस्थलस्य, वनमालेव मुसलायुधस्य, वेलेव सागरस्य, मदलेखेव दिग्गजस्य, लतेव पादपस्य, (९) कुसुमोन्नतिरिव (१०) सुरभिमासस्य, चन्द्रिकेव चन्द्रमसः,

(छ) यथेति। अनपत्यताया निःसन्तानतायाः सकाशात् जन्म यस्य सः। अस्य तारापीडस्य। विजह्रे परित्यज्यते स्म।

(च) नरेति। असहायमिव "शून्यमपुत्रस्य गृह"मिति न्यायेन शून्यमयतादर्शनात्। अन्धमिव पुन्नामनरकवाणोपायादर्शनात्। भुवनालम्बनमपि परिपालकतया जगदाश्रयमपि निरालम्बनं निराश्रयमिव, पिण्डोदकलाभासम्भवेन पतनसम्भवात्। अत्र प्रथमा अभावाभिमानिनी जात्युत्प्रेक्षा, द्वितीयाभावाभिमानिनी जात्युत्प्रेक्षा, तृतीयाप्यभावाभिमानिनी जात्युत्प्रेक्षा, तासाञ्च मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(क) अथेति। विलासवती नाम महिषी तस्य भूषणमभूदित्यन्वयः। हरजटाकलापस्य शम्भोर्जटा-समूहस्य, चन्द्रलेखेव शशिकलेव। कैटभारेर्विष्णोर्वक्षःस्थलस्य, कौस्तुभस्य मणेः प्रभा दीप्तिरिव। मुसला-युधस्य बलरामस्य वनमाला "आजानुलम्बिनी माला सर्वर्तुकुसुमोज्ज्वला। मध्ये स्थूलकदम्बाढ्या वनमालेति कीर्त्तिता।" इति शब्दमालोक्तलक्षणा मालेव। वेला तीरमिव। मदलेखा दानजलरेखेव। सुरभिमासस्य चैत्रस्य, कुसुमोन्नतिः पुष्पसमृद्धिरिव। मानसस्य तदाख्यसरोवरस्य। मलयस्य तदाख्यपर्वतस्य। शेषस्य

লাগিল, তেমন তেমন তাঁহার পুত্রের আশাও বিফল হইতে লাগিল; সন্তান না হওয়ায় মনের সন্তাপ বৃদ্ধি পাইতে লাগিল; ক্রমে বিষয়-সম্ভোগ-সুখের ইচ্ছা মনকে পরিত্যাগ করিল। (ক্ষ) তখন তিনি, অসংখ্য রাজগণে পরিবৃত হইলেও অসহায়ের ন্যায়, চক্ষুষ্মান্ হইলেও অন্ধের ন্যায় এবং জগতের আশ্রয় হইলেও নিরাশ্রয়ের ন্যায় আপনাকে মনে করিতে লাগিলেন।

(ক) চন্দ্রকলা যেমন মহাদেবের জটাসমূহের, কৌস্তুভমণির প্রভা যেমন নারায়ণের বক্ষঃস্থলের, বনমালা যেমন বলরামের তীর যেমন সমুদ্রের, মদজলের রেখা যেমন দিগ্-হস্তীর, লতা যেমন বৃক্ষের, পুষ্পসমৃদ্ধি যেমন চৈত্রমাসের, জ্যোৎস্না যেমন চন্দ্রের, পদ্মিনী যেমন সরোবরের, নক্ষত্রশ্রেণী যেমন আকাশের, হংসশ্রেণী যেমন মানসসরোবরের, চন্দনবন-

(१) निष्फल...। (२) महानवर्द्धतास्य। (३) विजह्रे, विजगाहे।
(४) भुवनलम्बनं, भुवनावलम्बनं। (५) निरालम्बमिव। (६) आत्मानममन्यत। (७) अस्य।
(८) कैटभाराति...। (९) कल्पपादपस्य। (१०) पुष्पोद्गतिरिव, कुसुमोद्गतिरिव।

लिखित: (१) कृष्णागुरुपत्रभङ्ग: (२) पयोधरभारे ?। केन कारणेन तन्वीयं हर-मुकुट-चन्द्रलेखेव गङ्गास्रोतसा न विभूषिता हारेण वरारोहे! (३) शिरोधरा? (घ)। किं वृथा वहसि विलासिनि! स्रवदश्रुजल-लव-धौत-कुङ्कुम-पत्रलतं (४) कपोल-युगलम्? (५) (ङ) इदञ्च कोमलाङ्गुलिदलनिकरं (६) रक्तोत्पलमिव करतलं किमिति कर्णपूरतामारोपितम्? (च) इमाञ्च केन हेतुना मानिनि! धारयस्यनुपरचित-गोरोचना-

नयोरैकाश्रयानुप्रवेशरूप: सङ्कर:। अयं मध्यभाग: कटीदेश:, किंनिमित्तं अपगतेन दूरीभूतेन मेखलाकलापेन काञ्चीदामरूपालङ्कारेण मूको नि:शब्द:। "कलापो भूषणे बर्हे तूणीरे संहतेऽपि च।" इति विश्व:। हरिणलाञ्छने चन्द्रे। पयोधरभारे विशालस्तनयुगले, कृष्णागुरुणा कृष्णवर्णगन्धद्रव्यविशेषेण पत्रभङ्ग: पत्रभङ्गाकारतिलकविशेष:। लिखितश्चित्रित:। गौरतया वर्त्तुलतया च चन्द्रपयोधरयो:, कृष्णतया च हरिणागुरुपत्रभङ्गयो: सादृश्यं बोध्यम्। उपमा। वरानुत्तमपुरुषान् तेषां मनांसीत्यर्थ: आरोहति या सा वरारोहा उत्तमाङ्गना। हे तन्वि कृशाङ्गि! हे वरारोहे! इयं शिरोधरा तव ग्रीवा, गङ्गास्रोतसा हरस्य शिवस्य यन्मुकुटं मुकुटीभूतो जटाजूट: तस्य चन्द्रलेखेव शशिकलेव न विभूषिता नालङ्कृता। उपमा।

(ङ) किमिति। स्रवद्भि: पतद्भि: अश्रुजललवैर्नयनजलबिन्दुभि:, धौता प्रक्षालिता कुङ्कुमस्य पत्रलता तत्तदाकारचिह्नं यस्मिन् तत्। वृथा अनर्थकं किं कथं वहसि।

(च) इदमिति। कोमला मृदुला अङ्गुलय: दलनिकर: पत्रसमूह इव यत्र तत्, करतलं वामपाणितलं किमिति रक्तोत्पलमिव, कर्णपूरतां वामकर्णाभरणतां आरोपितं प्रापितं। वामकरतले वामभावेन मुखस्थापनादिति भाव:। अत्रोपमालङ्कारो लुप्तोपमया सङ्कीर्य्यते।

(छ) इमामिति। अनुपरचितं अनिर्म्मितं गोरोचनाबिन्दुभिस्तिलकं यत्र तां, तथा असंस्कृता-

মত পা'দুখানিতে আলতা দেও নাই কেন? মদন-সরোবরের কলহংসযুগলস্বরূপ রত্নময় নূপুরযুগল চরণপঙ্কজ-স্পর্শে অনুগৃহীত কর নাই কেন? তোমার এই কটিদেশ কাঞ্চী ধারণ না করায় নীরব হইয়া রহিয়াছে কেন? কেনই বা চন্দ্রের উপরে হরিণচিহ্নের ন্যায় বিশাল স্তনযুগলের উপরে কৃষ্ণাগুরুদ্বারা পত্রভঙ্গ চিত্রিত কর নাই? হে কৃশাঙ্গি! হে বরবর্ণিনি! গঙ্গার স্রোতে মহাদেবের মুকুটস্থিত চন্দ্রকলার ন্যায় তোমার এই কণ্ঠদেশ মুক্তার হারে অলঙ্কৃত হয় নাই কেন? (ঙ) হে বিলাসিনি! কেন তুমি বৃথা রোদন করিতেছ? তোমার নয়ন হইতে অশ্রুবিন্দুসকল নির্গত হইয়া কপোলযুগলের কুঙ্কুমের পত্রলতাচিহ্নগুলি প্রক্ষালিত করিয়াছে। (চ) পদ্মের দলসমূহের ন্যায় কোমল অঙ্গুলি-সমন্বিত এই বাম করতল কি নিমিত্ত রক্তপদ্মের ন্যায় কর্ণের আভরণ করিয়াছ? (ছ) গোরোচনাবিন্দুদ্বারা ললাটে

(१) आलिखित:। (२) कृष्णागुरुपङ्कपत्रभङ्ग:। (३) वरोरु!।
(४) धौतपत्रलतं। (५) कपोलयुगं। (६)...अङ्गुलिनिकरं।

विन्दु-तिलकामसंस्कृतालकिनीमलिकलेखाम्? (१) (छ) अयञ्च ते (२) बहुलपक्षप्रदोष इव चन्द्रलेखा-विरहितः करोति मे दृष्टिखेदं (३) अतिबहुल-तिमिर-पटलान्धकारः कुसुमरहितः (४) केशपाशः। (ज) प्रसीद, निवेदय देवि! दुःख-निमित्तम्। एते हि पल्लवमिव सरागं मे हृदयं कम्पयन्ति तरलीकृतस्तनांशुकास्तवायता निःश्वासमारुताः (५)। (झ) कच्चित् मयापराद्धम्? अन्येन वा केनचिदस्मदुपजीविना (६) परिजनेन?। अतिनिपुण-मपि (७) चिन्तयन् न पश्यामि खलु स्खलितमल्पमप्यात्मन-(८) स्त्वद्विषये। त्वदायत्तं हि मे जीवितं राज्यञ्च। (ञ) कथ्यतां सुन्दरि! शुचः कारणम्"

तैलादिसंस्काररहितीकृताः अलकाः कुटिलकुन्तला अस्याः सन्तीति ताम्। अलिकलेखां रेखाङ्कितभालस्थलं। "ललाटमलिकं" इत्यमरः।

(ज) अयमिति। चन्द्रलेखया शशिकलया विरहितः, अतएव अतिबहुलेन तिमिरपटलेन ध्वान्तचयेन अन्धकारो दृष्टिप्रसाररोधी, बहुलपक्षस्य कृष्णपक्षस्य प्रदोषो यामिनीमुखमिव, कुसुमरहितः अतएव अति-बहुलतिमिरपटलवत् अन्धकारः केवलकृष्णवर्ण इत्यर्थः, ते तव केशपाशः, मे मम दृष्टिखेदं नयनदुःखं करोति। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(झ) प्रसीदेति। तरलीकृतं चञ्चलीकृतं स्तनयोरंशुकं वसनं यैस्ते, आयता दीर्घाः, तव निःश्वास-मारुता निश्वासवायवः, पल्लवमिव, रागेण अनुरागेण रक्तिम्ना च सह विद्यमानमिति सरागं मे मम हृदयं कम्पयन्ति उद्वेजयन्ति सञ्चालयन्ति च। अत्रापि पूर्णोपमालङ्कारः।

(ञ) कच्चिदिति। कच्चिदित्यभीष्टप्रश्ने। आत्मनः स्वस्य। स्खलितमन्याय्याचरणम्।

তিলক নির্ম্মাণ কর নাই, আবার অপরিষ্কৃত কেশকলাপ আসিয়া ললাটের উপর পড়িয়াছে, হে মানিনি! তুমি কি নিমিত্ত এইরূপ ললাট ধারণ করিতেছ? (জ) চন্দ্রকলা উদিত হয় নাই, তাহাতে গাঢ় অন্ধকারসমূহ দৃষ্টি রোধ করিতেছে—এইরূপ কৃষ্ণপক্ষের প্রদোষকাল যেমন নয়নের দুঃখ জন্মায়, সেইরূপ পুষ্পবিহীন, সুতরাং গাঢ় অন্ধকারের ন্যায় ঘোর কৃষ্ণবর্ণ তোমার এই কেশকলাপ আমার নয়নের দুঃখ জন্মাইতেছে। (ঝ) মহিষি! প্রসন্ন হও, দুঃখের কারণ প্রকাশ কর; সাধারণ বায়ু যেমন রক্তবর্ণ পল্লব কম্পিত করে, সেইরূপ তোমার এই দীর্ঘ নিশ্বাস, স্তনের বসন কম্পিত করিয়া আমার অনুরক্ত হৃদয়কে কম্পিত করিতেছে। (ঞ) আমি কি কোন অপরাধ করিয়াছি? কিংবা আমাদের আশ্রিত অন্য কোন পরিজন কোন অপরাধ করিয়াছে? আমি অতি নিপুণভাবে চিন্তা করিয়াও তোমার বিষয়ে নিজের অল্পও কোন অন্যায় আচরণ দেখিতেছি না; কারণ—আমার জীবন ও রাজ্য এই উভয়ই

---

(१)...तिलका असंयमितालकिनीं ललाटलेखाम्। (२) क्वचित् 'ते' इति नास्ति। (३) दृष्टिवेदनां (४)...अन्धकारः केशपाशः। (५) श्वाससमरुतः। (६) अनुजीविना। (७) क्वचित् 'अपि' शब्दो नास्ति। (८) क्वचित् 'अल्प' शब्दोऽपि नास्ति।

इत्येवमभिधीयमानापि (१) विलासवती (२) यदा न किञ्चित् प्रतिवचनं प्रपेदे (३) तदा विवृद्धबाष्पहेतुमस्याः परिजनमपृच्छत् । (ट)

अथ तस्यास्ताम्बूलकरङ्कवाहिनी सतत-प्रत्यासन्ना मकरिका नाम राजानमुवाच । "देव ! कुतो देवादल्पमपि परिस्खलितम् ? अभिमुखे च देवे का शक्तिः परिजनस्यान्यस्य वा कस्यचिदपराद्धुम् ? किन्तु 'महाग्रह-(४) ग्रस्तेव विफल-नरेन्द्र-(५) समागमास्मि' इत्ययमस्या देव्याः सन्तापः, सुमहांश्च (६) कालः सन्तप्यमानायाः । (ठ) प्रथममपि स्वामिनी (७) दानवश्रीरिव

(ट) कथ्यतामिति । शुचः शोकस्य । प्रतिवचनमुत्तरं, प्रपेदे प्राप्ता दत्तवतीत्यर्थः । विवृद्धस्य वृद्धिं प्राप्तस्य बाष्पस्य अश्रुणः हेतुं कारणं । पृच्छतेर्द्विकर्मकत्वादुभयत्रापि कर्मणि द्वितीया ।

(ठ) अथेति । ताम्बूलकरङ्कवाहिनी पर्णमञ्जूषाधारिणी, सततप्रत्यासन्ना सर्वदा निकटचारिणी । देवे राजनि भवति अभिमुखे प्रसन्ने सति । महाग्रहेण पूतनादिना केनचिदुत्कटभूतेन ग्रस्ता अधिष्ठिता नारीव, विफलोऽपत्यजननाभावान्निष्फलः नरेन्द्रस्य राज्ञस्तारापीडस्य समागमो रतिसंसर्गो यस्याः सा, पक्षे विफलो भूतापसारणस्याशक्यत्वान्निष्फलः, नरेन्द्रस्य भूतापसारकचिकित्सकस्य समागम उपस्थितिर्यस्याः सा । अत्र पूर्णोपमालङ्कारः । केचित्तु नारीत्यनुक्तत्वादुत्प्रेक्षामाचक्षते । इति हेतोः । सन्तप्यमानाया विषीदन्त्याः, सुमहान् अतिबहुलः कालो गत इति शेषः ।

তোমার অধীন। (ট) অতএব সুন্দরি! তোমার শোকের কারণ বল।" রাজা এইরূপ বলিলেও বিলাসবতী যখন কোন উত্তর করিলেন না, তখন রাজা পরিজনদিগকে তাঁহার অতিরিক্ত অশ্রুপাতের কারণ জিজ্ঞাসা করিলেন।

(ঠ) তদনন্তর বিলাসবতীর তাম্বূলকরঙ্কবাহিনী (সর্ব্বদা পানের ডীবি নিয়া যে বেড়ায়) ও সর্ব্বদা নিকটবর্ত্তিনী মকরিকা নামে কোন পরিচারিকা রাজাকে বলিল—"মহারাজ! আপনা হইতে অল্পও অন্যায় আচরণ হইবার সম্ভাবনা কি? আবার আপনি প্রসন্ন থাকিলে পরিজন বা অন্য কাহারও কোন অপরাধ করিবার কি শক্তি আছে? কিন্তু 'প্রবলভূতাবিষ্ট স্ত্রীলোকের পক্ষে ভূতচিকিৎসকের উপস্থিতি যেমন বিফল হইয়া যায়, আমার পক্ষেও তেমন রাজার সম্ভোগ বিফল হইয়া যাইতেছে'—ইহা ভাবিয়াই রাণীর এইরূপ সন্তাপ জন্মিয়াছে এবং এইরূপ সন্তাপ করিতে করিতেই অনেক সময় অতীত হইয়া থাকে। (ড) অসুরগণের লক্ষ্মী যেমন সর্ব্বদা দেবগণের নিন্দা করিয়া থাকে, রাণীও তেমন সর্ব্বদা সম্ভোগের নিন্দা করিয়া, ইহার পূর্ব্বেও পরিজনবর্গের অনুরোধে অতি কষ্টে শয়ন, উপবেশন, স্নান, ভোজন ও অলঙ্কারধারণ প্রভৃতি প্রতিদিবসীয় আবশ্যককার্য্যে শোকের সহিতই যেন প্রবৃত্ত হইতেন;

---

(१) क्वचित् अपिशब्दो न दृश्यते । (२) क्वचित् विलासवतीति न वर्त्तते । (३) प्रतिवचः प्रतिपेदे । (४) महाग्राह... (५) विफलराज... । (६) महांश्च । (७) स्वामिनः ।

सततनिन्दितसुरता शयनासन-स्नान-(१) भोजन-भूषण-परिग्रहादिषु समुचितेष्वपि (२) दिवसव्यापारेषु कथं कथमपि परिजनप्रयत्नात् प्रवर्त्तमाना (३) सशोकेवासीत्, देवहृदय-पीड़ा-परिजिहीर्षया च न दर्शितवती विकारम्, (ड) अद्य तु चतुर्द्दशीति भगवन्तं महाकाल-(४) मर्च्चितुमितो गतया तत्र महाभारते वाच्यमाने श्रुतम्—"अपुत्राणां किल न सन्ति (५) लोकाः शुभाः, पुन्नाम्नो नरकात्त्रायत इति पुत्रः" इत्येतच्छ्रुत्वा भवनमागत्य परिजनेन सशिरःप्रणाममभ्यर्थ्यमानापि नाहारमभिनन्दति, न भूषणपरिग्रहमाचरति, नोत्तरं प्रति-

(ड) प्रथममिति। प्रथममपि इतः पूर्वमपि स्वामिनी इयं देवी, दानवश्रीरिव असुरलक्ष्मीरिव, सततं निन्दितं सन्तानाजननाद्विगर्हितं सुरतं स्वकीयराजसम्भोगो यया सा, पक्षे सततं निन्दिता विपक्षत्वाद्विगर्हिता सुरता देवसमूहो यया सा, तादृशी सती। दिवसव्यापारेषु प्रतिदिवसीयकार्य्येषु। कथं कथमपि अतिकष्टेनेत्यर्थः। देवस्य भवतः हृदयपीड़ायाः स्वकीयविषाददर्शनेन सम्भाव्यमानमनोदुःखस्य, परिजिहीर्षया परिहर्त्तुमिच्छया अनुत्पत्तीच्छयेत्यर्थः, विकारं इदानीन्तनमिव अश्रुपातादिकं न दर्शितवती।

(ढ) अद्येति। चतुर्द्दशी तिथिरिति हेतोः, "शिवप्रोक्ता चतुर्द्दशी"ति स्मृतेः शिवार्च्चनायां चतुर्द्दश्याः प्रशस्तत्वादिति भावः। लोका लोकाख्यस्वर्गाः। तथा च महाभारतम्—

"पुत्रेण लोकान् जयति पौत्रेणानन्त्यमश्नुते। अथ पुत्रस्य पौत्रेण ब्रध्नस्याप्नोति विष्टपम्।"

"पुन्नाम्नो नरकाद् यस्मात्त्रायते पितरं सुतः। तस्मात् पुत्र इति ख्यातः स्वयमेव स्वयम्भुवा।"

शिरःप्रणामेण मस्तकावनमनेन सहेति सशिरःप्रणामं यथा तथा, अभ्यर्थ्यमानापि अनुरुध्यमानापि। अभिनन्दति आद्रियते। भूषणपरिग्रहं नाचरति अलङ्कारधारणं न करोति। उत्तरं न प्रतिपद्यते कथमीदृशं व्यवह्रियस

এবং পাছে আপনার মনেও দুঃখ উপস্থিত হয়—এই আশঙ্কায় সেই দুঃখের কোন লক্ষণ বাহিরে প্রকাশ করেন নাই; (ঢ) কিন্তু আজ চতুর্দ্দশী তিথি বলিয়া ভগবান্ মহাকালের পূজা করিবার নিমিত্ত এ স্থান হইতে গিয়াছিলেন, সেখানে মহাভারত পাঠ হইতেছিল, তাহাতে শুনিয়াছেন যে—'পুত্রহীন ব্যক্তিগণের মঙ্গলময় 'লোক' নামে স্বর্গ হয় না;' 'পুৎ' নামক নরক হইতে পিতা ও মাতাকে ত্রাণ করে বলিয়া তনয়ের নাম 'পুত্র' ইহা শুনিয়া গৃহে আসিলে পর পরিজনবর্গ মস্তক অবনত করিয়া অনুরোধ করিলেও ইনি আহার করিতে চান না, কোন অলঙ্কার ধারণও করিতেছেন না, 'কেন এমন করিতেছেন' ইহা জিজ্ঞাসা করিলেও কোন উত্তর দেন না, কেবল নিরন্তর অশ্রু বিসর্জ্জনপূর্ব্বক মলিনবদনে

(१) शयनस्नान, शयनासनस्नान...। (२) समुचितेषु दिवस...।
(३) प्रवर्त्तमाना। (४) अद्य चतुर्द्दशी, अद्य चतुर्द्दशी, महाकालाभिधानं।
(५) अपुत्राणां न सन्ति, अपुत्राणां किल गतिर्नास्ति न वा सन्ति...।

पश्यति, केवलमविरलबाष्प-(१) दुर्द्दिनान्धकारितमुखी रोदिति। एतदाकर्ण्य देवः प्रमाणम्।" इत्यभिधाय (२) विरराम। (ङ)

विरतवचनायां (३) तस्यां भूमिपालस्तूष्णीं मुहूर्त्तमिव स्थित्वा दीर्घमुष्णञ्च निश्वस्य (४) निजगाद—"देवि! किमत्र क्रियतां दैवायत्ते वस्तुनि, अलमति-रुदितेन, (५) न वयमनुग्राह्याः (६) प्रायो देवतानाम्, आत्मज-परिष्वङ्गा-मृतास्वाद-सुखस्य नूनमभाजनमस्माकं हृदयम्, अन्यस्मिन् जन्मनि न कृत-मवदातं कर्म्म, जन्मान्तरकृतं (७) हि कर्म्म फलमुपनयति पुरुषस्येह-जन्मनि, न हि शक्यं दैवमन्यथा कर्त्तुमभियुक्तेनापि। (च) यावत्तु (८)

इति जिज्ञासायां कृतायामपि प्रतिवाक्यं न दत्ते। अविरलानां घनानां बाष्पाणां अश्रूणां दुर्द्दिनेन इष्या अन्धकारितं सञ्जातान्धकारं मलिनमित्यर्थः मुखं यस्याः सा। "घनान्धकारे हर्ष्टी च दुर्द्दिनं कवयो विदु"-रिति साक्षः। देवो भवान् प्रमाणं कर्त्तव्यनिर्वाचकः।

(च) विरतेति। तस्यां मकरिकायां। दैवायत्ते भाग्याधीने, वस्तुनि पुत्रलाभरूपविषये, क्रियतां मनुष्यमात्रेण त्वया मया वेति शेषः। राज्यलाभादावनुग्रहदर्शनात् प्रायःपदम्। नूनं निश्चितं। आत्मजस्य पुत्रस्य परिष्वङ्ग आलिङ्गनमेव अमृतं पीयूषं तस्य आस्वादेन अनुभवेन यत् सुखमानन्दस्तस्य, अभाजनमपात्रं अनधिकारीत्यर्थः। अत्र निरङ्गं केवलरूपकमलङ्कारः। कथमेतदवगम्यत इत्याह अन्यस्मिन्निति। अन्यस्मिन् पूर्वस्मिन्। अवदातं निर्म्मलं कर्म्म पुत्रालिङ्गनानन्दजननोपयोगि पुण्यमित्यर्थः। हि तथाहि। कर्म्म धर्म्माधर्म्म-रूपं कर्तृ। उपनयति उत्पादयति। "तत्र दैवमभिव्यक्तं पौरुषं पौर्वदैहिक"मिति वृहस्पतिवचनादिति भावः। "अभिव्यक्तं फलजननायोन्मुखीभूत"मिति स्मार्त्तः। अभियुक्तेनापि महायोगिनापि। मादृशानां का कथेति भावः।

রোদন করিতেছেন; ইহা শুনিয়া এখন আপনি যাহা নির্দ্দেশ করেন (তাহাই করা যাইবে)" এই কথা বলিয়া মকরিকা বিরত হইল।

(ণ) মকরিকা বিরত হইলে রাজা মৌনাবলম্বনপূর্ব্বক কিছু কাল থাকিয়া, দীর্ঘ ও উষ্ণ নিশ্বাস পরিত্যাগ করিয়া কহিলেন—"দেবি! পুত্রলাভ করা দৈবের অধীন; সুতরাং সামান্য মনুষ্য হইয়া তুমি বা আমি এ বিষয়ে কি করিতে পারি? অতএব নিরন্তর রোদন করিও না; আমরা অনেক বিষয়েই দেবগণের অনুগ্রহের পাত্র নহি; আর আমাদের হৃদয়ও, পুত্রের আলিঙ্গনরূপ অমৃত-আস্বাদন-জনিত সুখের অধিকারী নহে; কারণ, আমরা পূর্ব্বজন্মে কোন ধর্ম্মকার্য্য করি নাই; পূর্ব্বজন্মে যে ধর্ম্ম বা অধর্ম্ম করা হইয়াছে, তাহাই মনুষ্যের ইহজন্মে অনুরূপ ফল জন্মাইয়া থাকে; মহাযোগী পুরুষও দৈবকে অন্যরূপ করিতে সমর্থ

(१)···बाष्पबिन्दु···। (२) इत्येतदभिधाय। (३) विरतवचनायाञ्च। (४) निःश्वस्य।
(५) अतिमात्रमलं रुदितेन। (६) वयमननुग्राह्याः। (७) जन्मान्तरविहितं। (८) यावत्।

मानुष्यके शक्यमुपपादयितुं तावत् सर्वमुपपाद्यताम्, आधिका कुरु देवि ! गुरुषु भक्तिम्, (१) द्विगुणामुपपादय देवतासु पूजाम्, (२) ऋषिजनसपर्य्यासु (३) दर्शितादरा भव, परं हि दैवतमृषयो यत्नेनाराधिता यथासमीहितफलानामति-दुर्लभानामपि (४) वराणां दातारो भवन्ति। (त) श्रूयते (५) हि पुरा चण्ड-कौशिकप्रसादात् (६) मगधेषु (७) बृहद्रथो नाम राजा जनार्द्दनस्य जेतारं (८) अतुलभुजबलमप्रतिरथं (९) जरासन्धं नाम तनयं लेभे। (थ) दशरथश्च राजा परिणतवया अपि (१०) विभाण्डकमहामुनिसुतस्य ऋष्यशृङ्गस्य प्रसादात् नारायणभुजानिवाप्रतिहतान् उदधीनिवाक्षोभ्यानवाप चतुरः पुत्रान्। (द)

(त) यावदिति। मानुष्यके मनुष्यलोके, यावदुपपादयितुं कर्त्तुं शक्यं। उपपाद्यतां क्रियताम्। किं तदित्याह अधिकामित्यादि। उपपादय कुरु। ऋषिजनस्य सपर्य्यासु पूजासु। ननु मानुषमात्रस्य ऋषिजनस्य पूजासु कथमादरो दर्शनीय इत्याह परं हीति। हि यस्मात्। परं दैवतं उत्कृष्टदेवतास्वरूपाः। यथासमीहितं यथेष्टं फलं येषु तेषां।

(थ) उक्तमेवार्थं दृष्टान्तेन द्रढ़यति श्रूयत इति। चण्डकौशिकप्रसादात् विश्वामित्रानुग्रहात्। मगधेषु मगधनामकदेशे। "बहुलत्व"दित्यादिना बहुवचनम्। अप्रतिरथं प्रतिपक्षरहितं।

(द) दशेति। परिणतवया अपि वृद्धोऽपीत्यर्थः। विभाण्डकनामा यो महामुनिस्तस्य सुतस्य। अप्रतिहतान् अन्यैरनिवारितान्। उदधीन् समुद्रानिव अक्षोभ्यान् अजेयान् अनुद्वेलनीयांश्च। पुत्रान् राम-चन्द्रादीन्। अवाप लेभे। अत्र पूर्व्वोपमयोः परस्परनिरपेक्षतया संसृष्टिरलङ्कारः।

হ'ন না। (ত) দেবি! এই মনুষ্যলোকে যতদূর করিতে পারা যায়, পুত্রলাভের নিমিত্ত সে সমস্তই কর; গুরুজনের প্রতি অধিক ভক্তি কর; পূর্ব্বাপেক্ষা দ্বিগুণ দেবতাপূজা কর; মুনিগণের সেবাতে বিশেষরূপে আদরপ্রদর্শন কর; কারণ, মুনিগণ প্রধান দেবতাস্বরূপ; সুতরাং যত্নপূর্ব্বক তাঁহাদের আরাধনা করিলে তাঁহারা অভিলষিত-ফলজনক অতিদুর্লভ বরও দিয়া থাকেন। (থ) পুরাণ ও ইতিহাসে শুনা যায় যে, পূর্ব্বকালে বৃহদ্রথ নামে মগধদেশের রাজা, মহর্ষি বিশ্বামিত্রের অনুগ্রহে কৃষ্ণবিজয়ী, অতুলনীয়-বাহুবলসম্পন্ন এবং প্রতিদ্বন্দ্বিরহিত জরাসন্ধ নামে পুত্র লাভ করিয়াছিলেন। (দ) আর রাজা দশরথ বৃদ্ধ হইয়াও মহর্ষি বিভাণ্ডকের পুত্র ঋষ্যশৃঙ্গের অনুগ্রহে নারায়ণের বাহুর ন্যায় অপ্রতিহত-শক্তিসম্পন্ন এবং সমুদ্রের ন্যায় অক্ষোভণীয় (অজেয় এবং অনুদ্বেলনীয়) রামচন্দ্রপ্রভৃতি চারিটি পুত্র লাভ

(१) गुरुभक्तिं। (२) दैवतपूजा। (३)...परिचर्य्यासु। (४) दुर्लभानामपि।
(५) श्रूयन्ते। (६) कौशिकप्रभावात्, चण्डकौशिकप्रभावात्, चण्डकौशिकप्रसादप्रभावात्।
(७) मगधेषौ...। (८) जनार्द्दनप्रतिमं। (९) अतुलबलपराक्रमं, अमरतुल्यभुजबलं।
(१०) परिणतवया विभा...।

अन्ये च राजर्षयस्तपोधनानाराध्य पुत्रदर्शनामृतस्वाद-(१) सुखभाजो बभूवः। (ध) अमोघफला हि महामुनिसेवा भवति (२)। (न) अहमपि खलु देवि! (३) कदा समुपारूढगर्भभरालसामापाण्डुरमुखीं (४) आसन्न-पूर्णचन्द्रोदयामिव (५) पौर्णमासीनिशां देवीं द्रक्ष्यामि (६)। (प) कदा मे तनयजन्म-महोत्सवानन्द-निर्भरो हरिष्यति पूर्णपात्रं परिजनः। (फ) कदा हारिद्रवसनधारिणी सुत-सनाथोत्सङ्गा द्यौरिवोदित-(७) रविमण्डला सबाला-तपा मामानन्दयिष्यति देवी। (ब) कदा सर्वौषधि-पिञ्जर-(८) जटिलकेशो

(ध) अन्य इति। अन्ये दिलीपादयः। पुत्रदर्शनमेव अमृतं तस्य स्वादेन अनुभवेन सुखं भजन्ते ये ते तथोक्ताः। अत्रापि निरङ्गं केवलरूपकमलङ्कारः।

(न) अमोघेति। हि यस्मात्। अमोघफला अव्यर्थफला।

(प) अहमिति। समुपारूढस्य उत्पन्नस्य गर्भस्य भरेण भारेण अलसां सर्वकार्य्येषु मन्दां, आपाण्डुरं गर्भधारणस्वभावात् चन्द्रोदयाच्च ईषत् पाण्डुवर्णं मुखं वदनं प्रथमभागश्च यस्यास्ताम्, अतएव आसन्नः समीपवर्त्ती पूर्णचन्द्रस्य उदयो यस्यास्तां, पौर्णमासीनिशामिव देवीं भवतीम्। अत्रोपमालङ्कारः।

(फ) कदेति। तनयजन्ममहोत्सवेन आनन्दनिर्भरः आमोदातिशयो यस्य सः, परिजनः, मे मम पूर्ण-पात्रं पूर्णानकं शरीरधृतं वस्त्रमाल्यादिकमिति यावत् हरिष्यति बलान्नेष्यति। "वर्द्धापकं यदानन्दा-दलङ्कारादिकं पुनः। आकृष्य गृह्यते पूर्णपात्रं पूर्णानकञ्च तत्।" इति हारावली।

(ब) कदेति। हरिद्रया रक्तमिति हारिद्रं तादृशं वसनं धारयति परिदधाति या सा, तथा सुतेन पुत्रेण सनाथः सहितः उत्सङ्गः क्रोड़ो यस्याः सा, देवी भवती, उदितं रविमण्डलं सूर्य्यविम्बं यस्यां सा, अतएव सबालातपा नवीनसूर्य्यालोकसहिता द्यौराकाशमिव। अत्र रविमण्डलेन सह नवजाततया ताम्रवर्णस्य शिशोः, बालातपेन सह बालकप्रभाभासितहारिद्रवसनस्य, दिवा च सह देव्याः सादृश्यं बोध्यमित्युपमालङ्कारः।

করিয়াছিলেন। (ধ) দিলীপপ্রভৃতি অন্যান্য রাজর্ষিগণও মহর্ষিদিগের আরাধনা করিয়া পুত্রদর্শনরূপ অমৃত আস্বাদনের সুখভাগী হইয়া গিয়াছেন; (ন) কারণ, মহর্ষিগণের আরাধনার ফল অব্যর্থ হইয়া থাকে। (প) দেবি! আমিও, পূর্ণচন্দ্রের উদয় নিকটবর্ত্তী হইলে পূর্ণিমার রাত্রির ন্যায় ঈষৎ পাণ্ডুবর্ণ-বদন এবং উৎপন্ন গর্ভের ভারে অলস-দেহ—এই অবস্থায় তোমাকে কবে দেখিতে পাইব? (ফ) পুত্রজন্মের মহোৎসবে আনন্দে মত্ত হইয়া পরিজনবর্গ কবে আমার গাত্র হইতে বস্ত্র ও মাল্যপ্রভৃতি বলপূর্ব্বক অপহরণ করিবে? (ব) উদিত সূর্য্যমণ্ডলসমন্বিত এবং নূতন-রৌদ্র-সংযুক্ত আকাশের ন্যায় কবে তুমি হরিদ্রা-

(१)...आस्वाद...। (२) महामुनिजनसेवाः, भवन्ति। (३) क्वचित् 'देवि!' इति नास्ति।
(४) आपाण्डुमुखीं। (५) आसन्नचन्द्रोदयामिव। (६) प्रद्रक्ष्यामि। (७) उद्यत...।
(८) पिञ्जरित...।

निहित-रक्षाघृतविन्दुनि तालुनि विन्यस्त-(१) गौरसर्षपोन्मिश्र-भूतिलेख: (२) गोरोचनाचित्रित-(३) कण्ठसूत्रग्रन्थि: उत्तानशयो दशनशून्य-स्मितानन: पुत्रको जनयिष्यति मे हृदयाह्लादम्। (भ) कदा गोरोचनाकपिलद्युतिरन्त:पुरिका-करतल-परम्परा-सञ्चार्य्यमाणमूर्त्तिरशेषजनाभिनन्दित: (४) मङ्गलप्रदीप इव मे शोकान्धकारमुन्मूलयिष्यति चक्षुषो:। (म) कदा च क्षितिरेणु-(५) धूसरो

(भ) कदेति। सर्वौषधिभि: "कुष्ठमांसीहरिद्राभिर्वचाशैलेयचन्दनै:। सुराचन्दनकर्पूरैर्मुस्त: सर्वौषधि: स्मृत:।" इति राजनिघण्टोक्तद्रव्यविशेषै: पिञ्जरा: पिङ्गलवर्णा:, जटिला जटावत् संसक्ताश्च केशा यस्य स:। रक्षार्थं घृतमिति रक्षाघृतं, तथा च निहित: स्थापित: रक्षाघृतस्य विन्दु: कणो यस्मिन् तस्मिन् तथोक्ते तालुनि तालुदेशे विन्यस्ता अर्पिता गौरसर्षपेण श्वेतसर्षपेण उन्मिश्रा संयुक्ता भूतिलेखा भस्मरेखा यस्य स:। गोरोचनया चित्रित: कण्ठसूत्रग्रन्थिर्यस्य स.। अत्र मस्तकादौ सर्वौषधिप्रभृतिविन्यासो रक्षार्थ:। तत्प्रमाणन्तु मत्स्यपुराणादावनुसन्धेयम्। उत्तान ऊर्द्धानन: शेत इत्युत्तानशय: "शीङोऽधिकरणे चे"ति चकारात् कर्त्तर्य्युपपदे शयतेरच्। दशनशून्यं दन्तरहितं अथच स्मितं प्रफुल्लं आननं यस्य स:। पुत्रक इत्यनुकम्पायां कप्रत्यय:।

(म) कदेति। गोरोचनावत् कपिला पिङ्गलवर्णा द्युति: कान्तिर्यस्य स:। अन्त:पुरिकाणां अन्त:पुरस्थानां स्त्रीणां करतलपरम्परया पाणिश्रेण्या सञ्चार्य्यमाणा एकस्या हस्तादपरस्या हस्ते नीयमाना मूर्त्तिर्यस्य स:। अशेषै: समस्तैर्जनै: अभिनन्दित: राजपुत्रतया माङ्गलिकतया च अभ्यर्थित:। शोक: पुत्राभावनिबन्धनो विषाद एवान्धकारस्तम्। अत्र पूर्णोपमालङ्कारो निरङ्गकेवलरूपकेण सङ्कीर्य्यते।

(य) कदेति। क्षितिरेणुभिर्भूतलधूलिभि: धूसर: गात्रेषु लग्नतया धूसरवर्ण:। मण्डयिष्यति भूषयि-

রঞ্জিত বস্ত্র পরিধান করিয়া পুত্র ক্রোড়ে করিয়া আমাকে আনন্দিত করিবে? (ভ) চুলগুলি সর্ব্বৌষধি লেপন করায় পিঙ্গলবর্ণ ও জটিল হইবে, তালুতে রক্ষাঘৃতের বিন্দু সিক্ত থাকিবে এবং শ্বেতসর্ষপসংযুক্ত ভস্মের রেখা দেওয়া হইবে, এবং গোরোচনা-দ্বারা কণ্ঠের সূত্র চিত্রিত থাকিবে—এই অবস্থায় উত্তানশায়ী (চিৎ হইয়া শোওয়া) এবং দন্তবিহীন-প্রফুল্ল-বদন পুত্র, কবে আমার চিত্তের আহ্লাদ জন্মাইবে? (ম) গোরো-চনার ন্যায় পীতবর্ণ-কান্তিসম্পন্ন হইবে, অন্তঃপুরবাসিনী রমণীগণের মধ্যে এক এক জন অপরাপরের হস্ত হইতে নিতে থাকিবে এবং সকল লোকে দেখিয়া অভিনন্দন করিবে—এইরূপ পুত্র, মাঙ্গলিক প্রদীপের ন্যায় কবে আমার নয়নযুগলের শোকরূপ অন্ধকার দূর করিবে? (য) পুত্ররত্ন ধূলিতে ধূসরবর্ণ হইয়া আমার মন ও নয়নের সহিত বিচরণ করত কবেই বা

(१)...घृतमधुविन्दु तालुविन्यस्त...। (२)...भूतिलेश:।
(३)...चित्र...। (४)...वन्दित:। (५) क्षितितलरेणु...।

मण्डयिष्यति मम हृदयेन दृष्ट्या च सह परिभ्रमन् भवनाङ्गनम्। (य) कदा केशरि-किशोरक इव सञ्जातजानु-चङ्क्रमणारम्भः (१) सञ्चरिष्यतीतस्ततः स्फटिक-मणिमय-भित्त्यन्तरितान् (२) भवनमृगशावकान् जिघृक्षुः (३)। (र) कदा अन्तःपुरिका-(४) नूपुर-निनादसङ्गतान् गृहकलहंसकान् (५) अनुसरन् कक्षा-न्तरप्रधावितः (६) कनकमेखला-घण्टिका-रवानुसारिणीमायासयिष्यति धात्रीम्। (ल) कदा कृष्णागुरु-पङ्क-लिखित-मदलेखालङ्कृत-गण्डस्थलकः, (७) कोमलसुख-रव-डिण्डिमध्वनि-जात-प्रीतिः (८) ऊर्द्ध्वकार-विप्रकीर्ण-चन्दन-चूर्ण-

ष्यति। यत्र यत्रैव स परिभ्रमिष्यति तत्र तत्रैव मम हृदयं दृष्टिश्च कौतुकानन्दाभ्यां यास्यतीति भावः। अतएवात्र सहोक्तिरलङ्कारः।

(र) कदेति। सञ्जातं उत्पन्नः जानुभ्यां चङ्क्रमणारम्भः परिभ्रमणारम्भो यस्य सः। केशरिकिशोरक इव सिंहशावक इव। स्फटिकमणिमयीभिर्भित्तिभिः अन्तरितान् व्यवहितान् भवनमृगशावकान् गृहपालित-हरिणशिशून् जिघृक्षुर्ग्रहीतुमिच्छुः सन् इतस्ततः सञ्चरिष्यति। अत्रोपमालङ्कारः।

(ख) कदेति। अन्तःपुरिकाणां अन्तःपुरस्थानां स्त्रीणां नूपुरनिनादेन सङ्गतान् उपस्थितान् हंसानां नूपुरनिनादानुसारित्वस्वभावादिति भावः, गृहकलहंसकान् गृहपालितक्षुद्रक्षुद्रकादम्बान् अनुसरन् कौतुका-दनुगच्छन्, कक्षान्तरप्रधावितः हंसानामपि तत्र तत्र प्रस्थानात् तदनुसरणाय प्रकोष्ठात् प्रकोष्ठान्तरं द्रुतं गतः, कनकमेखलायास्तस्यैव सुवर्णमयकाञ्चीदाम्नः घण्टिकाः किङ्किण्यस्तासां रवं शब्दं अनु लक्षीकृत्य सर्त्तुं गन्तुं शीलं यस्यास्तां, कक्षान्तरगमनेनादर्शनादिति भावः, धात्रीमुपमातरं आयासयिष्यति सर्वत्र तदनुसरणस्यावश्यकत्वात् परिश्रमयिष्यति। अत्र स्वभावोक्तिरलङ्कारः।

(व) कदेति। कृष्णागुरुपङ्केन घनेन कालागुरुद्रवेण लिखिता चित्रिता या मदलेखावत् लेखा रेखा तया अलङ्कृते शोभिते गण्डस्थली कपोलयुगलं यस्य सः, पक्षे कृष्णागुरुपङ्कवत् लिखिता लिप्ता या मदलेखा दानजलरेखा तया अलङ्कृतगण्डस्थलकः। कोमलो यो सुखरवः जिह्वाया विन्यासविशेषेण 'टक'

গৃহপ্রাঙ্গণ অলঙ্কৃত করিবে? (র) জানুযুগলদ্বারা পরিভ্রমণ আরম্ভ হইলে, (হামাগুড়ি বা হাপুর দিতে শিখিলে) স্ফটিকময় ভিত্তির অন্তরালে অবস্থিত গৃহপালিত হরিণশাবকগণকে ধরিবার ইচ্ছায় কবেই বা সিংহশাবকের ন্যায় ইতস্ততঃ বিচরণ করিবে? (ল) কবেই বা অন্তঃপুরবাসিনী রমণী-গণের নূপুরের রব শুনিয়া উপস্থিত গৃহপালিত হংসগণের অনুসরণ করত এক প্রকোষ্ঠ হইতে অপর প্রকোষ্ঠে বেগে চলিয়া যাইবে, তখন ধাত্রী, তাহার স্বর্ণময় কাঞ্চীস্থিত কিঙ্কিণীর রব লক্ষ্য করিয়া ধাবিত হইতে হইতে পরিশ্রান্ত হইয়া পড়িবে। (ব) গাঢ় কৃষ্ণাগুরু-রসের দ্বারা গণ্ডযুগলে মদরেখার ন্যায় রেখা অঙ্কিত করায় মনোহর শোভা ধারণ করিয়া, ডিণ্ডিমশব্দের

(१)···चङ्क्रमणावस्थः। (२) स्फटिकमणिभित्त्यन्तरितान्। (३) आजिघृक्षुः। (४) अन्तःपुर···।
(५) गृहहंसकान्। (६) कक्षान्तर···, प्रधावितान्। (७)...गण्डस्थलः।
(८) सुखडिण्डिमध्वनिजनितप्रीतिः।

धूलि-धूसरः, कुञ्चिताङ्गुलि-शिखराङ्कुशाकर्षण-विधूत-शिराः, करिष्यति मदमत्त-गजराज-लीलाम् (१)। (ख) कदा मातुश्चरणयुगल-रागोपयुक्त-(२) शेषेण पिण्डालक्तकरसेन कञ्चुकिनां (३) विडम्बयिष्यति मुखानि। (ग) कदा कुतूहल-चञ्चल-(४) लोचनो मणिकुट्टिमेष्वधोदत्त-दृष्टिरनुसरिष्यति स्खलद्गति-रात्मनः प्रतिबिम्बानि। (५) (घ) कदा नरेन्द्र-सहस्र-प्रसारित-भुज-युगलाभिनन्द्य-मानागमनो भूषणमणि-मयूख-लेखाकुलीक्रियमाण-(६) लोलदृष्टिरास्थानस्थितस्य मे (७) पुरः पर्य्यटिष्यति (८) सभान्तरेषु। (ङ) इत्येतानि चान्यानि (९)

'टक्' इत्येवं धात्र्या मुखशब्दो डिण्डिमध्वनिरिव कोमलमुखरवश्च डिण्डिमध्वनिश्च, तेन जाता प्रीतिरानन्दो यस्य सः। ऊर्द्ध्वकराभ्यां उत्तोलितहस्ताभ्यां उत्तोलितशुण्डया च विप्रकीर्णाभिर्विक्षिप्ताभिः, चन्दनचूर्णरूप-धूलिभिः चन्दनचूर्णवत् पांशुभिश्च धूसरः। तथा कुञ्चिताया वक्रीकृताया अङ्गुल्या उपमातुस्तर्जन्या इत्यर्थः शिखरं अग्रभागः अङ्कुश इव कुञ्चिताङ्गुलिशिखरवदङ्कुशस्य तेन यदाकर्षणं तेन विधूतं प्रत्यावर्त्तनासम्मति-सूचनाय कम्पितं शिरो येन सः। मदमत्तस्य गजराजस्य लीलां व्यवहारं करिष्यति। अत्र लीलामिव लीला-मिति सादृश्याक्षेपादसम्भवद्वस्तुसम्बन्धरूपा निदर्शनालङ्कारः श्लेषेण सङ्कीर्य्यते।

(ख) कदेति। मातुर्जनन्याः चरणयुगलस्य यो रागो रञ्जनं तत्र उपयुक्तात् पर्य्याप्तात् शेषेण अव-शिष्टेन, पिण्डालक्तकरसेन घनलाक्षाद्रवेण तल्लेपनेनेत्यर्थः कञ्चुकिनां सन्निहितवृद्धब्राह्मणानां मुखानि विडम्ब-यिष्यति विरूपीकरिष्यति।

(ग) कदेति। कुतूहलेन चञ्चले लोचने यस्य सः, मणिमयभूमिषु स्वप्रतिबिम्बदर्शनादिति भावः। मणिकुट्टिमेषु मणिबद्धसभाभूमिषु। स्खलन्ती भूमेरतिश्लक्ष्णतया भ्रश्यन्ती गतिर्गमनं यस्य सः। आत्मनः स्वस्य।

(घ) कदेति। नरेन्द्रसहस्रेण राजसमूहेन कर्त्रा प्रसारितेन भुजयुगलेन करेण अभिनन्द्यमानं

ন্যায় ধাত্রীর মনোহর মুখশব্দে আনন্দিত হইয়া, হস্তযুগল উত্তোলন করিয়া গাত্রে চন্দনচূর্ণ নিক্ষেপপূর্ব্বক ধূসরবর্ণ হইয়া, অঙ্কুশের ন্যায় বক্রীকৃত ধাত্রীর তর্জ্জনীর আকর্ষণে মস্তক কম্পিত করিয়া কবে মদমত্ত হস্তিরাজের অনুকরণ করিবে? (গ) মাতার চরণযুগল রঞ্জিত করিলে পর যে ঘন আলতার রস অবশিষ্ট থাকিবে, তাহা লেপিয়া দিয়া কবে কঞ্চুকি-গণের মুখ বিকৃত করিয়া দিবে? (ঘ) কৌতুকবশতঃ মণিময় ভূমিতে দৃষ্টিনিক্ষেপপূর্ব্বক চঞ্চলনেত্র হইয়া স্খলিতগতিতে কবে নিজের প্রতিবিম্বসমূহের অনুসরণ করিবে? (ঙ) আর কবেই বা আমি সভামধ্যে উপবিষ্ট থাকিব, রাজগণ বাহুযুগল প্রসারিত করিয়া তাহার

---

(१) मत्तगजराजलीलाक्रीडाः, मत्तगजक्रीडाम्, मत्तगजराजलीलाम्, मत्तगजराजलील: क्रीडाम्, मत्तगजराजलीलाः। (२) चरणरागोपयुक्त…। (३) वृद्धकञ्चुकिनां।

(४) लोल…। (५) प्रतिबिम्बितानि। (६)…मयूखाकुलीक्रियमाण…।

(७) मम। (८) सर्पिष्यति। (९) इत्येतानि च, इत्येतानि मनो…।

मनोरथशतानि चिन्तयतोऽन्तः सन्तप्यमानस्य प्रयान्ति (१) रजन्यः। (ङ) मामपि दहत्येवायमहर्निशमनल इवानपत्यतासमुद्भवः सन्तापः (२)। (च) शून्यमिव (३) मे प्रतिभाति जगत्, अफलमिव पश्यामि राज्यम् (४)। (छ) अप्रतिविधेये तु विधातरि किं करोमि, तन्मुच्यतां देवि! शोकानुबन्धः, आधीयतां धैर्य्ये धर्म्मे च धीः, धर्म्मपरायणानां हि सदा समीपसञ्चारिण्यः कल्याणसम्पदो भवन्ति" इत्येवं (५) अभिधाय सलिलमादाय स्वयं करतले-

आदरादभ्यर्थ्यमानं आगमनं यस्य सः। अतएव भूपशमणीनां राज्ञामाभरणीभूतरत्नानां मयूखलेखया किरणश्रेण्या आकुलीक्रियमाणा दर्शनौत्सुक्यात् व्यस्तीक्रियमाणा अतएव लोला चञ्चला दृष्टिर्यस्य सः, आस्थानस्थितस्य सभायामुपविष्टस्य मे मम पुरः अग्रतः सभान्तरेषु राजसभामध्यदेशेषु पर्य्यटिष्यति विचरिष्यति। अत्र स्वभावोक्तिरलङ्कारः।

(ङ) इतीति। इत्येतानि पूर्वोक्तानि पुत्त्रचरित्राणि, अन्यानि चानुक्तानि मनोरथशतानि आशाविषयीक्रियमाणानि पुत्त्रस्य शिक्षाचातुर्य्यादिचरित्राणि। अन्तः सन्तप्यमानस्य तादृशपुत्त्रानुत्पत्तेरन्तःकरण एव विषीदतः, अधीरताप्रकाशापवादभयाद्बहिरप्रकाशयत इति भावः। ममेति शेषः। अत्र वृत्त्यनुप्रासोऽलङ्कारः।

(च) मामिति। न केवलं त्वां मामपीत्यपेरर्थः। अत्रोपमालङ्कारः।

(छ) शून्यमिति। जगत् शून्यमिव प्रतिभाति तादृशावलम्बनाभावादित्याशयः। राज्यं अफलमिव पश्यामि भाविनो भोक्तुरभावादित्यभिप्रायः।

(ज) तर्हीदृशसन्तापनिवृत्तये कोऽप्युपायः क्रियतामित्याह अप्रतीति। विधातरि विधेः प्रातिकूल्य इत्यर्थः अप्रतिविधेये मानुषचेष्टया प्रतिविधातुमशक्ये सति। प्रतिकूलविधिकृत एवायमस्माकं सन्ताप इति भावः। तत्तस्मात्। मुच्यतां त्यज्यतां। शोकानुबन्धः अनपत्यतानिबन्धना विषादपरम्परा। आधीयतां स्थाप्यतां। धर्म्म एव परमुत्कृष्टं अयनमाश्रयो येषां ते धर्म्मपरायणा धार्म्मिकास्तेषां। अभिनवपल्लवेनेव

আগমনের অভিনন্দন করিবেন, তাঁহাদের আভরণস্থ রত্নসমূহের কিরণজালে তাহার নয়নযুগল আকুল করিয়া তুলিবে—এই অবস্থায় সেই পুত্ররত্ন আমার সম্মুখে সভামধ্যে বিচরণ করিবে। (ঙ) এই সকল, আরও বহুতর আকাঙ্ক্ষার বিষয় চিন্তা করিতে করিতে আমার মনে অত্যন্ত সন্তাপ উপস্থিত হইতে থাকে—সেই অবস্থায় প্রতিদিন রাত্রি অতীত হইয়া যায়। (চ) নিঃসন্তানতানিবন্ধন এই সন্তাপ অগ্নির ন্যায় দিবারাত্রি আমাকেও দগ্ধ করিতেছে। (ছ) জগৎসংসার আমার নিকট শূন্য বলিয়া বোধ হইতেছে; এই রাজ্য নিষ্ফল বলিয়া মনে করিতেছি। (জ) কিন্তু বিধাতার প্রতিকূলতাচরণের প্রতিবিধান করা যায় না, সুতরাং করিব কি? অতএব দেবি! এই নিরবচ্ছিন্ন মনস্তাপ পরিত্যাগ কর, ধৈর্য্য ও ধর্ম্মে

(१) यान्ति। (२) शोकः। (३) शून्यमेव। (४) अफलमिवाखिलं पश्यामि जीवितं राज्यञ्च।
(५) इत्थं, एवं।

नाभिनव-पल्लवेनेव विकचकमलतुल्यं (१) आननमस्या: सास्रुलेखं ममार्ज । (ख) पुन: पुनश्च प्रियशतमधुराभि: शोकापनोदन-(२) निपुणाभिर्धर्म्मोपदेशगर्भाभिर्वाग्भिराश्वास्य सुचिरं स्थित्वा (३) नरेन्द्रो निर्जगाम । (ग)

निर्गते च तस्मिन् मन्दीभूतशोकावेगा (४) विलासवती यथाक्रियमाणाभरण-परिग्रहादिकमुचितं (५) दिवसव्यापारमन्वतिष्ठत् (६)। (घ) तत: प्रभृति सुतरां देवताराधनेषु ब्राह्मण-पूजासु गुरुजन-सपर्य्यासु चादरवती (७) बभूव। यद् यच्च किञ्चित् कुतश्चित् शुश्राव व्रतं (८) तत्तदर्भकतृष्णया (९) सर्वं चकार। (ङ) न महान्तमपि क्लेशमजीगणत्। अनवरत-दह्यमान-

रक्तेनेति भाव:, करतलेन पाणिना। अस्रुलेखया नयनजलरेखया सहेति सास्रुलेखं, विकचकमलतुल्यं प्रस्फुटपद्मसमानं अस्या विलासवत्या आननं ममार्ज। अत्र प्रथमा श्रौती द्वितीया चार्थी उपमे अनयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्कर:।

(ग) पुनरिति। नरेन्द्रो राजा। प्रियशतैश्चाटुवाहुल्यैर्मधुरा मनोहरास्ताभि:। धर्म्मोपदेशो गर्भमध्ये यासां ताभि:।

(घ) निर्गत इति। यथा पूर्वप्रकारेण क्रियमाण आभरणपरिग्रह: अलङ्कारधारणं आदौ यस्य तं, उचितं योग्यं दिवसव्यापारं दिनकार्य्यं अन्वतिष्ठत् अकरोत्।

(ङ) तत इति। गुरुजनानां सपर्य्यासु पूजासु च। सुतरां नितान्तं यथा तथा। कुतश्चित् यस्मात् कस्माच्चित् जनात्। अर्भकतृष्णया बालकस्पृहया पुत्रलाभेच्छयेत्यर्थ:।

(च) नेति। अनवरतं दह्यमानानां गुग्गुलूनां धूमैरन्धकारितेषु सञ्जातान्धकारेषु। धवलाम्बरा

মতি সংস্থাপন কর; কারণ- মঙ্গলসম্পদ সর্ব্বদাই ধার্ম্মিকগণের নিকটে বিচরণ করিয়া থাকে" এইরূপ বলিয়া, জল লইয়া রাজা নিজেই, নূতন পল্লবের ন্যায় করতলদ্বারা নয়নজলের রেখা-সংযুক্ত এবং প্রস্ফুটিত পদ্মের তুল্য রাণীর মুখমণ্ডল মার্জ্জনা করিয়া দিলেন। (গ) এবং শোক দূর করিতে নিপুণ, ধর্ম্মোপদেশ-পূর্ণ ও চাটুগর্ভ বিবিধ মধুর বাক্যে বারংবার রাণীকে আশ্বস্ত করিয়া, সে স্থানে বহুসময় অবস্থান পূর্ব্বক চলিয়া গেলেন।

(ঘ) রাজা চলিয়া গেলে তাঁহার উপদেশেই শোকের আবেগ কমিয়া যাওয়ায় রাণী বিলাসবতী, পূর্ব্বের ন্যায় অলঙ্কারধারণপ্রভৃতি দিবসের কর্ত্তব্য কার্য্য করিতে লাগিলেন। (ঙ) আর তদবধি দেবতাগণের আরাধনাতে এবং ব্রাহ্মণ ও গুরুজনের পূজাতে সমধিক যত্নবতী হইলেন। আর যে কোন ব্যক্তির নিকট যে যে ব্রত-নিয়ম শুনিতে লাগিলেন, পুত্রলাভের

(१) कमलतुल्यं। (२) शोकापनोद...। (३) क्वचित् 'स्थित्वा' इति नास्ति।

(४) मन्दीभूतशोका। (५) यथाक्रियमाणं, आभरणपरिग्रहादिकं समुचितं, आभरणपरिग्रहादिसमुचितं। (६) वासरव्यापारमकरोत्। (७) ब्राह्मणपूजासु चादरवती, गुरुजनपरिचर्य्यासु च, अधिकमादरवती। (८) कुत्रचित् 'व्रत' इति न दृश्यते। (९) गर्भतृष्णया।

गुग्गुलु-धूमान्धकारितेषु (१) चण्डिका-गृहेषु धवलाम्बरा (२) शुचि-मूर्त्तिरुपोषिता हरितकुशोपच्छदेषु (३) मुसलशयनेषु (४) सुष्वाप। (च) पुण्यसलिलपूर्णैः (५) विविध-कुसुमफलोपेतैः क्षीरतरु-पल्लव-लाञ्छनैः सर्वरत्नगर्भैः शातकुम्भकुम्भैर्गोकुलेषु वृद्धगोपवनिताकृतमङ्गलानां (६) लक्षणसम्पन्नानां गवामधः सस्नौ। (छ) प्रतिदिवसमुत्थाय (७) सर्वरत्नोपेतानि हैमानि तिलपात्राणि ब्राह्मणेभ्यो ददौ। (ज) महानरेन्द्र-लिखित-मण्डल-मध्यवर्त्तिनी विविध-बलिदानानन्दित-दिग्देवतानि बहुल-(८) चतुर्दशीनिशासु चतुष्पथे (९) स्नानमङ्गलानि (१०)

र्जितवस्त्रा, शुचिमूर्त्तिः स्नानेन पवित्रदेहा, उपोषिता कृतोपवासा सती। हरिताः पालाशवर्णा नूतना इत्यर्थः कुशा उपच्छदा आस्तरणानि येषु तादृशेषु मुसलशयनेषु श्रेणीभावेन पातितमुसलशय्यासु सुष्वाप शयितवती। पुत्रलाभाय तदानीन्तनशिष्टाचारादमी खल्वाचाराः प्रत्येतव्याः, इदानीन्तनकालार्करुद्रपूजाप्रकरणीयपद्धाधःस्नानाचारवत्। क्वचित्तु पौराणिकप्रमाणमप्युपलभ्यते तत्तु ग्रन्थगौरवाशङ्कया नोदाहृतम्।

(छ) पुण्येति। पुण्यसलिलपूर्णैः पवित्रजलपूरितैः। क्षीरतरूणां आम्रवटादीनां पल्लवा एव लाञ्छनानि उपरितनचिह्नानि येषां तैः। शातकुम्भकुम्भैः सुवर्णकलशैः। गोकुलेषु गोष्ठेषु। वृद्धाभिः गोपवनिताभिः कृतानि मङ्गलानि सिन्दूरचन्दनमाल्यार्पणादिरूपाणि यासां तासां लक्षणसम्पन्नानां सम्पूर्णकृष्णवर्णादिसुलक्षणानां गवां धेनूनां अधस्तात् सस्नौ स्नातवती।

(ज) प्रतीति। हैमानि सुवर्णमयानि।

(झ) महेति। महानरेन्द्रेण प्रधान-भूतवैद्येन लिखितं अङ्कितं यत् मण्डलं वर्त्तुलरेखा तस्य

ইচ্ছায় সে সমস্তই করিতে লাগিলেন। (চ) তখন গুরুতর কায়ক্লেশও গণনা করিতেন না। উপবাসী থাকিয়া শুভ্রবর্ণ বস্ত্র পরিধানপূর্ব্বক পবিত্রদেহে, অবিশ্রান্ত দহ্যমান গুগ্গুলুর ধূমের অন্ধকারে পরিপূর্ণ চণ্ডীমণ্ডপে নূতন কুশের আস্তরণ-সংযুক্ত মুষলময় শয্যার উপরে শয়ন করিতেন। (ছ) গোষ্ঠে যাইয়া বৃদ্ধ গোপরমণীগণকর্ত্তৃক সিন্দুর, চন্দন ও মাল্যাদিদ্বারা ভূষিত সুলক্ষণসম্পন্ন গরুর নীচে বসিয়া, পবিত্রজলপরিপূর্ণ, নানাবিধ পুষ্প ও ফলসংযুক্ত, আম্র ও বটপ্রভৃতি ক্ষীরিবৃক্ষের পল্লবসমন্বিত ও সকল রত্ন-পূর্ণ সুবর্ণময় কলসের জলে স্নান করিতেন। (জ) প্রতিদিন নিদ্রা হইতে উঠিয়া, নানাবিধ রত্নের সহিত বহুতর তিলপাত্র ব্রাহ্মণদিগকে দান করিতেন। (ঝ) কৃষ্ণপক্ষের চতুর্দ্দশীর রাত্রিতে চতুষ্পথে

---

(१)...गुग्गुलबहलधूपान्धकारितेषु। (२) धवलाम्बरेण, धवलाम्बर...(३) हरितकुश,...हरितकुशोपच्छन्नेषु। (४) भूतलशयनेषु। (५) पूरितैः, पूर्णैः। (६)...मङ्गला। (७) उत्थायोत्थाय। (८) बहुलपक्ष...। (९) चतुष्पथेषु। (१०) स्नपन...।

मेजे । (झ) सिद्धायतनानि क्रत-विविध-देवतोपयाचितकानि (१) सिषेवे । (ञ) दर्शितप्रत्ययानि (२) सन्निहितमातृका-(३) भवनानि जगाम । (ट) प्रसिद्धेषु नागकुल-ह्रदेषु ममज्ज । (ठ) अश्वत्थप्रभृतीनुपपादित-पूजान्महावनस्पतीन् क्रतप्रदक्षिणा ववन्दे । (ड) दोलायमान-बलयेन (४) पाणियुगलेन स्नाता (५) स्वयमखण्ड-सिक्थ-सम्पादितं (६) रजतपात्र-(७)

मध्यवर्त्तिनी सती, बहुलस्य क्रष्णपक्षस्य चतुर्दशीनिशासु, चतुर्णां पथां समाहार: सम्मेलनस्थानमिति चतुष्पथं तस्मिन्, विविधानां नानाप्रकाराणां बलीनामुपहाराणां दानेन आनन्दिता: दिग्देवता दिक्पाला येषु तानि, स्नानरूपाणि मङ्गलानि भेजे विहितवती ।

(ञ) सिद्धेति । क्रतानि अर्पितानि विविधानि देवताभ्य उपयाचितकानि 'यदि मे पुत्रलाभ: स्यात्तदा परमप्येवमेव प्रदेयं' इत्यङ्गीकारपूर्वकोपहारा येषु तानि, सिद्धायतनानि योगिक्षेत्राणि सिषेवे भक्तिपूर्वकमाश्रितवती । "दीयते यत्तु देवेभ्यो मनोराज्यस्य सिद्धये । उपयाचितकं दिव्यं दोहदं तद्विदुर्बुधा: ।" इति जटाधर: ।

(ट) दर्शितेति । दर्शितो मातृकाभिरेव लोके प्रकाशित: प्रत्यय: अभिलषितफलदानेन विश्वासो येषु तानि, सन्निहितानि मातृकाणां ब्राह्मीप्रभृतीनां भवनानि गृहाणि । मातरश्च—"ब्राह्मी माहेश्वरी चण्डी वाराही वैष्णवी तथा । कौमारी चैव चामुण्डा चर्च्चिकेत्यष्टमातर: ।"

(ठ) प्रसिद्धेष्विति । प्रसिद्धेषु मज्जनेन बन्ध्याया अपि पुत्रजनकतया विख्यातेषु, नागकुलस्य ह्रदेषु पन्नगानामावासीभूतखातेषु ममज्ज सशिरोमज्जनं क्रतवती ।

(ड) अश्वत्थेति । क्रतं प्रदक्षिणं यया सा, उपपादिता विहिता पूजा येषां तान् । महान्तो ये वनस्पतय: पुष्पहीना: फलवन्तो वृक्षास्तान् । ववन्दे नमश्चकार ।

(ढ) दोलायेति । स्नाता क्रतस्नाना सती, स्वयमात्मनैव, दोलायमाने चपले वलये यस्य तेन ।

যাইয়া, প্রধান ভূতবৈদ্য (ওঝা) কর্ত্তৃক অঙ্কিত মণ্ডলের মধ্যে থাকিয়া, নানাবিধ উপহারে দিক্‌পালগণকে সন্তুষ্ট করিয়া মাঙ্গলিক স্নান করিতেন। (ঞ) 'আমার যদি পুত্র হয়, তবে পুনরায় এইরূপ উপহার প্রদান করিব', এইরূপ মানসিক করিয়া দেবতাদিগকে নানাবিধ উপহার প্রদানপূর্ব্বক ভক্তিপূর্ণচিত্তে সিদ্ধক্ষেত্রের সেবা করিতেন। (ট) মাতৃগণ লোকের অভীষ্ট ফল প্রদান করিয়া যেখানে বিশ্বাস জন্মাইয়া দিয়াছেন, নিকটবর্ত্তী সেই সকল ব্রাহ্মী প্রভৃতি মাতৃকাগণের মন্দিরে গমন করিতেন। (ঠ) বিখ্যাত সর্পময় হ্রদে স্নান করিতেন। (ড) পূজা ও প্রদক্ষিণ করিয়া অশ্বত্থ প্রভৃতি মহাবৃক্ষদিগকে নমস্কার করিতেন। (ঢ) স্নান করিয়া নিজেই, রূপার পাত্রে করিয়া অক্ষত-ধান্য-সংযুক্ত ও দধিমিশ্রিত অন্নের উপহার কাক-

(१) क्रतविचित्र...क्रतविविधदेवतोप...।

(२)...प्रत्यादेशानि । (३) सन्निधानमातृका..., सन्निहितमातृ... । (४)...मणिवलयेन ।

(५) क्रतस्नाना । (६) अखण्डितसिक्थकुसुम... । (७) रजतपात्रे ।

परिगृहीतं वायसेभ्यो दध्योदन-बलिमदात्। (ढ) अपरिमित-कुसुम-धूप-विलेपापूप-(१) पलल-पायस-लाज-(२) कलितामहरहरम्बादेवी-(३) सपर्य्यामाततान। (ण) स्वयमुपहृत-(४) पिण्डपात्रान् भक्तिप्रवणेन मनसा सिद्धादेशानग्नक्षपणकान् पप्रच्छ। (त) विप्रश्निकादेशवचनानि बहु मेने। (थ) निमित्तज्ञानुपचचार। (द) शकुनज्ञानविदामादरमदर्शयत्। (ध) अनेकवृद्ध-

---

अखण्डैरक्षतैः सिक्थैर्धान्यपुलाकैः सम्पादितं निष्पादितं। दध्योदनबलिं दधिमिश्रितान्नरूपमुपहारं। वायसेभ्यः काकेभ्यः।

(ण) अपरेति। अहरहः प्रतिदिनं अपरिमितैर्बहुभिः कुसुमैः, धूपैः, विलेपैश्चन्दनादिविलेपनद्रव्यैः, अपूपैः पिष्टकैः, पललैर्मांसैः, पायसैः परमान्नैः, लाजैर्धानाभिश्च कलितां सम्पादितां अम्बादेव्या दुर्गायाः सपर्य्यां पूजां आततान कृतवती।

(त) स्वयमिति। भक्तिप्रवणेन भक्तियुक्तेन मनसा, स्वयमात्मनैव, उपहृतानि उपढौकितानि पिण्डपात्राणि अन्नभाजनानि येभ्यस्तान्, सिद्धाः सफलाः आदेशा आज्ञावाक्यानि येषां तान्, नग्नक्षपणकान् दिगम्बरान् बौद्धविशेषान्, पप्रच्छ पुत्रो मे भवेन्न वा इति जिज्ञासितवती। 'अचिरमेव पुत्रस्ते भवेत्' इति चेदमी वदेयुस्तदाऽमीषां सिद्धादेशतया अभीष्टसिद्धिः स्यादित्याशयेनेति भावः।

(थ) विप्रेति। विप्रश्निकानां शुभाशुभगणनाकारिणीनां स्त्रीणां आदेशवचनानि आज्ञावाक्यानि बहु मेने आदद्रे। "विप्रश्निका त्वीक्षणिका दैवज्ञा" इत्यमरः।

(द) निमित्तेति। निमित्तानि शुभाशुभसूचकानि नयनस्पन्दनादीनि जानन्ति ये ते तथोक्तास्तान्, उपचचार उपययौ, तदवगमार्थमिति भावः।

(ध) शकुनेति। शकुनज्ञानं वसन्तराजीयादिकं पक्षिचेष्टादर्शनेन शुभाशुभनिर्णायकं शास्त्रं विदन्ति जानन्ति ये तेषां, आदरं बहुमानम् अदर्शयत्। पक्षिचेष्टादर्शनेन तेभ्योऽपि शुभाशुभज्ञानार्थमिति भावः।

দিগকে দিতেন, তখন তাঁহার হস্তের বলয় চলিতে থাকিত। (ণ) প্রতিদিন অপরিমিত পুষ্প, ধূপ, অনুলেপন, পিষ্টক, মাংস, পায়স ও খই দ্বারা দুর্গাদেবীর পূজা করিতেন। (ত) নিজেই ভক্তিযুক্তচিত্তে অন্নের পাত্র উপঢৌকন দিয়া সত্যবাদী উলঙ্গ বৌদ্ধ সন্ন্যাসীদিগকে জিজ্ঞাসা করিতেন (যে আমার পুত্র হইবে কি না)। (থ) দৈবজ্ঞস্ত্রীলোকের আদেশবাক্যের বিশেষ আদর করিতেন। (দ) চক্ষুঃস্পন্দনপ্রভৃতি শুভাশুভলক্ষণ জানা লোকের নিকট যাইতেন। (ধ) শাকুনশাস্ত্রজ্ঞ লোকের প্রতি আদর দেখাইতেন।

---

(१) अपरिमितधूपविलेपा। (२) पायसबलिं, पायसबलिलाज...। (३)...म्बादेवी...।
(४) उपाहित..., उपाहृत...।

परम्परासमागतानि (१) रहस्यानि चकार (२)। (न) दर्शनागत-द्विजगणान् (३) आत्मजदर्शनोत्सुका वेदश्रुतीरकारयत्। (प) अनवरत-(४) वाच्यमानाः पुण्यकथाः (५) शुश्राव। (फ) गोरोचना-लिखित-भूर्जपत्रगर्भान् मन्त्र-करण्डकान् (६) उवाह (ब)। रक्षाप्रतिसरोपेतानि (७) ओषधिसूत्राणि (८) बबन्ध। (भ) परिजनोऽपि चास्याः सततमुपश्रुत्यै निर्जगाम, तन्निमित्तानि च जग्राह, शिवाभ्यो मांसबलिपिण्डमनुदिनं निश्युत्ससर्ज, (९) स्वप्नदर्शनाश्चर्याण्याचार्याणामाचचक्षे, चत्वरेषु शिवाबलिं (१०) उपजहार। (म)

(न) अनेकेति। रहस्यानि गुप्तमन्त्रसाधनादीनि।

(प) दर्शनेति। आत्मजदर्शनोत्सुका पुत्रदर्शनायोत्कण्ठिता, दर्शनाय स्वसाक्षात्काराय आगता ये द्विजगणा ब्राह्मणसमूहास्तान्, वेदानां श्रूयन्त इति श्रुतयो व्यक्तपाठास्तान् अकारयत्। "वा क्रन्नो"-रित्यनेन द्विजगणानिति प्रयोज्यकर्त्तुः कर्म्मत्वम्।

(फ) अनेति। पुण्यकथाः श्रीकृष्णादिजन्मवृत्तान्तान्।

(ब) गोरोचनेति। गोरोचनया लिखितं भूर्जपत्रं गर्भे मध्ये येषां तान्, मन्त्रकरण्डकान् नृसिंहादि-मन्त्रयुक्तपिटकान्, उवाह धारयामास।

(भ) रक्षेति। रक्षाप्रतिसरेण रक्षार्थकङ्कणेन उपेतानि युक्तानि, ओषधिसूत्राणि गर्भोत्पादकौषधि-युक्तसूत्राणि, बबन्ध हस्त इति शेषः। "भवेत् प्रतिसरो मन्त्रभेदे माल्ये च कङ्कणे।" इत्यादि मेदिनी।

(म) परीति। उपश्रुत्यै दैवप्रश्नाय दैवज्ञेभ्यः शुभाशुभश्रवणायेत्यर्थः। "नक्तं निर्गत्य यत्किञ्चिच्छु-भाशुभकरं वचः। श्रूयते तद्विदुर्धीरा दैवप्रश्नमुपश्रुतिम्।" इति हारावली। तन्निमित्तानि दैवज्ञस्य शुभाशुभ-लक्षणवचनानि, जग्राह यत्नेनाददौ, विलासवत्यै वक्तुमिति भावः। अनुदिनं प्रतिदिनं मांसबलिपिण्डं मांसरूपमुपहारं शिवाभ्यः शृगालीभ्यः। स्वप्नदर्शनाश्चर्याणि आश्चर्यस्वप्नानित्यर्थः, आचार्याणां गृह्याचार्याणां समीपे आचचक्षे उवाच, तेभ्यस्तेषां शुभाशुभत्वमवगन्तुमिति भावः। चत्वरेषु गृहाङ्गनेषु, शिवाभ्यो बलिमुप-हारं उपजहार ददौ। अयमुपहारस्तु दिवस इति न पूर्वेण सह पौनरुक्त्यम्।

(न) বহুতর প্রাচীন পরম্পরায় প্রচলিত গুপ্তমন্ত্র সাধন করিতেন। (প) পুত্রলাভের নিমিত্ত উৎকণ্ঠিত হইয়া, সাক্ষাৎ করিবার জন্য উপস্থিত ব্রাহ্মণগণদ্বারা বেদপাঠ করাইতেন। (ফ) কথকদিগের নিকট সর্ব্বদা পুণ্যোপাখ্যান শুনিতেন। (ব) গোরোচনাদ্বারা লিখিত ভূর্জ্জপত্র-পূর্ণ মন্ত্রের মাদুলী ধারণ করিতেন। (ভ) হস্তে রক্ষাকঙ্কণ ও ঔষধযুক্ত সূত্র বন্ধন করিতেন। (ম) তাঁহার পরিজনবর্গও দৈবজ্ঞের নিকট শুভাশুভ বাক্য শুনিবার নিমিত্ত

(१) आगमागतानि, गतानि। (२) अङ्गीचकार, अङ्गीकरोति स्म। (३) दर्शनागतं द्विजगणं।

(४) अनवरतं। (५) पुण्याः कथाः। (६) मन्त्रगण्डकान्, मन्त्रदण्डकान्।

(७) रक्षापरिसरोपेतानि। (८) औषधिसूत्राणि, औषधीसूत्राणि। (९) समुत्ससर्ज।

(१०) शिवबलिं।

एवं (१) गच्छति काले कदाचिद्राजा क्षीणभूयिष्ठायां रजन्यामल्पावशेष-(२) पाण्डुतारके जरत्पारावत-पक्षधूसरे (३) नभसि स्वप्ने सौधशिखर-(४) स्थिताया विलासवत्याः करिण्या इव बिसवलय-(५) मानने सकलकलापूर्ण-(६) मण्डलं शशिनं प्रविशन्तं (७) अद्राक्षीत्। (य) प्रबुद्धश्चोत्थाय हर्षविकाश-स्फीततरेण चक्षुषा धवलीकृतवासभवनस्तस्मिन्नेव क्षणे सबहुमानं शुकनासमाहूय तं (८) स्वप्नमकथयत्। (र)

समुपजातहर्षः स तं प्रत्युवाच—"देव ! सम्पन्नाः सुचिरादस्माकं प्रजानाञ्च

(य) एवमिति। क्षीणभूयिष्ठायां अतीतप्रायायां सत्यां। नभसि आकाशे च, अल्पावशेषाः पाण्डुवर्णास्तारका नक्षत्राणि यस्मिन् तस्मिन्; जरतो वृद्धस्य पारावतस्य कपोतस्य पक्षवत् पतत्रवत् धूसरे धूम्रवर्णे च सति। सौधशिखरस्थितायाः प्रासादोपरिगतायाः विलासवत्या आनने मुखे, करिण्या हस्तिन्या आनने बिसवलयं मृणालमण्डलमिव, सकलाभिः कलाभिः पूर्णं मण्डलं बिम्बं यस्य तं, शशिनं चन्द्रं। अत्र प्रथमा लुप्तोपमा द्वितीया च श्रौत्युपमा, अनयोः परस्परनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(र) प्रबुद्ध इति। प्रबुद्धो जागरितः। हर्षेण आनन्देन यो विकाशः उन्मीलनं तेन स्फीततरं अतीव विस्तृतं तेन, धवलीकृतं वासभवनं शयनगृहं येन सः। सबहुमानं सादरम्।

(ल) समुपेति। समुपजातो हर्ष आनन्दो यस्य सः, स शुकनासः, तं राजानं। सम्पन्नाः सफला

নির্গত হইত এবং যত্নপূর্ব্বক তাঁহাদের বাক্য শুনিত, প্রতিদিন রাত্রিতে শিবাদিগকে মাংস উপহার দিত, গণাচার্য্যগণের নিকট আশ্চর্য্য স্বপ্নের বৃত্তান্ত বলিত আর গৃহপ্রাঙ্গণে দিনেও শিবাবলি দিত।

(য) এই ভাবে সময় চলিয়া যাইতে লাগিলে একদিন রাত্রির অধিকাংশই অতীত হইয়াছে, আকাশও বৃদ্ধ কপোতের পক্ষের ন্যায় ধূসরবর্ণ হইয়া আসিয়াছে, এবং নক্ষত্রগণও পাণ্ডুবর্ণ হইয়া অল্পমাত্র অবশিষ্ট রহিয়াছে—এমন সময়ে রাজা স্বপ্নে দেখিলেন যে—হস্তিনীর মুখে মৃণালবলয়ের ন্যায়, প্রাসাদের উপরিস্থিত বিলাসবতীর মুখমণ্ডলে সমগ্র কলাপরিপূর্ণ চন্দ্রমণ্ডল প্রবেশ করিতেছে। (র) রাজা তৎক্ষণাৎ জাগরিত হইয়া শয্যা হইতে উঠিয়া আনন্দ-বিস্ফারিত-নেত্রের আলোকে শয়ন-গৃহ শুভ্রবর্ণ করিয়া সেই সময়েই আদরের সহিত মন্ত্রী শুকনাসকে আহ্বান করিয়া আনিয়া সেই স্বপ্নের বৃত্তান্ত বলিলেন।

(ল) শুকনাসও আনন্দিত হইয়া রাজাকে কহিলেন—"মহারাজ! বহুকালের পর

(१) एवञ्च। (२) अल्पशेष···। (३) जरत्पारापतपक्षधूम्रे। (४) सितप्रासादशिखर···।
(५) बिसपल्लवं, बिसकिसलयं। (६)...परिपूर्ण...। (७) विशन्तं।
(८) शुकनासं समाहूय स्वप्नं, समाहूय शुकनासाय तं।

मनोरथाः। कतिपयैरेवाहोभिरसंशयमनुभावयात (१) स्वामी सुतमुखकमलावलोकनसुखम्। अद्य खलु मयापि निशि स्वप्ने धौतधवल-(२) वाससा प्रशान्तमूर्त्तिना (३) दिव्याकृतिना द्विजेन विकचं चन्द्र-(४) कलावदात-दलशतं, आलोलकेसरसहस्रजटालं, मकरन्द-(५) विन्दु-सन्दोहवर्षि-(६) पुण्डरीकमुत्सङ्गे देव्या मनोरमाया निहितं दृष्टम्। (ल) आवेदयन्ति हि प्रत्यासन्नमानन्दमग्रजातानि (७) शुभानि निमित्तानि (८)। (व) किञ्च (९) अन्यदानन्दकारणमतो भविष्यति (१०)। अवितथफला हि (११) प्रायोनिशावसानसमय-

---

जाताः। स्वामी अधिपतिर्भवान्। धौतं क्षालितं अतएव धवलं वासो वसनं यस्य तेन, दिव्या मनोहरा आकृतिर्यस्य तेन, द्विजेन केनचित् ब्राह्मणेन। विकचं प्रस्फुटं, चन्द्रकलावत् अवदातं श्वेतं दलानां शतं यस्य तत्, आलोलेन चञ्चलेन केसरसहस्रेण किञ्जल्कसमूहेन जटालं जटिलं तादृशकेसररूपजटाविशिष्टमित्यर्थः। प्राणिस्थादातो मत्वर्थे आलच्। मकरन्दविन्दूनां मधुकणानां सन्दोहं समूहं वर्षतीति तत्, पुण्डरीकं श्वेतपद्मं। मनोरमायास्तदाख्याया निजभार्य्यायाः, उत्सङ्गे क्रोड़े निहितं स्थापितं। इति मयापि स्वप्ने दृष्टमित्यन्वयः। अत्र चन्द्रकलावदातेति लुप्तोपमालङ्कारः।

(व) आवेदयन्तीति। अग्रजातानि प्रथमोत्पन्नानि शुभानि निमित्तानि लक्षणानि प्रत्यासन्नं अचिरभाविनं आनन्दं आवेदयन्ति सूचयन्ति।

(श) किञ्चेति। अतोऽन्यत् किमानन्दकारणं भविष्यतीत्यन्वयः। ननु स्वप्नदर्शनमात्रमेव कथमीदृशानन्दकारणमित्याह अवितथेति। हि यस्मात्। प्रायो बाहुल्येन अवितथं सत्यं अवश्यम्भावीत्यर्थः फलं येषां ते।

আমাদের ও প্রজাবর্গের অভিলাষ পূর্ণ হইয়াছে ; কারণ—অল্প দিনের মধ্যেই আপনি নিঃসংশয় পুত্রের মুখকমল-দর্শনের সুখ অনুভব করিতে পারিবেন। আমিও আজ রাত্রিতে স্বপ্নে দেখিয়াছি যে—প্রক্ষালিত-শ্বেতবর্ণ-বস্ত্রপরিধায়ী, শান্তমূর্ত্তি এবং সুন্দরাকৃতি এক ব্রাহ্মণ, প্রকাশিত চন্দ্রকলার ন্যায় শ্বেতবর্ণ শতদল-সমন্বিত, জটার ন্যায় চঞ্চল কেশরসমূহ-সংযুক্ত এবং প্রচুর মধুবিন্দুবর্ষী প্রস্ফুটিত একটি শ্বেতপদ্ম, মনোরমাদেবীর ক্রোড়ে সংস্থাপন করিয়াছেন। (ব) বহুতর শুভলক্ষণ পূর্ব্বেই প্রকাশ পাইয়া অচিরভাবী কোন বিশেষ আনন্দের সূচনা করিয়া থাকে। (শ) ইহা অপেক্ষা আনন্দের কারণ আর কি হইতে পারে? রাত্রিশেষে

---

(१) असन्देहं। (२) धौतसकल···, धौतसकलधवल...। (३) प्रशान्तमूर्त्तिना।
(४) विकचचन्द्र···। (५)...जटालमकरन्द...,जटिलमकरन्द...। (६) विन्दुसीकरवर्षि।
(७) अग्रेजातानि, आनन्दपातीनि, अग्रेपातीनि अग्रपातीनि। (८) शुभनिमित्तानि।
(९) किं वान्यत् प्रियतरं परमानन्द, अधिकानन्द,...। (१०) विद्यते। (११) च।